राष्ट्रभाषा पाठ्य पुस्तक

प्रकाशक

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

त्यागरायनगर, चेन्नै-600 017

राष्ट्रभाषा पाठ्य पुस्तक

विषय सूची

पृष्ठ

पहला पत्र

भाग - 1 - पद्य

1. शुभकामना 07
2. चाह 10
3. सुख-दुख 12
4. खिलौना 14
5. माँ 16
6. भारत की नारी 19
7. भिक्षुक 23
8. कबीर के दोहे 25
9. रहीम के दोहे 28
10. वृन्द के दोहे 31
11. उर्दू के शेर (ग़ज़ल के कुछ शेर) 33

भाग - 2 - गद्य

1. सभ्यता का रहस्य 36
2. रुपया 44
3. दक्षिण अफ्रिका में गाँधीजी 48
4. कर्मवीर कामराज 51
5. कोविड-19 56
6. स्वामी विवेकानंद 60
7. आर्किमेडीस 64
8. शिवाजी की गुरुभक्ति 68
9. तेनालीराम 74
10. स्वाभिमानी बालक 78

भाग - 3 - एकांकी

1. बहू की विदा 82
2. रीढ़ की हड्डी 93
3. अंधेर नगरी 107
4. परिवर्तन 115
5. शहीद झलकारीबाई 129

दूसरा पत्र

		पृष्ठ
भाग - 4 - कहानी	1. परीक्षा	136
	2. हार की जीत	142
	3. मिठाईवाला	147
	4. देशभक्त	154
	5. पाँच मिनट	159
	6. अब्बूखाँ की बकरी	164
भाग - 5 - जीवनी	1. ईश्वरचंद्र विद्यासागर	172
	2. पंडित मदनमोहन मालवीय	178
	3. नेताजी सुभाष चंद्र बोस	186
	4. रवीन्द्रनाथ ठाकुर	190
	5. पंडित दीनदयाल उपाध्याय	196
	6. लाल बहादुर शास्त्री	200
	7. राजगोपालचार्य	203
भाग - 6 - निबंध		
	1. स्त्री शिक्षा	209
	2. कृत्रिम उपग्रह	209
	3. शिक्षा का माध्यम	210
	4. पुस्तकालय	211
	5. समय का सदुपयोग	212
	6. विद्यार्थी जीवन	212
	7. गणतंत्र दिवस	213
	8. भ्रमण	214
भाग - 7 - रचना		215
भाग - 8 - अनुवाद अभ्यास		227

राष्ट्रभाषा पाठ्य पुस्तक

पहला पत्र

भाग-1

पद्य

1. शुभकामना

– मैथिलीशरण गुप्त

इस कविता के कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त हैं। मैथिलीशरण गुप्त को राष्ट्रकवि कहते हैं। आपका जन्म सन् 1886 में झांसी जिले के चिरगाँव में हुआ। आप महात्मा गाँधी के सच्चे अनुयायी थे। भारत सरकार ने आपको संसद का सदस्य मनोनीत किया और पद्मभूषण की उपाधि से अलंकृत किया। 'भारत भारती, 'पंचवटी', 'साकेत', 'यशोधरा' आदि आपकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। आप सन् 1964 में स्वर्ग सिधारे।

इस कविता में कवि भारतवासियों के कल्याण की कामना करते हैं।

इस देश को हे दीनबन्धो! आप फिर अपनाइये,
भगवान! भारतवर्ष को फिर पुण्य-भूमि बनाइये।

जड़तुल्य जीवन आज इसका विघ्न-बाधापूर्ण है,
हेरंब! अवलंब देकर विघ्नहर कहलाइये।।

सबकी नसों में पूर्वजों का पुण्य रक्त प्रवाह हो,
गुण, शील, साहस, बल तथा सबमें भरा उत्साह हो,
सबके हृदय में सर्वदा समवेदना का दाह हो,
हमको तुम्हारी चाह हो, तुमको हमारी चाह हो।।
विद्या, कला-कौशल्य हो, आलस्य-अघ का त्याग हो,
सुख और दुख में गूँजता राष्ट्रीयता का राग हो।।

कठिनाइयों के मध्य अध्यवसाय का उन्मेष हो,
जीवन सरल हो, तन सबल हो, मन विमल सविशेष हो,

छूटे कदापि न सत्य-पथ, निज देश हो कि विदेश हो
अखिलेश का आदेश हो, जो बस वही उद्देश हो।

उपलक्ष के पीछे कभी विगलित न जीवन-लक्ष्य हो,
जब तक रहें ये प्राण तन में पुण्य का ही पक्ष हो,

कर्तव्य एक न एक पावन नित्य नेत्र-समक्ष हो
संपत्ति और विपत्ति में विचलित कदापि न वक्ष हो।।

शब्दार्थ

हेरंब	- विघ्नेश्वर	उन्मेष	- विकास, प्रकाश	अघ	- पाप
उपलक्ष	- उपलक्ष्य/ध्येय	विगलित	- बिगड़ा हुआ	वक्ष	- हृदय

अभ्यास

I. निम्न पद्यांश का भाव स्पष्ट कीजिएः-

1. विद्या, कला..का राग हो।

कवि परिचय : इस कविता के रचयिता मैथिलीशरण गुप्त हैं। मैथिलीशरण गुप्त को राष्ट्रकवि कहते हैं। आपका जन्म झांसी जिले के चिरगाँव में हुआ। आप महात्मा गाँधी के सच्चे अनुयायी थे। भारत सरकार ने आपको संसद सदस्य मनोनीत किया और पद्मभूषण की उपाधि से अलंकृत किया। 'भारत भारती', 'पंचवटी', 'साकेत', 'यशोधरा' आदि आपकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। आप सन् 1964 में स्वर्ग सिधारे। इस कविता में कवि भारतवासियों के कल्याण की कामना करते हैं।

भाव : कवि भारतवासियों के कल्याण के लिए भगवान से प्रार्थना करते हैं। कवि कहते हैं कि सबके मन में विद्या, कला एवं विभिन्न विषयों में कुशलता प्राप्त करने की चाह हो; सब लोग आलसीपन को छोड़ दें। वे सुख में रहें या दुख में, उनके मन में सदा देशभक्ति भावना बनी रहे।

2. उपलक्ष के पीछे .... पक्ष हो।

कवि परिचय : इस कविता के रचयिता मैथिलीशरण गुप्त हैं। मैथिलीशरण गुप्त को राष्ट्रकवि कहते हैं। आपका जन्म झांसी जिले के चिरगांव में हुआ। आप महात्मा गाँधी के सच्चे अनुयायी थे। भारत सरकार ने आपको संसद सदस्य मनोनीत किया और पद्मभूषण की उपाधि से अलंकृत किया। 'भारत भारती', 'पंचवटी' 'साकेत', 'यशोधरा' आदि आपकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। आप सन् 1964 में स्वर्ग सिधारे। इस कविता में कवि भारतवासियों के कल्याण की कामना करते हैं।

भाव : कवि भारतवासियों के कल्याण के लिए भगवान से प्रार्थना करते हैं। भारतवासियों का मन हमेशा अपने लक्ष्य की प्राप्ति में लगे रहे, किसी भी हालत में वे अपने लक्ष्य को न छोड़ें। जब तक जीवित रहें तब तक वे पुण्य के पक्ष में ही रहें।

II. 'शुभकामना' कविता का सारांश लिखिए:-

कवि परिचय : इस कविता के रचयिता मैथिलीशरण गुप्त हैं। मैथिलीशरण गुप्त को राष्ट्रकवि कहते हैं। आपका जन्म सन् 1886 में झांसी जिले के चिरगांव में हुआ। आप महात्मा गाँधी के सच्चे अनुयायी थे। भारत सरकार ने आपको संसद का सदस्य मनोनीत किया और पद्मभूषण की उपाधि से अलंकृत किया। 'भारत भारती', 'पंचवटी', 'साकेत', 'यशोधरा' आदि आपकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। आप सन् 1964 में स्वर्ग सिधारे। इस कविता में कवि भारतवासियों के कल्याण की कामना करते हैं।

सारांश : इस कविता में कवि भारतवासियों के लिए भगवान से प्रार्थना करते हैं। हे भगवान, दीन बंधु, हमारे देश को आप अपना प्रिय देश बना लीजिए। इस भारत भूमि को आपकी पुण्य भूमि बना दीजिए।

आजकल, यहाँ के लोग जड़ के समान अपना जीवन बिता रहे हैं। उनके जीवन में अनेक विघ्न और बाधाएँ हैं। सबको आश्रय देनेवाले प्रभु, आप भारतवासियों को भी आश्रय दीजिए। आपका नाम 'विघ्नहर' है। तदनुसार कीजिए।

हे भगवान, सब भारतवासियों की नसों में, उनके पूर्वजों (माँ, बाप, दादा, दादी आदि) के पुण्य रक्त प्रवाहित हो रहा है। सब लोग गुणवान, शीलवान, साहसी, बलवान बन जाएँ; सबमें सबकुछ करने का उत्साह हो।

भारतवासी दूसरों की वेदनाओं को समझें और सहायता करें। हे भगवान, हम सब सदा तुम्हारा ध्यान करें और आप हमपर सदा कृपा दृष्टि रखें।

हमारे भारतवासी, विद्या, कला एवं कौशल्य के प्रति आकर्षित रहें। जो उद्योग वे करते हैं उसमें पूर्ण लगन के साथ रहें; सदा के लिए आलसीपन को दूर कर दें। सब लोग सुख और दुख को एक समान मानें। सबके मन में सदा राष्ट्रीय भावना गूँजती रहे।

कठिनाइयों में वे अधिक उत्साह के साथ परिश्रम करें। उनका जीवन सरल हो, शरीर शक्तिशाली हो और मन सदा शुद्ध रहे।

किसी भी हालत में, किसी भी स्थान में, अपने देश हो या विदेश सदा सत्य पथ का अनुसरण करें। भगवान की चाह के अनुसार रहने के लिए वे तैयार रहें।

वे कभी भी अपने लक्ष्य से हट न जाएँ। जब तक जीवित रहें, तब तक पुण्य के पक्ष में रहें।

सब लोग सदा अपने कर्तव्य निभाने में लगे रहें। संपत्ति हो या विपत्ति, सुख हो या दुख, वे मन से कमज़ोर न बनें, सदा चुस्त रहें।

2. चाह

माखनलाल चतुर्वेदी – 'एक भारतीय आत्मा'

इस कविता के रचयिता माखनलाल चतुर्वेदी हैं। आपका उपनाम 'एक भारतीय आत्मा' है। आपका जन्म सन् 1888 में मध्यप्रदेश के 'खंडवा' में हुआ। आप राष्ट्रीय आंदोलनों में शामिल होकर अनेक बार जेल भी गये। 'हिम-तरंगिनी', 'हिम किरीटिनी', 'माता' आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। कवि एक पुष्प के माध्यम से देश भक्ति भावना को प्रकट करते हैं। आप 1968 में स्वर्ग सिधारे।

चाह नहीं, मैं सुरबाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ ;
चाह नहीं, प्रेमी-माला में
बिंध प्यारी को ललचाऊँ।

चाह नहीं, सम्राटों के शव
पर हरि ! मैं डाला जाऊँ;
चाह नहीं, देवों के सिर पर
चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ;
मुझे तोड़ लेना 'वनमाली'
उस पथ में देना तुम फेंक;
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावें वीर अनेक।।

शब्दार्थ

सुरबाला	-	अप्सरा, देवकांता;	ललचाना	-	आकृष्ट करना
इठलाना	-	गर्व करना;	वनमाली	-	श्रीकृष्ण; भगवान;
शीश चढाना	-	प्राणार्पण करना।			

अभ्यास

I. निम्नलिखित पद्यांश का भाव स्पष्ट कीजिए।

मुझे तोड़ .... वीर अनेक।

कवि परिचय : इस कविता के रचयिता माखनलाल चतुर्वेदी हैं। आपका उपनाम 'एक भारतीय आत्मा' है। आपका जन्म सन् 1888 में मध्यप्रदेश के 'खंडवा' में हुआ। आप राष्ट्रीय आंदोलनों में शामिल होकर अनेक बार जेल भी गये। 'हिम-तरंगिनी', 'हिम किरीटिनी', 'माता' आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। कवि एक पुष्प के माध्यम से देश-भक्ति भावना को प्रकट करते हैं। आप 1968 में स्वर्ग सिधारे। यह पद्यांश माखनलाल चतुर्वेदी की लिखी हुई कविता 'चाह' से दिया गया है।

भाव : राष्ट्र-प्रेम से भरपूर पुष्प वनमाली से कहता है कि मेरी एक-मात्र चाह यह है कि राष्ट्र की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बलि चढानेवाले वीरों के पैरों की सेज बनूँ। इसलिए मुझे तोड़कर उनके जाने के मार्ग में फेंक दो।

II. 'चाह' कविता का सारांश लिखिए।

कवि परिचय : इस कविता के रचयिता माखनलाल चतुर्वेदी हैं। आपका उपनाम 'एक भारतीय आत्मा' है। आपका जन्म सन् 1888 में मध्यप्रदेश के 'खंडवा' में हुआ। आप राष्ट्रीय आंदोलनों में शामिल होकर अनेक बार जेल भी गये। 'हिम-तरंगिनी' 'हिम-किरीटिनी' 'माता' आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। कवि एक पुष्प के माध्यम से देश-भक्ति भावना को प्रकट करते हैं। आप 1968 में स्वर्ग सिधारे।

सारांश : प्रस्तुत कविता में देश-भक्ति भावना से भरपूर एक पुष्प कहता है कि उसे सुरबाला के गहनों में गूँथे जाने की चाह नहीं है। किसी प्रेमी की माला में रहकर उसकी प्यारी को आकर्षित करने की इच्छा नहीं है।

सम्राटों के शवों पर चढ़ाये जाने की चाह नहीं है। देवों के सिर पर चढ़कर अपने भाग्य पर गर्व करने की चाह भी उसके मन में नहीं है।

वह राष्ट्रप्रेमी पुष्प 'वनमाली' से कहता है, तुम मुझे तोड़कर उस रास्ते पर फेंक दो, जिस रास्ते से होकर देश की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बलि चढ़ाने अनेक वीर जाते हैं। मैं उनके पैरों की सेज बनकर अपने भाग्य पर गर्व करना चाहता हूँ।"

3. सुख-दुख

– सुमित्रानन्दन पंत

इस कविता के रचयिता सुमित्रानंदन पंत हैं। आपका जन्म हिमालय के पास अल्मोड़ा में सन् 1900 में हुआ। कवीन्द्र रवीन्द्र के साथ रहने से आपको नवीन प्रेरणा मिली। आप महात्मा गाँधी से भी प्रेरित हुए। इस कविता में कवि संदेश देते हैं कि जीवन में सुख और दुख दोनों का मिश्रण रहना है। दोनों के रहने से ही जीवन परिपूर्ण बनता है। आप सन् 1977 में स्वर्ग सिधारे।

मैं नहीं चाहता चिर-सुख,
मैं नहीं चाहता चिर-दुख,
सुख-दुख की खेल मिचौनी
खोले जीवन अपना मुख।

सुख-दुख के मधुर मिलन से
यह जीवन हो परिपूरण;
फिर घन में ओझल हो शशि
फिर शशि से ओझल हो घन।

जग पीड़ित है अति दुख से,
जग पीड़ित रे! अति सुख से
मानव जग में बँट जावें,
दुख-सुख से औ' सुख-दुख से।

अविरत दुख है उत्पीड़न,
अविरत सुख भी उत्पीड़न,
दुख-सुख की निशा दिवा में
सोता-जगता जग-जीवन।

यह साँझ-उषा का आँगन,
आलिंगन विरह मिलन का,
चिर हास-अश्रुमय आनन
रे इस मानव जीवन का।

शब्दार्थ

खेल मिचौनी	-	आँख मिचौनी का खेल	निशा दिवा	-	रात-दिन
घन	-	बादल	ओझल होना	-	छिप जाना
साँझ	-	शाम	आलिंगन	-	गले लगाना

अभ्यास

I. निम्न पद्यांश का भाव स्पष्ट कीजिए:-

जग पीड़ित है ....सुख-दुख से।

कवि और कविता : इस कविता के कवि सुमित्रानंदन पंत हैं। आपका जन्म हिमालय के पास अल्मोड़ा में सन् 1900 में हुआ। कवीन्द्र रवीन्द्र के साथ रहने से आपको नवीन प्रेरणा मिली। आप महात्मा गाँधी से भी प्रेरित हुए। इस कविता में कवि संदेश देते हैं कि जीवन में सुख और दुख दोनों का मिश्रण रहना है। दोनों के रहने से ही जीवन परिपूर्ण बनता है। आप सन् 1977 में स्वर्ग सिधारे।

भाव : इस कविता में कवि कहते हैं कि मानव जीवन में सुख और दुख का मिश्रण होना चाहिए। संसार में सदा सुख भी रहना नहीं है और सदा दुख भी नहीं रहना है। मनुष्य के जीवन में सुख और दुख दोनों का समान अंश होना ज़रूरी है।

II. 'सुख-दुख' कविता का सारांश लिखिए:-

कवि परिचय : इस कविता के रचयिता सुमित्रानंदन पंत है। आपका जन्म हिमालय के पास अल्मोड़ा में सन् 1900 में हुआ। कवीन्द्र रवीन्द्र के साथ रहने से आपको नवीन प्रेरणा मिली। आप महात्मा गाँधी से भी प्रेरित हुए। इस कविता में कवि संदेश देते हैं कि जीवन में सुख और दुख दोनों का मिश्रण रहना है। दोनों के रहने से ही जीवन परिपूर्ण बनता है। आप सन् 1977 में स्वर्ग सिधारे।

सारांश : इस कविता में कवि पंत कहते हैं कि जीवन में सुख और दुख दोनों का मिश्रण होना चाहिए। मुझे सदा के लिए सुख नहीं चाहिए, सदा के लिए दुख भी नहीं चाहिए। सुख और दुख के आँख मिचौनी का खेल ही जीवन को आनंदमय बनाता है।

सुख और दुख का मिलन मधुर होना चाहिए, तभी जीवन परिपूर्ण होता है। जिस प्रकार मेघ में ओझल होकर बाहर निकलनेवाला चाँद अधिक सुंदर दिखता है, और चांदिनी के उजाले में छिपकर निकलनेवाला मेघ अधिक आकर्षक रहता है, उसी तरह दुख और सुख के खेल से जीवन अधिक आकर्षक बन सकता है। हे भगवान, यह संसार अधिक दुख से भी पीड़ित न हो। अधिक सुख के कारण आलसीपन की पीड़ा का शिकार न हो। जीवन में सुख और दुख सही अनुपात (ratio)में बँट जाना चाहिए।

सांसारिक जीवन में अविरत दुख या सुख दोनों दर्द देते हैं। जिस तरह दिन और रात बदल बदलकर आते हैं, उसी प्रकार सुख और दुख जीवन में आना चाहिए। इनमें जीवन सोकर, उठकर विभिन्न अनुभव प्राप्त करें। उषा और सायंकाल का मिलन अत्यंत सुंदर रहता है। विरह और मिलन जीवन को आकर्षक बनाते हैं। हर्ष और आँसू के मिश्रण जीवन को सार्थक बनाते हैं। इसी तरह सुख और दुख का मिश्रण मानव को परिपूर्ण बनाता है।

4. खिलौना

- सियारामशरण गुप्त

इस कविता के रचयिता सियारामशरण गुप्त हैं। आपका जन्म ई सन् 1895 में चिरगाँव में हुआ। आप राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के अनुज हैं। आप राष्ट्रीयता के पुजारी हैं। 'मौर्य विजय' 'दूरवादल' 'आर्द्री', 'पाथेय' आदि आपके कविता संग्रह हैं। इस कविता में कवि बाल मनोविज्ञान का सुंदर चित्रण देते हैं।

'मैं तो वही खिलौना लूँगा'
मचल गया दीना का लाल,
'खेल रहा था जिसको लेकर
राजकुमार उछाल उछाल'।

'मै तो वही खिलौना लूँगा'
मचल गया शिशु राजकुमार,
'वह बालक पुचकार रहा था
पथ में जिसको बारंबार।'

'वह तो मिट्टी का ही होगा,
खेलो तुम तो सोने से।'
दौड़ पड़े सब दास-दासियाँ
राजपुत्र के रोने से।

'मिट्टी का हो या सोने का,
इनमें वैसा एक नहीं
खेल रहा था उछल-उछल कर
वह तो उसी खिलौने से।'

राजहठी ने फेंक दिए सब
अपने रजत - हेम - उपहार
'लूँगा वही, वही लूँगा मैं।'
मचल गया वह राजकुमार।

शब्दार्थ

राजहठी - राजकुमार का हठ   मचल जाना - रोना-धोना, हठ करना

पुचकार - चुमकार

अभ्यास

I. निम्न पद्यांश का भाव स्पष्ट कीजिए:-

राजहठी ने .... राजकुमार

कवि परिचय : इस कविता के रचयिता सियारामशरण गुप्त हैं। आपका जन्म ई सन् 1895 में चिरगांव में हुआ। आप राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के अनुज हैं। आप राष्ट्रीयता के पुजारी हैं। 'मौर्यविजय' 'दूरवादल', 'आर्द्री', 'पाथेय' आदि आपके कविता संग्रह हैं।

भाव : इस कविता में कवि बाल मनोविज्ञान का सुंदर चित्रण देते हैं। राजकुमार को अनेक रजत, स्वर्ण के मूल्यावान उपहार दिए गए। लेकिन उसने सब कुछ फेंक दिए। उसे मिट्टी का खिलौना ही पसंद था। इसलिए मिट्टी के खिलौने का इशारा करके उसने हठ किया, 'मुझे यही खिलौना चाहिए'।

II. 'खिलौना' कविता का सारांश लिखिए:-

कवि परिचय : इस कविता के रचयिता सियारामशरण गुप्त हैं। आपका जन्म ई सन् 1895 में चिरगांव में हुआ। आप राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के अनुज हैं। आप राष्ट्रीयता के पुजारी है। 'मौर्य विजय' 'दूरवादल', 'आर्द्री', 'पाथेय' आदि आपके कविता संग्रह हैं।

सारांश : इस कविता में बाल मनोविज्ञान का सुंदर परिचय है। बच्चों के लिए सोना या मिट्टी दोनों बराबर हैं। कभी कभी मिट्टी के खिलौने उन्हें सोने के खिलौने की अपेक्षा अधिक प्यारे होते हैं।

कविता में एक राजकुमार, मिट्टी के खिलौने के लिए हठ करता है, जिसके साथ दीन (गरीब) का बच्चा पथ में खेल रहा था। उस खिलौने को लेकर राजकुमार भी खेल रहा था। राजकुमार राजमहल वापस आने के बाद भी उसी मिट्टी के खिलौने के लिए हठ करता है।

दास-दासियाँ उन्हें समझाते हैं कि वे उसे सोने के खिलौने देंगे। वे कहते हैं कि मिट्टी के खिलौने से सोने का खिलौना अच्छा है।

लेकिन राजकुमार कहता है कि मिट्टी का हो या सोने का, जिस खिलौने के साथ वह पथ में खेल रहा था, वही खिलौना चाहिए, क्योंकि उसमें बड़ा आनंद आता था।

चलते चलते, राजकुमार अधिक हठ करने लगा। उसने सभी स्वर्ण की चीजों को फेंक दिया। क्योंकि उसे मिट्टी का वह खिलौना ही पसंद था। बच्चों का स्वभाव बड़ा विचित्र होता है। अपनी पसंद की चीज़ सोना या मिट्टी, उसकी उन्हें कोई चिंता नहीं। इस कविता में राजहठ तथा बालहठ का वर्णन मन को छू लेता है।

5. माँ

– एकांत श्रीवास्तव

इस कविता के रचयिता श्री एकांत श्रीवास्तव हैं। आपका जन्म सन् 1964 को रायपुर झांसी में हुआ। आपकी प्रमुख रचनाएँ, ‘अन्न हैं मेरे शब्द’ (कविता संग्रह), पानी के भीतर फूल (उपन्यास) आदि हैं। इस कविता में कवि माँ के त्यागमय जीवन के बारे में बताते हैं।

शताब्दियों से
उसके हाथ में सुई और धागा है
और हमारी फटी कमीज़
माँ फटी कमीज़ पर पैबंद लगाती है
और पैबंद पर काढ़ती है
भविष्य का फूल

वह रात भर
कंदील की तरह जलती है
इसके बाद भोर के
तारे-सी झिलमिलाती है
माँ एक नदी का नाम है
जो जीवन के कछारों को
उर्वर बनाती है।

सम्पूर्ण धरती है माँ
हमारी साँसों की धुरी पर घूमती
जहाँ सबसे पहले फूटे जीवन के अंकुर
वह हमारे माथे पर
मोर पंख की तरह
बाँधती है वसन्त

हमारे घावों पर रखती है
रूई के फाहों-से बादल और
हमारे होंठों तक
अंजुरी में भरकर लाती है समुद्र
आकाश हैं हम
उसके दोनों हाथों में उठें।।

शब्दार्थ

शताब्दियों से	-	सैकड़ों वर्षों से	पैबंद	-	चकती (patch)
कंदील	-	मिट्टी का दिया	कछार	-	किनारा
उर्वर	-	उपजाऊ	सम्पूर्ण	-	पूरा
अंकुर	-	बीज का उगना	अंजुरी	-	करपात्र (दोनों हथेलियों से बननेवाला करपात्र)
भोर	-	बड़े सबेरे			

अभ्यास

I. निम्नलिखित पद्यांश का भाव स्पष्ट कीजिए:-

(1) माँ फटी कमीज पर .... भविष्य का फूल

कवि परिचय :- यह पद्यांश "माँ" नामक कविता से दिया गया है। इसके कवि श्री एकांत श्रीवास्तव हैं। इन्होंने ग्रामीण जीवन पर आधारित अनेक कविताएँ लिखी हैं। इस कविता में कवि ने माँ के निःस्वार्थ प्रेम का वर्णन किया है।

भाव :- कवि कहते हैं कि माँ अपनी संतानों के भविष्य का निर्माण खूब करती हैं। माँ अपने बच्चों की कमीज़ की छेद पर पैबन्द लगाते हुए उनके भविष्य के फूल काढ़ती है।

2) सम्पूर्ण धरती है .... जीवन के अंकुर

कवि परिचय :- यह पद्यांश "माँ" नामक कविता से दिया गया है। इसके कवि श्री एकांत श्रीवास्तव हैं। इन्होंने ग्रामीण जीवन पर आधारित अनेक कविताएँ लिखी हैं। इस कविता में कवि ने माँ के निस्वार्थ प्रेम का वर्णन किया है।

भाव :- माँ अपनी संतानों के लिए धरती की तरह सबकुछ सह लेती है। अपने बच्चों की साँसों की धुरी पर ही उसका जीवन फिरता है, घूमता है। सबके जीवन के अंकुर अपनी-अपनी माँ से ही फूटकर विकसित होते हैं।

II. 'माँ' कविता का सारांश लिखिए।

कवि परिचय : इस कविता के रचयिता श्री एकांत श्रीवास्तव हैं। आपका जन्म सन् 1964 को रायपुर झांसी में हुआ। आपकी प्रमुख रचनाएँ, 'अन्न हैं मेरे शब्द' (कविता संग्रह) 'पानी के भीतर फूल' (उपन्यास) आदि हैं। इस कविता में कवि माँ के त्यागमय जीवन के बारे में बताते हैं।

सारांश : 'माँ' नामक इस कविता में कवि ने माँ के निस्वार्थ प्रेम का वर्णन किया है। कवि कहते हैं कि इस दुनिया में माँ की ममता के बराबर कुछ भी नहीं हो सकता। माँ अपने हाथों से हमारी फटी कमीज़ की छेद पर पैबंद लगाकर फूल काढ़ती है। हमारे भविष्य को उज्ज्वल बनाती है।

रात भर लालटेन दीप की तरह जलकर हमारे जीवन में प्रकाश फैलाती है। फिर भोर के तारों की तरह झिलमिलाकर हमें प्रोत्साहित करती है। माँ ऐसी एक नदी है, जो हमारे बंजर जीवन को उपजाऊ बनाती है।

माँ धरती की तरह सब कुछ सह लेती है। वह हमारी साँसों के बल पर जीती है। हमारे जीवन का अंकुर वहीं से शुरू होता है। माँ हमारे जीवन में वसंत का अनुभव कराती है। जिस तरह मोर-पंख के बाँधने से हमारा माथा सुंदर दिखता है, उसी तरह हमारे जीवन को सुन्दरमय बनाती है। अगर हमें घाव लग जाए तो रूई से मुलायम मरहम लगाती है। बड़ी-बड़ी चीज़ों को भी अपनी हथेली पर लाकर हमें देती हैं। अपनी अंजली से समुद्र को भी ले आकर हमारे होंठो तक देती है। यानि माँ बच्चे के लिए असंभव कार्य को भी संभव बनाती है। माँ हमें आकाश की तरह ऊँचाई तक पहुँचाती है।

इस कविता में स्वार्थरहित माँ के प्रेम का वर्णन कवि ने सुन्दर ढंग से किया है।

6. भारत की नारी

- चंद मदरासी

[इस कविता के रचयिता 'चंद मदरासी' हैं। आपका जन्म उत्तर प्रदेश में सन् 1922 में हुआ। आप दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के पुराने प्रचारक हैं। आपने 'जोरदार' (साप्ताहिक), 'निर्मला' (मासिक), 'अंकन'(त्रैमासिक) आदि पत्रिकाओं का सम्पादन किया। आप सन् 1978 में स्वर्ग सिधारे। इस कविता में कवि 'भारत की नारी' की महानता के बारे में कहते हैं।]

आदिकाल से पुजती आयी इस धरती पर नारी
जब-जब भी इतिहास टटोला नर से पलड़ा भारी।

विधि ने सब कोमल तत्वों से जिसका अंग बनाया,
सुन्दरता के सार भाग से जिसका रूप सजाया।
ममता दया और करुणा का रस ढाला जिस तन में,
उसी विधाता ने साहस, बल भरा अपरिमित मन में।
देवों की सत्ता भी जिसके सम्मुख आकर हारी।।

जब अबोध नरपिंड रुदन कर इस धरती पर आया।
तब नारी ने ही कर दी थी उसकी कंचन काया।।
अपने सुख बलिदान किये थे जिसने नर के ऊपर।
अपने पैरों खड़ा किया था इस नर को धरती पर।।
जिस अंचल में हरि-हर-ब्रह्मा खेले भर किलकारी।।

प्रथम पुरुष को दिया जागरण मंत्र इसी नारी ने।
रवि की गति को रोक दिया था एक इसी नारी ने।
असुरों से रक्षा करने को यही नारी उठ धायी।
इसने ही आ भस्मासुर से शिव की जान बचायी।।
अवतारी नामों में आती नर से पहले नारी।।

वीरों ने निर्माण इसी नारी के बल से पाया।
पुरुषों के उत्थान मार्ग में अपना हाथ बँटाया।।
लिया कुपथ से खींच सुपथ पर दे प्रताडना नर को।
रह कर नर के साथ मिलाती नारी ही ईश्वर को।
यह तन भी मिट्टी बन जाता छूट जाय जब नरनारी।।

नारी ने अपने हाथों में जब तलवार उठाई।
उसकी शक्ति देखकर दृग से अरि सेना घबड़ाई।।
अब भी गूंज रही कानों में बीजापुर की रानी।
सन् सत्तावन में छाई थी झाँसी की मर्दानी।
नर के हर कामों में कंधा देती आई नारी।।

जब तक गृहिणी नहीं गेह में गृह भी सूना लगता।
गृहिणी के आते ही वह घर जगमग करने लगता।।
अर्धांगिनि के बिना मनुज भी रहता सदा अधूरा।
कोई कर्म बिना नारी के हुआ न अब तक पूरा।।

शब्दार्थ

इतिहास टटोलना	- इतिहास को उलट पलटकर देखना	सजाना	- अलंकृत करना
अपरिमित	- असीमित	अबोध	- अज्ञान
किलकारी	- खेल	जागरण	- सतर्क रहना, जागृति
उत्थान	- उन्नति	प्रताडना	- डाँट-डपट
पलड़ा भारी होना	- अधिक वज़न का होना		

अभ्यास

I. निम्नलिखित पद्यांश का भाव स्पष्ट कीजिए।

1) प्रथम पुरुष को दिया ...... नर से पहले नारी

कवि परिचय : ये पंक्तियाँ 'भारत की नारी' कविता से ली गई हैं। इस कविता के कवि चंद मदरासी हैं। इस कविता में कवि भारतीय नारी की महानता के बारे में बताते हैं।

भाव : कवि इस कविता में भारतीय नारी के आदर्शगुण पर प्रकाश डालते हैं। यहाँ दी हुई पंक्तियों में कवि कहते हैं, नारी ने ही संसार के प्रथम पुरुष को जागरण का मंत्र सिखाया। एक नारी ने सूर्य की गति को भी रोक दिया। नारी ने असुरों के आतंक से देवताओं की रक्षा की। एक बार शिव भस्मासुर को वर देकर मुसीबत में फँस गए, तब नारी ने ही (मोहिनी अवतार) शिव की रक्षा की। अवतार पुरुषों के नाम जब बोलते हैं, पहले नारी का नाम ही रहता है, जैसे पार्वती परमेश्वर, सीता राम, राधा कृष्ण आदि। इस तरह इन पंक्तियों में विभिन्न उदाहरण देकर नारी की महानता के बारे में कवि कहते हैं।

(2) जब तक गृहिणी नहीं गेह में गृह भी सूना लगता .... अब तक पूरा।

कवि परिचय : ये पंक्तियाँ 'भारत की नारी' कविता से ली गई हैं। इस कविता के कवि चंद मदरासी हैं। इस कविता में कवि भारतीय नारी की महानता के बारे में बताते हैं।

भाव : कवि यहाँ कहते हैं, जिस घर में नारी नहीं रहती, वह घर सूना-सूना रहता है। जब घर में नारी प्रवेश करती है, तब वह घर जगमगाने लगता है। नारी के बिना पुरुष भी अधूरा है। पत्नी के बिना पति अधूरा रहता है। क्योंकि पूजा पाठ, यज्ञ आदि में पत्नी का रहना अति आवश्यक है।

II. 'भारत की नारी' कविता का सारांश लिखिए।

कवि परिचय : इस कविता के रचयिता चंद मदरासी हैं। आपका जन्म उत्तर प्रदेश में सन् 1922 में हुआ। आप दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के पुराने प्रचारक हैं। आपने 'जोरदार' 'निर्मला' 'अंकन' आदि पत्रिकाओं का सम्पादन किया। आप सन् 1978 में स्वर्ग सिधारे। इस कविता में कवि 'भारत की नारी' की महानता बताते हैं।

सारांश : इस संसार के आदिकाल से ही सब लोग स्त्री के प्रति आदर की भावना प्रदर्शित करते आते हैं। हम इतिहास को गहराई से पढ़ेंगे तो हमें पता चलेगा कि नर की अपेक्षा नारी का स्थान ऊँचा है।

भगवान ने सभी प्रकार के कोमल तत्वों का, सभी प्रकार के सौन्दर्य का उपयोग करके नारी को बनाया है।

उसे ममता, दया, करुणा आदि अनेक मृदु गुण प्रदान किए। कवि कहते हैं, जिस भगवान ने नारी को अधिक मृदु बनाया, उसी भगवान ने उसमें साहस, बल आदि गुण भी भरपूर दिया। नारी के साहस के सामने देव सत्ता भी हार गई।

पैदा होते समय मनुष्य साधारण नर पिंड जैसा है। लेकिन नारी उसे पाल पोसकर, सोने जैसा कांतिमान बनाती है। ऐसा करते समय नारी अपने सुख दुख आदि किसी की भी परवाह नहीं करती है। नर को स्वतंत्र रूप में जीने का मार्ग भी नारी ही सिखाती है। नारी के अंचल में हरि, ब्रह्मा और शिव ने भी आश्रय पाया, उसकी गोद में खेलकर उन्होंने भी आनंद का अनुभव किया।

प्रथम पुरुष यानि मनु को नारी ने ही जागरण का मंत्र सिखाया। एक नारी ने, अपनी शक्ति से सूर्य की गति को भी स्थगित किया। असुरों से भूमि की रक्षा करने के लिए एक नारी पराशक्ति का रूप लेकर आई। भस्मासुर से शिव की रक्षा करने के लिए एक नारी ही आगे आई। (मोहिनी अवतार लेकर विष्णु आए)। जब हम अवतारों का नाम लेते हैं, उनमें पहले नारी का नाम ही आता है। (लक्ष्मी नारायण,सीता राम मीनाक्षी सुंदरेश्वर आदि)

अनेक वीरों को वीरता देनेवाली नारी ही है। (जैसे शिवाजी की माता आदि) पुरुष की सफलता के पीछे नारी ही रहती है। जब भी पुरुष गलत रास्ते पर जाता है, तब नारी ही उसे रोककर सही रास्ते पर ले आती है। मनुष्य को ईश्वर के बराबर उत्कृष्ट बनानेवाली भी नारी ही है। अगर नर और नारी एक दूसरे के साथ मिलकर नही रहते तो, सबका शरीर, मात्र मिट्टी बनकर रह जाएगा।

नारी ने जब भी अपने हाथों में तलवार उठाई, उसकी शक्ति को देखकर बड़ी सेना भी घबराने लगी। बीजापुर की रानी अहल्या बाई और झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम अब भी सबके कानों में गूँज रहा है। सन् 1857 में झाँसी की रानी ने अपनी वीरता प्रदर्शित की। हर नर के साथ एक नारी कंधे से कंधा मिलाकर साथ देती है।

घर में अगर महिला नहीं है तो घर सूना सूना रहता है। गृहणी के घर में प्रवेश करते ही घर प्रकाशमय बन जाता है। पत्नी के बिना पति का जीवन अधूरा है। नारी के बिना कोई भी कार्य पूर्ण नहीं होता है।

7. भिक्षुक

– सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

[इस कविता के कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' है। आपका जन्म सन् 1896 में हुआ। 'निराला' आपका सार्थक नाम है। आपकी प्रतिभा बहुमुखी है। आपने नये छंद की सृष्टि की। आपको हिन्दी में मुक्त छंद के जन्मदाता मानते हैं। आप बंगला, संस्कृत और अँग्रेज़ी साहित्य के अच्छे ज्ञाता हैं। आपने 'परिमल', 'अनामिका', 'गीतिका' आदि अनेक रचनाएँ कीं। आप स्वामी विवेकानंद के विचारों से प्रभावित हैं।]

वह आता........
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।
पेट-पीठ दोनों मिलकर हैं एक
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठी-भर दाने को....भूख मिटाने को
मुँह फटी-पुरानी झोली को फैलाता–
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।
साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाए,
बाएँ से वे मलते हुए पेट चलते हैं,
और दाहिना दया-दृष्टि पाने की ओर बढ़ाए।
भूख से सूख ओंठ जब जाते,
दाता....भाग्य-विधाता से क्या पाते?.....
घूँट आँसुओं के पीकर रह जाते।
चाट रहे हैं जूठी पत्तल कभी सड़क पर खड़े हुए,
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।

शब्दार्थ

कलेजा	-	हृदय	लकुटिया	-	छड़ी,
मुट्ठी भर दाना	-	हाथ भर का दाना	पछताना	-	दुखित होना
विधाता	-	भगवान			

अभ्यास

I. निम्नलिखित पद्यांश का भाव स्पष्ट कीजिए।

भूख से .... अड़े हुए।

कवि और कविता : यह पदयांश 'भिक्षुक' शीर्षक कविता से लिया गया है। इस कविता के कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हैं।

भाव : यहाँ कवि 'भिक्षुक' की दयनीय दशा का वर्णन करते हैं। जब उनके ओंठ भूख से सूख जाते, तब विधाता भी उनको कुछ दे नहीं पाते। वे आँसुओं के घूँट पीकर रह जाते हैं। कभी सड़क पर खड़े होकर वहाँ पड़े जूठे पत्तों को चाटकर अपनी भूख मिटाने का प्रयास करते हैं। ऐसे करते समय, वहाँ के कुत्ते झपटकर उनसे उन जूठे पत्तों को छीनने आते हैं। इस तरह भिखारियों की दयनीय दशा का कवि वर्णन करते हैं।

II. 'भिक्षुक' कविता का सारांश लिखिए।

कवि परिचय : इस कविता के लेखक सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हैं। आपका जन्म सन् 1896 में हुआ। 'निराला' आपका सार्थक नाम है। आपकी प्रतिभा बहुमुखी है। आपने नए छंद की सृष्टि की। आपको हिन्दी में मुक्त छंद के जन्मदाता मानते हैं। आप बंगला, संस्कृत और अँग्रेज़ी साहित्य के अच्छे ज्ञाता हैं। आपने 'परिमल', 'अनामिका', 'गीतिका' आदि अनेक रचनाएँ कीं। आप स्वामी विवेकानंद के विचारों से प्रभावित हैं।

सारांश : इस कविता में कवि भिखारियों की दयनीय दशा का वर्णन करते हैं। कवि की दृष्टि में एक भिक्षुक पड़ता है-वह भिक्षुक अपने दुखों के बारे में सोचते हुए, पछताते हुए आता है। वह इतना कमज़ोर है कि उसकी पीठ और पेट दोनों एक ही समतल में है। इससे पता चलता है कि वह बहुत दिनों से भूखा है। वह लकुटिया टेकते हुए चलता है।

उसकी हालत का वर्णन कवि इस प्रकार करते हैं- 'मुट्ठी भर के दाने पाकर अपनी भूख मिटाने के लिए वह भीख माँगता है। उसके पास फटी पुरानी झोली है, और उसी में भिक्षा प्राप्त करता है। अपने जीवन के बारे में सोचते हुए पछताते हुए वह आता है।'

वह अकेला नहीं, लेकिन उसके साथ दो बच्चे हैं। वे बच्चे भी उसके साथ दोनों हाथ फैलाए भीख माँगते आते हैं। बेचारे इतने भूखे हैं कि बाएँ हाथ से अपने पेट को मलते हुए और दाएँ हाथ को पसारते हुए आते हैं। यह दृश्य अत्यंत दयापूर्ण है।

भूख के कारण उनके होंठ सूख जाते हैं। वे आँसुओं के घूँट पीकर अपनी प्यास बुझा लेते हैं। अगर कहीं, सड़क पर जूठे पत्ते देखते तो, उनको चाव से लेकर चाटते हैं। ऐसा करते समय, वहाँ खड़े कुत्ते से बचाकर उस जूठे पत्ते को चाटना पड़ता है।

इस तरह भिखारी की दयनीय दशा का वर्णन कवि ने किया है।

8. कबीर के दोहे

[कबीर के बारे में कहा जाता है कि सन् 1398 में काशी में उनका जन्म हुआ और सन् 1518 के आसपास मगहर में देहांत हुआ। कबीर ने विधिवत् शिक्षा नहीं पायी थी, परंतु सत्संग, पर्यटन तथा अनुभव से उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया था।

भक्तिकालीन निर्गुण संत परंपरा के प्रमुख कवि कबीर की रचनाएँ मुख्यतः कबीर ग्रंथावली में संगृहीत हैं, किंतु कबीर पंथवाले उनकी रचनाओं का संग्रह 'बीजक' को ही प्रामाणिक मानते हैं। कुछ रचनाएँ 'गुरुग्रंथ साहब' में भी संकलित हैं।

कबीर अत्यंत उदार, निर्भय तथा सद्‌गृहस्थ संत थे। राम और रहीम की एकता में विश्वास रखनेवाले कबीर ने ईश्वर के नाम पर चलनेवाले हर तरह के पाखंड, भेदभाव और कर्मकांड का खंडन किया। उन्होंने अपने काव्य में धार्मिक और सामाजिक भेदभाव से मुक्त मनुष्य की कल्पना की। ईश्वर-प्रेम, ज्ञान तथा वैराग्य, गुरुभक्ति, सत्संग और साधु-महिमा का वर्णन किया। दार्शनिक चिंतन को सरल ढंग से व्यक्त करने की शक्ति कबीर की विशेषता है।]

1. पाँच पहर धन्धे गया, तीन पहर गया सोय।
एक पहर हरि नाम बिन, मुक्ति कैसे होय।। **(कंठस्थ)**

2. रूखी सूखी खायके, ठंडा पानी पीव।
देख पराई चूपड़ी, मत ललचावे जीव।। **(कंठस्थ)**

3. धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।
माली सींचै सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय।। **(कंठस्थ)**

4. माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मन का डार दे, मन का मनका फेर।। **(व्याख्या)**

5. माटी कहे कुम्हार से, तू क्या रौंदे मोंहि।
एक दिन ऐसा आएगा, मैं रौंदूगी तोहि।। **(व्याख्या)**

शब्दार्थ

पाँच पहर	- पंद्रह घंटे	तीन पहर	- नौ घंटे
मुक्ति	- निर्वाण	कुम्हार	- मिट्टी का बर्तन बनानेवाले
रौंदना	- कुचलना	फेर	- परिवर्तन, सुधार
कर	- हाथ	मनका	- मणिका (धातु, लकड़ी से बना गोलाकर मणि)
रूखी-सूखी	- स्वाद रहित	पराई	- दूसरों की
चूपड़ी	- घी लगाई रोटी	रे मना	- रे मन
ऋतु	- मौसम।		

अभ्यास

I. 1, 2, 3 दोहों का कंठस्थ रूप ज्यों का त्यों लिखिए।

1. पाँच पहर .... मुक्ति कैसे होय।

कबीरदास कहते हैं कि एक दिन में चौबीस घंटे होते हैं। इनमें पंद्रह घंटे काम-धंधों में बिता देते हैं, नौ घंटे सोने में। हमें हरि स्मरण करने फुरसत ही नहीं मिलती। हरि स्मरण किये बिना कोई मुक्ति कैसे पा सकता है ? अर्थात् हरि स्मरण से ही कोई मुक्ति पा सकता है।

2. रूखी सूखी खायकै, ... मत ललचावे जीव।।

कबीरदास कहते हैं कि प्राप्त वस्तु से हमें संतुष्ट हो जाना चाहिए। अगर हमें खाने के लिए रूखी-सूखी रोटी और पीने के लिए ठंडा पानी ही मिले तो उसीसे हमें तृप्त हो जाना चाहिए। दूसरों के घर में बनी घी लगायी रोटी के लिए ललचाना नहीं चाहिए।

3. धीरे-धीरे रे मना, ... ऋतु आए फल होय।।

मनुष्य का मन चाहता है कि सभी काम अभी हो जाएँ। इसपर कबीरदास कहते हैं कि सभी काम सही वक्त पर ही होता है। उदाहरण देते हुए संत कवि कहते हैं कि हे मन! काम धीरे-धीरे ही होंगे। पेड़ों को सौ घड़ा पानी देने पर भी ऋतु के आने पर ही पेड़ फल-फूल देते हैं।

II. निम्नलिखित दोहों का भावार्थ लिखिए।

4. माला फेरत जुग भया, ... मन का मनका फेर।।

कवि परिचय : कबीर के बारे में कहा जाता है कि सन् 1398 में काशी में उनका जन्म हुआ और सन् 1518 के आसपास मगहर में देहांत हुआ। कबीर ने विधिवत् शिक्षा नहीं पायी थी, परंतु सत्संग, पर्यटन तथा अनुभव से उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया था।

भावार्थ : कबीरदास बाह्याडंबर पर विश्वास नहीं करते थे। कई लोग भक्ति के नाम पर माला फेरते हैं, जप-तप करते हैं। ये सब बाह्याडंबर हैं। इन बाह्याडंबरों से मन में कोई सुधार नहीं होता, समय ही व्यर्थ होता है।

कबीर कहते हैं कि लोग बैठे-बैठे जपमाला को फेरते रहते हैं। लेकिन मन-परिवर्तन के लिए कोई प्रयास नहीं करते। कबीर उन लोगों से कहते हैं कि हाथ की माला को दूर फेंककर मन की माला को फेरने का प्रयास करो। अर्थात् मन सुधार का प्रयास करो।

5. माटी कहे कुम्हार से, ... मैं रौंदूगी तोहि।।

कवि परिचय : कबीर के बारे में कहा जाता है कि सन् 1398 में काशी में उनका जन्म हुआ और सन् 1518 के आसपास मगहर में देहांत हुआ। कबीर ने विधिवत् शिक्षा नहीं पायी थी, परंतु सत्संग, पर्यटन तथा अनुभव से उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया था।

भावार्थ : कबीरदास कहते हैं कि किसी को कमज़ोर समझकर सताना नहीं चाहिए, क्योंकि समय एक-सा नहीं रहता। कमज़ोर आदमी भी कल बलवान बन सकता है। उदाहरण देते हुए कबीरदास कहते हैं, कुम्हार माटी को रौंदकर बर्तन बनाता है; इससे दुखी होकर माटी, कुम्हार से कहती है कि आज तुम मुझे रौंद रहे हो। कल तुम शव बनकर मेरे पास आओगे तो मैं तुम्हें रौंदूँगी।

9. रहीम के दोहे

[रहीम का जन्म लाहौर (अब पाकिस्तान) में सन् 1556 में हुआ। इनका पूरा नाम अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना था। रहीम अरबी, फ़ारसी, संस्कृत और हिंदी के अच्छे विद्वान थे। इनकी नीतिपरक उक्तियों पर संस्कृत कवियों की स्पष्ट छाप परिलक्षित होती है। रहीम अक़बर के नवरत्नों में से एक थे। रहीम की प्रमुख कृतियाँ : रहीम सतसई, शृंगार सतसई, मदनाष्टक, रास पंचाध्यायी, रहीम रत्नावली, बरवै, भाषिक भेदवर्णन हैं। ये सभी कृतियाँ 'रहीम ग्रंथावली' में समाहित हैं। प्रस्तुत पाठ में रहीम के नीतिपरक दोहे दिये गये हैं।]

1. खैर, खून, खाँसी खुसी, बैर प्रीति, मदपान।
रहिमन दाबे न दबै, जानत सकल जहान।। **(कंठस्थ)**

2. रहिमन निज मन की व्यथा, मन ही राखे गोय।
सुनि इठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय।। **(कंठस्थ)**

3. रहिमन देख बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि।। **(कंठस्थ)**

4. रहिमन वे नर मर गये, जे कुछ माँगन जाहि।
उनते पहिले वे मुये, जिन मुख निकसत नाहि।। **(व्याख्या)**

5. रहिमन विपदा हू भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय। **(व्याख्या)**

शब्दार्थ

खैर	-	खैरियत, स्वस्थ रहना	खून	-	हत्या
खुसी	-	खुशी	बैर	-	दुश्मनी
प्रीति	-	प्रेम	निज	-	अपना

व्यथा	- कष्ट, वेदना	मन राखे	- मन में ही रख लें
इठिलैहैं	- मज़ाक उड़ाते हैं	बाँटी	- बाँट लेते हैं (भाग लेते हैं)
बड़ेन	- बड़ी वस्तु	लघु	- छोटा
दीजिए डारि	- तिरस्कार करना	काम आवै	- उपयोग में आना
कहा करै	- क्या करेगा	नर	- मनुष्य
माँगन	- माँगना	उनते पहिले	- उनके पहले
मुये	- मर गये	निकसत	- निकलता है
विपदा	- कष्ट, विपत्ति	भली	- अच्छी
थोरे दिन	- थोड़े दिन	हित	- हितैषी, मित्र
अनहित	- हित न करनेवाला	जानि परत	- जान लेते हैं, पता चलता है

अभ्यास

I. 1, 2, 3, दोहों का कंठस्थ रूप ज्यों का त्यों लिखिए।

1. खैर, खून, खुसी .... जानत सकल जहान।।

संत कवि रहीम कहते हैं कि दुनिया जानती है कि खैरियत, खून, खाँसी, खुशी, दुश्मनी, प्रेम और मदिरा का नशा आदि को छुपाकर रखना नामुमकिन है।

2. रहिमन निज मन की .... बाँटि न लैहैं कोय।।

कवि रहीम कहते हैं कि हमें अपने मन की व्यथा को किसी को सुनाना नहीं चाहिए, क्योंकि सुननेवाले हमारी दुखगाथा जानकर मन ही मन खुश होते हैं और समय आने पर हमारी मज़ाक उड़ाते हैं। कोई भी हमारे कष्टों को बाँट लेने तैयार नहीं होगा।

3. रहिमन देख बड़ेन को, ... कहा करै तरवारि।।

संत कवि रहीम कहते हैं कि हम छोटी वस्तुओं को तुच्छ समझकर उनका तिरस्कार करते हैं; लेकिन छोटी और बड़ी दोनों प्रकार की वस्तुओं का समान आदर करना चाहिए। हमको यह समझना चाहिए कि छोटी वस्तु जो काम कर सकती है, वह काम बड़ी वस्तु नहीं कर सकती। इसका एक सुन्दर उदाहरण देते हुए रहीम कहते हैं कि छोटी वस्तु सुई का काम बड़ी वस्तु तलवार नहीं कर सकती।

II. निम्नलिखित दोहों का भावार्थ लिखिए।

4. रहिमन वे नर मर गये, ... जिन मुख निकसत नाहि।।

कवि परिचयः रहीम का जन्म लाहौर (अब पाकिस्तान) में सन् 1556 में हुआ। इनका पूरा नाम अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना था। रहीम अरबी, फ़ारसी, संस्कृत और हिंदी के अच्छे विद्वान थे। इनकी नीतिपरक उक्तियों पर संस्कृत कवियों की स्पष्ट छाप परिलक्षित होती है। रहीम अक़बर के नवरत्नों में से एक थे। रहीम की प्रमुख कृतियाँ : रहीम सतसई, शृंगार सतसई, मदनाष्टक, रास पंचाध्यायी, रहीम रत्नावली, बरवै, भाषिक भेदवर्णन हैं।

भावार्थ : रहीम कहते हैं कि भीख माँगना और भीख माँगने पर 'नहीं' कहना दोनों मरने के समान है। अंतर इतना ही है कि भीख न देनेवाला भीख माँगनेवाले से पहले ही मर जाता है।

5. रहिमन विपदा हूँ भली, ... जानि परत सब कोय।।

कवि परिचयः रहीम का जन्म लाहौर (अब पाकिस्तान) में सन् 1556 में हुआ। इनका पूरा नाम अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना था। रहीम अरबी, फ़ारसी, संस्कृत और हिंदी के अच्छे विद्वान थे। इनकी नीतिपरक उक्तियों पर संस्कृत कवियों की स्पष्ट छाप परिलक्षित होती है। रहीम अक़बर के नवरत्नों में से एक थे। रहीम की प्रमुख कृतियाँ : रहीम सतसई, शृंगार सतसई, मदनाष्टक, रास पंचाध्यायी, रहीम रत्नावली, बरवै, भाषिक भेदवर्णन हैं।

भावार्थ : रहीम कहते हैं कि हमारे जीवन में आनेवाले कष्ट, विपत्ति ये सब थोड़े दिनों के लिए होना अच्छा है। ये कष्ट और विपत्तियाँ इन थोड़े दिनों में हमको यह बता देते हैं कि हमारे मित्र और शत्रु कौन हैं।

10. वृन्द के दोहे

[वृंद का जन्म राजस्थान में सन् 1643 में हुआ; वे कृष्णगढ़ के महाराजा मानसिंह के दरबारी कवि थे। हमारे पाठ में दिए गए दोहों में वृंद ने एक-एक कहावत का चतुराई से प्रयोग किया है।]

1. बुरे लगत सिख के वचन, हिए विचारौ आप।
करुए भेषज बिन पिये, मिटै न तन को ताप।।

2. नैना देत बताय सब, हिय कौ हेत अहेत।
जैसे निर्मल आरसी, भली बुरी कह देत।

3. विद्या धन उद्यम बिना, कहौ जु पावै कोन।
बिना डुलाये ना मिलै, ज्यों पंखे की पौन।

4. सबै सहायक सबल के, कोउ न निबल सहाय
पवन जगावत आग को, दीपहिं देत बुझाय।।

5. अति परिचय ते होत है, अरुचि अनादर भाय।
मलयागिरि की भीलनी, चंदन देत जराय।।

शब्दार्थ

तन कौ ताप	- शरीर की गरमी (ज्वर)	नैना	- नयन, आँखें
हिय कौ हेत अहेत	- हृदय के अच्छे-बुरे विचार	निर्मल आरसी	- साफ़ सुथरा आईना
विद्याधन	- विद्यारूपी धन	उद्यम बिना	- परिश्रम के बिना
पौन	- हवा	अनादर	- बेइज़्ज़ती
भीलनी	- भील जाति की स्त्री	मलयागिरि	- नीलगिरि पहाडियों के दक्षिणी छोर का पहाड़

अभ्यास

I. निम्नलिखित दोहों का भाव स्पष्ट कीजिए।

1. बुरे लगत सिख के वचन, ... मिटै न तन को ताप।।

कवि परिचय : वृंद का जन्म राजस्थान में सन् 1643 में हुआ; वे कृष्णगढ़ के महाराजा मानसिंह के दरबारी कवि थे। हमारे पाठ में दिए गए दोहों में वृंद ने एक-एक कहावत का चतुराई से प्रयोग किया है।

भावार्थः शिक्षा देनेवाली उपदेशात्मक बातें बुरी लगती हैं। यह मन में सोचने की बात है। परन्तु कडुवी दवा पिये बिना शरीर का ज्वर नहीं उतरता। उसी प्रकार विद्वान लोगों के वचन हमें कडुवे लगते हैं, लेकिन ये वचन जीवन में बहुत उपयोगी रहते हैं और इनसे अविद्या दूर होती है।

कहावतः 'करुए भेषज बिन पिये मिटे न तन को ताप'

2. **नैना देत बताय सब, ... भली बुरी कह देत।**

कवि परिचय : वृंद का जन्म राजस्थान में सन् 1643 में हुआ; वे कृष्णगढ़ के महाराजा मानसिंह के दरबारी कवि थे। हमारे पाठ में दिए गए दोहों में वृंद ने एक-एक कहावत का चतुराई से प्रयोग किया है।

भावार्थः जिस प्रकार साफ़ सुथरा आईना भली-बुरी चीज़ों को जैसे के तैसे बता देता है उसी प्रकार आँखें मन के अच्छे-बुरे विचारों को साफ़-साफ़ बता देती हैं।

कहावतः 'जैसे निर्मल आरसी भली बुरी कह देत'

3. **विद्या धन उद्यम बिना, ... ज्यों पंखे को पौन।**

कवि परिचय : वृंद का जन्म राजस्थान में सन् 1643 में हुआ; वे कृष्णगढ़ के महाराजा मानसिंह के दरबारी कवि थे। हमारे पाठ में दिए गए दोहों में वृंद ने एक-एक कहावत का चतुराई से प्रयोग किया है।

भावार्थः जिस प्रकार पंखे को डुलाए बिना हवा नहीं मिलती, उसी प्रकार परिश्रम के बिना विद्या रूपी धन कौन पा सकता है। कठिन परिश्रम किये बिना कोई विद्या रूपी धन नहीं पा सकता।

कहावतः'बिना डुलाये न मिलै पंखे को पौन'

4. **सबै सहायक सबल के, ... दीपहिं देत बुझाय।।**

कवि परिचय : वृंद का जन्म राजस्थान में सन् 1643 में हुआ; वे कृष्णगढ़ के महाराजा मानसिंह के दरबारी कवि थे। हमारे पाठ में दिए गए दोहों में वृंद ने एक-एक कहावत का चतुराई से प्रयोग किया है।

भावार्थः सब लोग बलवानों के ही सहायक होते हैं, कमज़ोर लोगों की सहायता करनेवाला कोई नहीं है। हवा बड़ी आग को और भी भडका देती है लेकिन छोटे दीप को बुझा देती है। संसार की रीति हवा के काम की तरह ही होती है।

कहावतः 'पवन जगावत आग को दीपहिं देत बुझाय'

5. **अति परिचय ते होत है, ... चंदन देत जराय।।**

कवि परिचय : वृंद का जन्म राजस्थान में सन् 1643 में हुआ; वे कृष्णगढ़ के महाराजा मानसिंह के दरबारी कवि थे। हमारे पाठ में दिए गए दोहों में वृंद ने एक-एक कहावत का चतुराई से प्रयोग किया है।

भावार्थः मलय पर्वत पर चन्दन वृक्ष बहुत होते हैं। इसलिये वहाँ रहनेवाली भीलनी सदा चन्दन की बहुलता के कारण उसका महत्व भूल जाती है तथा चूल्हा जलाने के लिये चन्दन की लकडी का उपयोग करती है। इससे यह मालूम होता है कि अधिक परिचय यानी सदा साथ रहने के कारण कीमती चीज़ों के प्रति भी रुचि-हीनता तथा अनादर हो जाता है।

कहावतः 'मलयागिरि की भीलनी चन्दन देत जराय'

11. उर्दू के शेर
(गज़ल के कुछ शेर)

गज़ल अरबी साहित्य की प्रसिद्ध काव्य विधा है जो बाद में फारसी, उर्दू, नेपाली और हिन्दी साहित्य में भी बहुत लोकप्रिय हुई। हिन्दी के अनेक रचनाकारों ने इस विधा को अपनाया है।

1. घरों पे नाम थे नामों के साथ ओहदे थे
बहुत तलाश किया कोई आदमी न मिला **(बशीर 'बद्र')**

2. ये हुनर भी बड़ा ज़रूरी है
कितना झुक कर किसे सलाम करो **(हफीज़ मेरठी)**

3. फ़रमान से पेड़ों पे कभी फल नहीं लगते
तलवार से मौसम कोई बदला नहीं जाता **(मुजफ़्फ़र वारसी)**

4. बुलन्दियों पे पहुँचना कोई कुशलता नहीं
बुलन्दियों पे ठहरना कमाल होता है। **(अशोक 'साहिल')**

5. जो घर बनाओ तो इक पेड़ भी लगा लेना
परिन्दे सारे मुहल्ले में चहचहाएँगे **(डॉ. के.के. ऋषि)**

शब्दार्थ

ओहदा	- पद	तलाश	- खोज, ढूँढना
हुनर	- कला	फ़रमान	- आज्ञा, हुक्म
तलवार	- खड्ग	बुलदियों को पहुँचना	- बड़े-बड़े पद पाना, ऊँचाई तक पहुँचना
कमाल	- कुशलता	ठहरना	- बने रहना
परिंदा	- पक्षी	मुहल्ले में	- इलाके में
चहचहाना	- कलरव करना	इक	- एक

अभ्यास

I. निम्नलिखित गज़लों का भावार्थ लिखिए।

1. घरों पे नाम थे .... आदमी न मिला।। (बशीर 'बद्र')

शायर बशीर 'बद्र' कहते हैं कि तलाश करने पर बड़े-बड़े ओहदेवाले और बड़े-बड़े व्यक्तियों के नाम मिल जाते हैं। लेकिन सच्चा इंसान कहीं नहीं मिल पाता है। इसीको बशीर 'बद्र' कहते हैं कि घरों पर नाम और ओहदे का नाम लिखा रहता है, लेकिन उस घर में सच्चा इंसान नहीं मिलता है।

2. ये हुनर भी .... सलाम करो ।। (हफ़ीज़ मेरठी)

शायर हफ़ीज़ मेरठी कहते हैं कि जीवन में झुकने की कला सीखना ज़रूरी है। किसके पास कितना अधिकार है?-इसे समझकर उसके हिसाब से झुकना है और सलाम करना है। यहाँ शायर दुनियादारी पर मज़ाक उड़ाते हैं।

3. फरमान से पेड़ों .... नहीं जाता।। (मुजफ़्फ़र वारसी)

शायर मुजफ़्फ़र वारसी कहते हैं कि कोई भी काम हम अपना अधिकार दिखाकर कर नहीं सकते। प्रकृति किसी मनुष्य के अधिकार और आज्ञा को नहीं मानती। उदाहरण देते हुए शायर कहते हैं किसीकी आज्ञा मानकर पेड़ों पर फल नहीं लगते और उसी प्रकार किसी की तलवार देखकर मौसम नहीं बदलता।

4. बुलन्दियों पे .... कमाल होता है।। (अशोक साहिल)

शायर अशोक 'साहिल' कहते हैं कि बुलन्दियों को छूना (ऊँचाई तक पहुँचना), बड़े-बड़े पद पर बैठना कोई बड़ी बात नहीं है। उस पद को अंत तक बनाए रखना बड़ी बात होती है। अर्थ यह है कि बड़े-बड़े पदों पर पहुँचने के बाद पदों को अंत तक संभालना ही कुशलता है।

5. जो घर बनाओ तो .... चहचहाएँगे।। (डॉ. के. के. ऋषि)

डॉ.के.के. ऋषि इस शेर में पेड़ों का महत्व बताते हैं। नया घर बनानेवालों से शायर कहते हैं कि घर बनाते समय एक पेड़ भी लगा दो। उस पेड़ में परिंदे आकर निवास करेंगे, सुबह-शाम चहचहाएँगे। उन परिंदों की मीठी बोली हमें आनंद प्रदान करेगी और सारे मोहल्ले में खुशी का वातावरण रहेगा।

राष्ट्रभाषा पाठ्य पुस्तक

भाग - 2

गद्य

	पृष्ठ
1. सभ्यता का रहस्य	36
2. रुपया	44
3. दक्षिण अफ्रिका में गाँधीजी	48
4. कर्मवीर कामराज	51
5. कोविड-19	56
6. स्वामी विवेकानंद	60
7. आर्किमेडीस	64
8. शिवाजी की गुरुभक्ति	68
9. तेनालीराम	74
10. स्वाभिमानी बालक	78

1. सभ्यता का रहस्य

- प्रेमचन्द

यों तो मेरी समझ में दुनिया की एक हज़ार एक बातें नहीं आतीं-जैसे, लोग प्रातःकाल उठते ही बालों पर छुरा क्यों चलाते हैं? क्या अब पुरुषों में भी इतनी नज़ाकत आ गयी है कि बालों का बोझ उनसे नहीं संभलता? एक साथ ही सभी पढ़े-लिखे आदमियों की आँखें क्यों इतनी कमज़ोर हो गयी हैं? दिमाग की कमज़ोरी ही इसका कारण है या और कुछ? लोग खिताबों के पीछे क्यों इतना हैरान होते हैं- इत्यादि। लेकिन इस समय मुझे इन बातों से मतलब नहीं। मेरे मन में एक नया प्रश्न उठ रहा है, और उसका जवाब मुझे कोई नहीं देता। प्रश्न यह है कि सभ्य कौन है और असभ्य कौन। सभ्यता के लक्षण क्या हैं? सरसरी नज़र से देखिये तो इससे ज्यादा आसान और कोई सवाल ही न होगा। बच्चा-बच्चा इसका समाधान कर सकता है। लेकिन ज़रा गौर से देखिये, तो प्रश्न इतना आसान नहीं जान पड़ता। क्या कोट-पतलून पहनना, टाई-हैट-कालर लगाना, मेज़ पर बैठकर खाना खाना, दिन में तेरह बार काफ़ी या चाय पीना और सिगरेट पीते हुए चलना सभ्यता है? कभी नहीं। सभ्यता कोई और ही चीज़ है; उसका देह से उतना संबंध नहीं, जितना मन से।

मेरे इने-गिने मित्रों में एक राय रतन किशोर भी हैं। आप बहुत ही सहृदय, बहुत ही उदार, बहुत अधिक शिक्षित और एक बड़े ओहदेदार हैं। बहुत अच्छा वेतन पाने पर भी उनकी आमदनी खर्च के लिए काफ़ी नहीं होती। एक चौथाई वेतन बंगले ही की भेंट हो जाता है। इसलिए आप बहुधा चिंतित रहते हैं। रिश्वत तो नहीं लेते-कम से कम मैं नहीं जानता, हालांकि कहनेवाले कहते हैं। लेकिन इतना जानता हूँ कि वह भत्ता बढ़ाने के लिए दौरे पर बहुत रहते हैं, यहाँ तक कि इसके लिए हर साल बजट की किसी दूसरी मद से रुपये निकालने पड़ते हैं। उनके अफ़सर कहते हैं, इतने दौरे क्यों करते हो, तो जवाब देते हैं, इस ज़िले का काम ही ऐसा है कि जब तक खूब दौरे न किये जाते रिआया शांत नहीं रह सकती। लेकिन मज़ा तो यह है कि राय साहब उतने दौरे वास्तव में नहीं करते, जितने कि आप अपने रोज़नामचे में लिखते हैं। उनके पड़ाव शहर से 50 मील पर होते हैं। खेमे वहाँ ही गड़े रहते हैं, कैंप के अमले वहाँ पड़े रहते हैं, और राय साहब घर पर मित्रों के साथ गपशप करते रहते हैं। पर किसकी मज़ाल है कि राय साहब की नेकनीयती पर संदेह कर सके? उनके सभ्य पुरुष होने में किसीको शंका नहीं हो सकती।

एक दिन मैं उनसे मिलने गया। उस समय वे अपने घसियारे दमड़ी को डाँट रहे थे। दमड़ी रात-दिन का नौकर था, लेकिन घर रोटी खाने जाया करता। उसका घर थोड़ी ही दूर पर गाँव में था। कल रात को किसी कारण से यहाँ न आ सका था, इसलिए डाँट पड़ रही थी।

रायसाहब-जब हम तुम्हें रात-दिन के लिए रखे हुए हैं, तो तुम घर क्यों रहे? कल के पैसे कट जाएँगे।

दमड़ी-हुजूर, एक मेहमान आ गये थे, इसीसे न आ सका।

रायसाहब-तो कल के पैसे उसी मेहमान से लो।

दमड़ी-सरकार, अब कभी ऐसी ख़ता न होगी।

रायसाहब-बक बक मत करो।

दमड़ी-हुजूर.........

रायसाहब-दो रुपये जुरमाना।

दमड़ी रोता हुआ चला गया। रोज़ा बखशाने आया था, नमाज़ गले पड़ गयी। दो रुपये जुरमाना ठुक गया। ख़ता यही थी कि बेचारा कसूर माफ़ कराना चाहता था।

यह एक रात को ग़ैरहाज़िर होने की सज़ा थी। बेचारा दिन-भर का काम कर चुका था, रात को यहाँ सोया न था, उसका यह दण्ड और घर बैठे भत्ते उड़ानेवालों को कोई नहीं पूछता, कोई दंड नहीं देता। दंड तो मिले, और ऐसे मिले कि ज़िन्दगी-भर याद रहे, पर पकड़ना तो मुश्किल है। दमड़ी भी होशियार होता, तो ज़रा रात रहे आकर कोठरी में सो जाता। फिर किसे ख़बर होती कि वह रात कहाँ रहा? पर ग़रीब इतना चंट न था।

दमड़ी के पास कुल छः बिस्वा ज़मीन थी। पर इतने ही प्राणियों का खर्च भी था। उसके दो लड़के, दो लड़कियाँ और स्त्री, सब खेती में लगे रहते थे, फिर भी पेट-भर की रोटियाँ मयस्सर नहीं होती थीं। इतनी ज़मीन क्या सोना उगल देती? अगर सब घर से निकलकर मज़दूरी करने लगते तो आराम से रह सकते थे, लेकिन मौरूसी किसान मज़दूर कहलाने का अपमान न सह सकता था। इस बदनामी से बचने के लिए दो बैल बाँध रखे थे। उसके वेतन का बड़ा भाग बैलों के दाने-चारे ही में उड़ जाता था। ये सारी तकलीफ़ें मंजूर थीं, पर खेती छोड़कर मज़दूर बन जाना मंजूर न था। किसान की जो प्रतिष्ठा है, वह कहीं मज़दूर की हो सकती है, चाहे रुपया रोज़ ही क्यों न कमाएँ किसानी के साथ मज़दूरी करना इतने अपमान की बात नहीं, द्वार पर बँधे हुए बैल उसकी मान-रक्षा किया करते हैं, पर बैलों को बेचकर फिर कहाँ मुँह दिखलाने को जगह रह सकती है?

एक दिन राय साहब दमड़ी को सरदी से काँपते देखकर बोले-कपड़े क्यों नहीं बनवाता, काँप क्यों रहा है?

दमड़ी-सरकार, पेट की रोटी तो पूरी ही नहीं पड़ती, कपड़े कहाँ से बनवाऊँ?

रायसाहब-बैलों को बेच क्यों नहीं डालता? सैकड़ों बार समझा चुका, लेकिन न जाने क्यों इतनी मोटी-सी बात तेरी समझ में नहीं आती।

दमड़ी-सरकार, बिरादरी में कहीं मुँह दिखाने लायक न रहूँगा। लड़की की सगाई न होने पाएगी, टाट बाहर कर दिया जाऊँगा।

रायसाहब-इन्हीं हिमाकतों से तो तुम लोगों की यह दुर्गति हो रही है। ऐसे आदमियों पर दया करना भी पाप है। (मेरी तरफ़ फिरकर) क्यों मुँशीजी, इस पागलपन का भी कोई इलाज है? जाड़ों मर रहे हैं, दरवाज़े पर बैल ज़रूर बँधेंगे।

मैंने कहा-जनाब, यह तो अपनी-अपनी समझ है।

रायसाहब-ऐसी समझ को दूर से सलाम कीजिये। मेरे यहाँ कई पुश्तों से जन्माष्टमी का उत्सव मनाया जाता था। कई हज़ार रुपयों पर पानी फिर जाता था। गाना होता था, दावतें होती थीं, रिश्तेदारों को न्योते दिये जाते थे, ग़रीबों को कपड़े बाँटे जाते थे। वालिद साहब के बाद पहले ही साल मैंने उत्सव बंद कर दिया। फ़ायदा क्या? मुफ़्त में चार-पाँच हज़ार की चपत पड़ती थी। सारे क़सबे में बावेला मचा, आवाज़ें कसी गयीं, किसीने नास्तिक कहा, किसीने ईसाई बताया, लेकिन यहाँ इन बातों की क्या परवाह? आखिर थोड़े दिनों में सारा कोलाहल शांत हो गया। अजी, बड़ी दिल्लगी थी। क़सबे में किसीके यहाँ शादी हो, लकड़ी मुझसे ले। पुश्तों से यह रस्म चली आती थी। वालिद तो दूसरों से दरख्त मोल लेकर इस रस्म को निभाते थे। थी हिमाकत या नहीं? मैंने फ़ौरन लकड़ी देना बंद कर दिया। इसपर भी लोग बहुत रोये-धोये, लेकिन दूसरों का रोना-धोना सुनूँ या अपना फ़ायदा देखूँ? लकड़ी से ही कम से कम पाँच सौ रुपये सालाना की बचत हो गयी। अब कोई भूलकर भी इन चीज़ों के लिए मुझे दिक करने नहीं आता।

मेरे दिल में फिर सवाल पैदा हुआ, दोनों में कौन सभ्य है, कुल-प्रतिष्ठा पर प्राण देनेवाला मूर्ख दमड़ी या धन पर कुल-मर्यादा की बलि देनेवाले राय रतनकिशोर?

राय साहब के इजलास में एक बड़े मार्के का मुक़द्दमा पेश था। शहर का एक रईस खून के मामले में फँस गया था। उसकी ज़मानत लेने के लिए राय साहब की खुशामदें होने लगीं। इज़्ज़त की बात थी। रईस साहब का हुक्म था कि चाहे रियायत बिक जाए, पर इस मुक़द्दमे से बेदाग निकल जाऊँ। डालियाँ लगायी गयीं, सिफ़ारिस पहुँचायी गयीं, पर राय साहब पर कोई असर न हुआ। रईस के आदमियों को प्रत्यक्ष रूप से रिश्वत की चर्चा करने की हिम्मत न पड़ती थी। आखिर जब कोई बस न चला, तो रईस की स्त्री ने राय साहब की स्त्री से मिलकर सौदा पटाने की ठानी।

रात के दस बजे थे। दोनों महिलाओं में बातें होने लगीं। बीस हज़ार की बातचीत थी। राय साहब की पत्नी तो इतनी खुश हुई कि उसी वक्त राय साहब के पास दौड़ी हुई आयीं और कहने लगीं-ले लो, ले लो! तुम न लोगे तो मैं ले लूँगी।

राय साहब ने कहा-इतनी बेसब्र न हो। वे तुम्हें अपने दिल में क्या समझेंगी? कुछ अपनी इज्ज़त का ख्याल भी है या नहीं? माना कि रकम बड़ी है, और इससे मैं एकबारगी तुम्हारी आये दिन की फ़रमाइशों से मुक्त हो जाऊँगा; लेकिन एक सिविलियन की इज्ज़त भी तो मामूली चीज़ नहीं। तुम्हें पहले बिगड़कर कहना चाहिए था कि मुझसे ऐसी बेहूदा बातचीत करनी हो तो यहाँ से चली जाओ, मैं अपने कानों से नहीं सुनना चाहती।

स्त्री-यह तो मैंने पहले ही किया, बिगड़कर खूब खरी-खोटी सुनायी। क्या इतना भी नहीं जानती? बेचारी मेरे पैरों पर सिर रखकर रोने लगी।

रायसाहब-यह कहा था कि राय साहब से कहूँगी, तो मुझे कच्चा ही चबा जाएँगे?

(यह कहते हुए राय साहब ने गद्गद होकर पत्नी को गले लगा लिया)

स्त्री-अजी, मैं न जाने ऐसी कितनी ही बातें कह चुकी; लेकिन किसी तरह टाले नहीं टलती। रो-रोकर जान दे रही है।

रायसाहब-उससे वादा तो नहीं कर आयी?

स्त्री-वादा? मैं तो रुपये लेकर संदूक में रख आयी। नोट थे।

रायसाहब-कितनी ज़बर्दस्त अहमक हो! न मालूम, ईश्वर तुम्हें कभी समझ भी देगा या नहीं।

स्त्री-अब क्या देगा, देना होता तो दे न दी होती?

रायसाहब-हाँ, मालूम तो ऐसा ही होता है। मुझसे कहा तक नहीं, और रुपये लेकर संदूक में दाखिल कर लिये। अगर किसी तरह बात खुल जाए तो कहीं का न रहूँ।

स्त्री- तो भई, सोच लो। अगर गड़बड़ हो तो मैं जाकर रुपये लौटा दूँ।

रायसाहब-फिर वही हिमाकत! अरे, अब तो जो कुछ होना था, हो चुका। ईश्वर पर भरोसा करके जमानत लेनी पड़ेगी। लेकिन तुम्हारी हिमाकत में शक नहीं। जानती हो, यह साँप के मुँह में उँगली डालना है? यह भी जानती हो कि मुझे ऐसी बातों से कितनी नफ़रत है? फिर भी बेसब्र हो जाती हो। अब की बार तुम्हारी हिमाकत से मेरा व्रत टूट रहा है। मैंने दिल में ठान लिया था कि अब इस मामले में हाथ न डालूँगा, लेकिन तुम्हारी हिमाकत के मारे जब मेरी कुछ चलने पाये?

स्त्री–मैं जाकर लौटाये देती हूँ।

रायसाहब–और मैं जाकर ज़हर खाये लेता हूँ।

इधर तो स्त्री-पुरुष में यह अभिनय हो रहा था, उधर दमड़ी उसी वक्त अपने गाँव के मुखिया के खेत में ज्वार काट रहा था। आज वह रात-भर की छुट्टी लेकर घर गया था। देखा, बैलों के लिए चारे का एक तिनका भी नहीं है। अभी वेतन मिलने में कई दिन की देर थी, मोल ले न सकता था। घरवालों ने दिन को कुछ घास छीलकर दिलायी तो थी, लेकिन ऊँट के मुँह में जीरा। उतनी घास से क्या हो सकता था? दोनों बैल भूखे खड़े थे। दमड़ी को देखते ही दोनों पूँछें खड़ी करके हुँकारने लगे। जब वह पास गया, तो दोनों उसकी हथेलियाँ चाटने लगे। बेचारा दमड़ी मन मसोसकर रह गया। सोचा, इस वक्त तो कुछ हो नहीं सकता, सबेरे किसीसे कुछ उधार लेकर चारा लाऊँगा।

लेकिन जब 11 बजे रात को उसकी आँखें खुलीं, तो देखा दोनों बैल अभी तक नाँद पर खड़े हैं। चाँदनी रात थी, दमड़ी को जान पड़ा कि दोनों उसकी ओर अपेक्षा और याचना की दृष्टि से देख रहे हैं। उनकी क्षुधा-वेदना देखकर उसकी आँखें सजल हो आयीं। किसान को अपने बैल अपने लड़कों की तरह प्यारे होते हैं। वह उन्हें पशु नहीं, अपने मित्र और सहायक समझता है। बैलों को भूखे खड़े देख नींद आँखों से भाग गयी। कुछ सोचता हुआ उठा। हँसिया निकाली और चारे की फ़िक्र में चला। गाँव के बाहर बाजरे और ज्वार के खेत थे। दमड़ी के हाथ काँपने लगे लेकिन बैलों की याद ने उसे उत्तेजित कर दिया। चाहता तो कई बोझ काट सकता था, लेकिन वह चोरी करते हुए भी चोर न था। उसने केवल उतना चारा काटा जितना बैलों को रात-भर के लिए काफ़ी था। सोचा, अगर किसीने देख भी लिया तो उससे कह दूँगा, बैल भूखे थे, इसलिए काट लिया। उसे विश्वास था कि थोड़े से चारे के लिए कोई मुझे पकड़ नहीं सकता। मैं कुछ बेचने के लिए तो काट नहीं रहा हूँ, फिर ऐसा निर्दयी कौन है, जो मुझे पकड़ ले? बहुत करेगा, अपना दाम ले लेगा। उसने बहुत सोचा। चारे का थोड़ा होना ही उसे चोरी के अपराध से बचाने को काफ़ी था। चोर उतना काटता जितना उससे उठ सकता, उसे किसीके फ़ायदे-नुकसान से क्या मतलब? गाँव के लोग दमड़ी को चारा लिये जाते देखकर बिगड़ते ज़रूर, पर कोई उसे चोरी के इलज़ाम में न फँसाता। लेकिन संयोग से हलके के थाने का सिपाही उधर आ निकला। वह पड़ोस के एक बनिये के यहाँ जुआ होने की खबर पाकर कुछ ऐंठने की टोह में आया था। दमड़ी को चारा सिर पर उठाते देखा तो संदेह हुआ। इतनी रात गये कौन चारा काटता है? हो न हो, कोई चोरी से काट रहा है। डाँटकर बोला-कौन चारा लिये जाता है? खड़ा रह!

दमड़ी ने चौंककर पीछे देखा, तो पुलिस का सिपाही। हाथ-पाँव फूल गये, कांपते हुए बोला-हुज़ूर, थोड़ा-सा ही काटा है, देख लीजिये।

सिपाही–थोड़ा काटा हो या बहुत, है तो चोरी। खेत किसका है?

दमड़ी–बलदेव महतो का।

सिपाही ने समझा था, शिकार फँसा, इससे कुछ ऐंठूँगा। लेकिन वहाँ क्या रखा था? पकड़कर गाँव में लाया और जब वहाँ भी कुछ हत्थे चढ़ता न दिखाई दिया तो थाने ले गया। थानेदार ने चालान कर लिया। मुक़द्दमा राय साहब ही के इजलास में पेश किया गया।

राय साहब ने दमड़ी को फँसे हुए देखा तो हमदर्दी के बदले कठोरता से काम लिया। बोले–यह मेरी बदनामी की बात है। तेरा क्या बिगड़ा? साल-छः महीने की सज़ा हो जाएगी। शर्मिन्दा तो मुझे होना पड़ रहा है। लोग तो यही कहते होंगे कि राय साहब के आदमी ऐसे बदमाश और चोर हैं। तू मेरा नौकर न होता, तो मैं हल्की सज़ा देता, लेकिन तू मेरा नौकर है, इसलिए कड़ी सजा दूँगा। मैं यह नहीं सुन सकता कि राय साहब ने अपने नौकर के साथ रिआयत की।

यह कहकर राय साहब ने दमड़ी को छः महीने की सख़्त क़ैद का हुकुम सुना दिया। उसी दिन उन्होंने उस खून के मुकद्दमे में ज़मानत ले ली।

मैंने दोनों वृत्तांत सुने और मेरे दिल में यह ख्याल और भी पक्का हो गया कि सभ्यता केवल हुनर के साथ ऐब करने का नाम है। आप बुरे से बुरे काम करें, लेकिन अगर आप उसपर पर्दा डाल सकते हैं, तो आप सभ्य हैं, सज्जन हैं, जेंटिलमैन हैं। अगर आपमें यह सिफ़त नहीं, तो आप असभ्य हैं, गँवार हैं, बदमाश हैं। यही सभ्यता का रहस्य है।

कठिन शब्दार्थ

नज़ाकत	-	सुकुमार या नाजुक होने की अवस्था	बिस्वा	-	ज़मीन की एक नाप-एक बीघे का (3.25 वर्गगज) बीसवाँ भाग
ख़ता	-	अपराध			
सभ्यता	-	अच्छा संस्कार	इने-गिने	-	चुने-चुनाए
सहदय	-	अच्छा हदय	जुरमाना	-	धन-दंड
मयस्सर	-	सुलभ /प्राप्त	खिताब	-	उपाधि
ओहदेदार	-	अधिकारी	बिरादरी	-	भाई-बन्धु और अपने जातिवाले
वालिद	-	पिता			
खुशामद	-	चापलूसी/ झूठी प्रशंसा	खरी-खोटी सुनाना	-	बुरा-भला कहना
हाथ-पाँव फूलना	-	डर जाना			

अभ्यास

I. हिंदी में अर्थ लिखिए।

वृत्तान्त	-	कहानी	हुक्म	-	आज्ञा
मुक़द्दमा	-	मामला, दावा	शर्मिंदा	-	लज्जा
कड़ी सज़ा	-	कठोर दंड	रिआयत	-	छूट, विशेष सुविधा

II. वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

मुक़द्दमा - अदालत में मुक़द्दमा चल रहा है।

कड़ी सज़ा - चोरी करने वालों को कड़ी सज़ा देनी चाहिए।

दिखाई देना - दुनिया में सब लोग सभ्य दिखाई देते हैं।

चौंकना - पुलिस को देखकर दमड़ी चौंक गया।

याचना करना - हम भगवान से धन के लिए याचना करते हैं।

III. गद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

'राय साहब ने दमड़ी को फँसे हुए देखा तो हमदर्दी के बदले कठोरता से काम लिया। बोले–यह मेरी बदनामी की बात है। तेरा क्या बिगड़ा? साल-छः महीने की सज़ा हो जाएगी। शर्मिन्दा तो मुझे होना पड़ रहा है। लोग तो यही कहते होंगे कि राय साहब के आदमी ऐसे बदमाश और चोर हैं। तू मेरा नौकर न होता, तो मैं हल्की सज़ा देता, लेकिन तू मेरा नौकर है, इसलिए कड़ी सजा दूँगा। मैं यह नहीं सुन सकता कि राय साहब ने अपने नौकर के साथ रिआयत की। यह कहकर राय साहब ने दमड़ी को छः महीने की सख्त क़ैद का हुकुम सुना दिया। उसी दिन उन्होंने उस खून के मुकद्दमे में ज़मानत ले ली।"

1. राय साहब ने कठोरता से क्या कहा?

   राय साहब ने कठोरता से कहा, यह मेरी बदनामी की बात है। तेरा क्या बिगड़ा? छे महीने की सज़ा हो जाएगी।

2. राय साहब ने दमडी को क्या सज़ा दी?

   राय साहब ने दमड़ी को छे महीने की सख्त कैद का हुकुम सुना दिया।

3. किसने, कब खून के मुकद्दमे में जमानत ले ली?

   जिस दिन राय साहब ने दमड़ी को सज़ा दी उसी दिन उन्होंने खून के मुक़द्दमे में जमानत ले ली।

IV. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए।

1. लेखक के मन में कौन-सा प्रश्न उठ रहा था?

   लेखक के मन में यह प्रश्न हमेशा उठ रहा था कि सभ्य कौन है और असभ्य कौन है? सभ्यता का लक्षण क्या है?

2. राय साहब ने अपनी नेकनीयती कैसे साबित की?

   राय साहब रिश्वत खुल्लम खुल्ला नहीं लेते थे। लेकिन वे अपना भत्ता बढ़ाने के लिए बहुत दौरे पर रहते हैं।

V. "सभ्यता का रहस्य" पाठ का सारांश लिखिए।

'सभ्यता का रहस्य' का लेखक उपन्यास सम्राट प्रेमचंद हैं। लेखक के मन में प्रश्न उठता है कि 'सभ्य कौन है और असभ्य कौन है? सभ्यता का लक्षण क्या है? इन प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए वे बहुत चिंतन करते हैं। क्या किसी को बाहर से देखकर उनको सभ्य या असभ्य कह सकते हैं? इस संदर्भ में लेखक 'राय रतनकिशोर' नामक आदमी की कहानी बताते हैं। राय किशोर बाहर से अत्यंत सभ्य दिखाई पड़ते हैं। वे रिश्वत तो नहीं लेते। लेकिन वे अधिक दौरे पर जाते हैं और यात्रा-भत्ते के रूप में धन कमाते हैं।

उनके घर में दमड़ी नामक एक नौकर काम कर रहा था। एक रात, दमड़ी के घर में कुछ मेहमान आ गए, इसलिए वह रात काम पर नहीं आ सका। न आने के लिए राय साहब ने दमड़ी पर दो रुपये का जुर्माना लगाया।

दमड़ी के पास कुछ ज़मीन थी। ज़मीन से जो मिलता था, वह उसके परिवार के पोषण के लिए पर्याप्त नहीं था। उसके पास दो बैल थे। वह चाहे तो मज़दूरी करके पैसा कमा सकता था, लेकिन किसान के लिए किसी के यहाँ जाकर मज़दूरी करना अपमान का विषय था; इसलिए उसने मज़दूरी नहीं की। बैल रखना किसान के लिए गौरव का विषय था, इसलिए अनेक परेशानियों के बीच में भी वह बैलों की रक्षा करता था।

इधर गरीब किसान, परम्पराओं से चली आ रही बातों का अनुपालन कितनी कठिनाइयों के बीच में भी निभाता है; राय साहब के बाप-दादा आदि ने दान-धर्म, पूजा पाठ आदि में मन लगाकर खर्च करते थे; लेकिन राय साहब ने, अपने पास बहुत धन होने पर भी दान-धर्म, पूजा पाठ आदि सब कुछ छोड़ दिया। तो लेखक सोचते हैं कि अनेक परेशानियों के बीच में भी अपनी परंपरा को निभानेवाला दमड़ी सभ्य है, या राय साहब सभ्य है ?

शहर में एक रईस खून के मामले में फँस गया। उसकी जमानत लेने के लिए राय साहब की खुशामदें होने लगीं। राय साहब को प्रत्यक्ष रूप में रिश्वत लेने के लिए डर था। रईस की पत्नी राय साहब की पत्नी से मिलती है और मिन्नतें करती हैं। उनकी पत्नी रईस की पत्नी से रुपये ले लेती है और राय साहब के पास आकर बताती है। राय साहब उसे बहुत डाँटते हैं, लेकिन रुपये वापस देने के लिए नहीं कहते।

इस बीच एक दिन दमड़ी, अपने बैल के लिए, रातों रात किसी के खेत में जाकर चारा काटकर ले आता है। चारा लेकर आते समय वह सिपाही द्वारा पकड़ा जाता है। मामला राय साहब के सम्मुख आता है। राय साहब ने कठोरता से कहा, "यह तो मेरी बदनामी की बात है। तेरा क्या बिगड़ा? छे महीने की सज़ा हो जाएगी" और राय साहब ने दमड़ी को छे महीने की सख्त कैद का हुकुम सुना दिया। उसी दिन रईस की मुकद्दमे में खून के लिए जमानत मिल जाती है।

अंत में लेखक कहते हैं, आप बुरे से बुरे काम करें, लेकिन उनपर पर्दा डाल सकते तो आप सभ्य हैं, अगर नहीं डाल सकते तो आप असभ्य और बदमाश है।

2. रुपया

– पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'

मैं लड़कों के लड़कपन का खिलौना हूँ, मिठाई हूँ। मैं जवानों की जवानी की जान हूँ, मस्ती हूँ। मैं बूढ़ों की बुढौती की लकड़ी हूँ,सहारा हूँ। मैं रुपया हूँ।

मनुष्य मेरा गुलाम है। मैं उसे हज़ार नाच नचा सकता हूँ, नचा चुका हूँ, नचा रहा हूँ। दुनिया मुझसे दबती है। मैं उसे उलट सकता हूँ, उलट चुका हूँ, उलट रहा हूँ। प्रकृति मेरी वशवर्तिनी है। मैं उसे बनाता हूँ, बिगाड़ता हूँ, मोड़ता हूँ। मैं रुपया हूँ।

इस विशाल विश्व में यदि कोई ईश्वर हो तो मैं हूँ, धर्म हो तो मैं हूँ, प्रेम हो तो मैं हूँ। मैं सत्य हूँ, मैं शिव हूँ, सुन्दर हूँ। मैं सत् हूँ, मैं चित् हूँ, मैं आनन्द हूँ। परलोक मैं हूँ, लोक मैं हूँ, हर्ष मैं हूँ, क्षमता मैं हूँ, ममता मैं हूँ। मैं रुपया हूँ।

मेरी झनझनाहट में जो अलौकिक मधुरिमा है, वह वीणापाणि की वीणा में कहाँ? भगवान् लक्ष्मीपति के पाँचजन्य शंख में कहाँ? कोकिल-कल-काकली में कहाँ? कामिनी के कोमल कण्ठ में कहाँ? मुरलीधर की मुरली में कहाँ? डमरूवाले के डमरू में कहाँ? वहाँ कहाँ? यहाँ कहाँ? मैं सप्त स्वरों से ऊपर अष्टम स्वर हूँ, परम मधुर हूँ। मैं रुपया हूँ।

गीता के गायको, चण्डी-सप्तशती के पाठको, भागवत् के भक्तो, सत्यनारायण-कथा के प्रेमियो, रामायण के अनुरागियो, महाभारत के माननेवालो-मेरा गीत गाओ, मेरा पाठ पढ़ो, मेरे भक्त

बनो, मेरी कथा सुनो, मुझसे अनुराग करो। मुझे मानो, मेरी शरण में आओ। तारन-तरन मैं हूँ, धवल-हरण मैं हूँ, मंगलकरण मैं हूँ, पुण्याचरण मैं हूँ। मैं रुपया हूँ।

मुझको आँख दिखाकर, मुझे ठुकराकर, मुझसे विद्रोह कर, कोई बच सकता है? कोई नहीं।

ज़मींदार मैं हूँ, राजा मैं हूँ, बादशाह मैं हूँ, बादशाहों का बादशाह मैं हूँ, मैं ईश्वर हूँ। मैं रुपया हूँ।

लंका सीता की रुष्टि-तुष्टि से नहीं, बल्कि मेरी रुष्टि-तुष्टि से जली थी; मैं विभीषण पर प्रसन्न था। कौरव द्रौपदी के कोप से नहीं, मेरे कोप से नष्ट हुए थे; मैं पांडवों पर प्रसन्न था। जर्मनी ब्रिटेन या अमेरिका की चालाकी से नहीं, मेरी धूर्तता से पराजित हुआ; मैं ब्रिटेन पर प्रसन्न था।

ठाकुरजी बोलते नहीं, मैं बोलता हूँ- उनसे बड़ा हूँ। ठाकुरजी चलते नहीं, मैं चलता हूँ - उनसे मेरी अधिक साख है। देवताओं में यह आकर्षण नहीं जो मुझमें है। ईश्वर मे वह तेज़ नहीं, वह शक्ति नहीं, जो मुझमें है। यह युग तर्क का है, उदाहरण का है, प्रत्यक्षवाद का है, स्वयं प्रभुता का है। मैं प्रत्यक्ष हूँ, सद्यःफल का दानी हूँ, स्वयं प्रभु हूँ, आकर्षक हूँ, ईश्वर हूँ, ईश्वर से बड़ा हूँ। मैं रुपया हूँ।

मुझसे वरदान लेकर पाप करो, तुम देवताओं से पूजे जाओगे। मुझसे वरदान लेकर एक-दो नहीं, सात खून करो, साफ़ बच जाओगे। साम्राज्य को साम्राज्य से भिड़ा दो। मनुष्यता की बढ़ी हुई खेती को बेरहमी से कटवा डालो-जला डालो। स्त्रियों की मर्यादा को पैसों में, दो सेर के हिसाब से, दिन में दस बार खरीदो और बेच डालो। संसार को विधवाओं, बच्चों, बूढ़ों और अपाहिजों की हाय से भरा दो, भूकम्प उठा दो, प्रलय करा दो, जो चाहे सो कर दो, मगर मुझसे वरदान लेकर। मैं सर्वशक्तिमान हूँ। मैं रुपया हूँ।

"**सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।**" अर्थात्

सबको छोड़कर मेरी ही शरण में आओ।

कठिन शब्दार्थ

गुलाम	-	सेवक, दास	हर्ष	-	खुशी, प्रसन्नता
कोमल	-	मृदुल, मुलायम	विशाल	-	विस्तृत, बड़ा
वीणापाणि	-	सरस्वती	मुरलीधर	-	श्रीकृष्ण

अष्टम	-	आठवाँ	बादशाह	-	सम्राट, चक्रवर्ती
कोप	-	क्रोध, गुस्सा	स्वयं	-	खुद
खून	-	हत्या	संसार	-	दुनिया, जहाँ
वशवर्तिनी	-	अधीन रहनेवाली			

अभ्यास

I. हिंदी में अर्थ लिखिए।

सर्वस्व	-	सारा, सबकुछ	लड़कपन	-	बालपन
जवानी	-	यौवन	उल्लास	-	हर्ष
सत्य	-	सच्चाई	जगत्	-	संसार
पराजय	-	हार	कोमल	-	मुलायम
अपाहिज	-	अंगहीन, विकलांग	खून	-	रक्त, हत्या

II. वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

गुलाम	-	हम किसी के गुलाम नहीं हैं।
ममता	-	माता की ममता अतुलनीय है।
वरदान	-	कला-कौशल ईश्वर का वरदान है।
पराजित	-	अहिंसा के सामने हिंसा पराजित होती आयी है।
आकर्षक	-	मोर के पंख बहुत आकर्षक होते हैं।

III. गद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

"मेरी झनझनाहट में जो अलौकिक मधुरिमा है, वह वीणापाणि की वीणा में कहाँ? भगवान् लक्ष्मीपति के पाँचजन्य शंख में कहाँ? कोकिल-कल-काकली में कहाँ? कामिनी के कोमल कण्ठ में कहाँ? मुरलीधर की मुरली में कहाँ? डमरूवाले के डमरू में कहाँ? वहाँ कहाँ? यहाँ कहाँ? मैं सप्त स्वरों से ऊपर अष्टम स्वर हूँ, परम मधुर हूँ। मैं रुपया हूँ।"

1. रुपये की झनझनाहट में क्या है?
   रुपये की झनझनाहट में अलौकिक मधुरिमा है।
2. रुपया अपने को क्या कहता है?
   रुपया अपने को अष्टम स्वर कहता है।
3. रुपये में जो मधुरिमा है वह कहाँ-कहाँ नहीं मिलती?
   रुपये में जो मधुरिमा है वह वीणापाणि की वीणा में, पाँचजन्य शंख में, कोकिल की आवाज़ में, मुरलीधर की मुरली में और डमरू में नहीं मिल पाती है।

IV. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए।

1. "रुपया" पाठ के लेखक कौन हैं?

   रुपया पाठ के लेखक श्री पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' हैं।

2. मनुष्य किसे जीवन के लड़कपन का खिलौना मानते हैं?

   रुपये को मनुष्य जीवन के लड़कपन का खिलौना मानते हैं।

3. "रुपया" पाठ से हमें क्या सीख मिलती है?

   रुपया पाठ से यही सीख मिलती है कि इस संसार में व्यक्ति ईश्वर से बढ़कर रुपये को ही सर्वशक्तिमान मानता है।

V. "रुपया" पाठ का सारांश लिखिए।

आज का मनुष्य रुपये को ही सर्वस्व मानता है। मनुष्य भौतिक सुख से प्रभावित है। वह रुपये को अपने जीवन के लड़कपन का खिलौना, जवानी का उल्लास और बुढ़ापे की लकड़ी मानता है।

आदमी रुपये का गुलाम बन गया है। वह प्रकृति को भी रुपये से ललकारता है। रुपया ही आज के मनुष्य के लिए ईश्वर, सत्य, शिव, सुंदर और परलोक बन गया है। पैसे की झंझनाहट में उसको अष्टम स्वर सुनाई पड़ता है। ईश्वर के भक्तों के लिए भी रुपया मंगलकरण और पुण्याचरण बन गया है।

मनुष्य की धारणा है कि पैसे का सहारा लेकर कोई भी पाप कर्म कर सकता है। उसे कोई हिला नहीं सकता। वह रुपये को ही सर्वशक्तिमान समझता है। मनुष्य रुपये के वरदान को ईश्वर के वरदान से श्रेष्ठ मानता है।

पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' ने आज के मनुष्य के लालच और लोलुपता पर प्रकाश डाला है। वे कहते हैं कि मनुष्य रुपये के पीछे मानवता को खोकर पाशविक गुण अपनाता जा रहा है।

पाठेतर कार्य

"रुपये" के महत्व के बारे में आपका क्या विचार है? विस्तार से लिखिए।

भाषा प्रयोग सीखिए

गानेवाला	-	गायक	पढ़नेवाला	-	पाठक
चलानेवाला	-	चालक	लिखनेवाला	-	लेखक

3. दक्षिण अफ्रिका में गाँधीजी

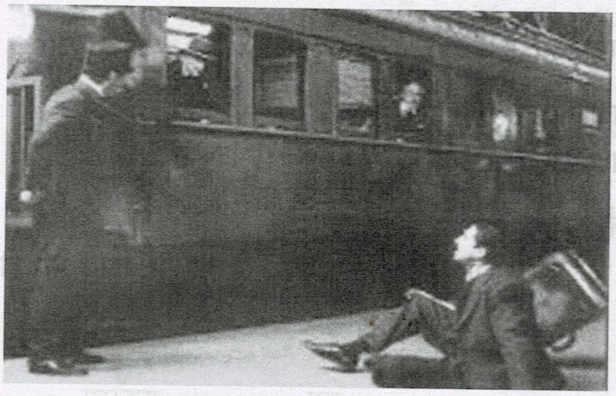

1893 में गाँधीजी गुजरात के राजकोट में वकालत की प्रैक्टिस किया करते थे। गाँधीजी को दक्षिण अफ्रिका के सेठ अब्दुल्ला ने एक मुकद्दमा लड़ने के लिए बुलाया था।

गाँधीजी जहाज पर सवार होकर दक्षिण अफ्रिका के डरबन पहुँचे। वहाँ से 7 जून 1893 को वे प्रिटोरिया के लिए रवाना हुए। गाँधीजी के पास प्रथम श्रेणी का टिकट था। लेकिन जब ट्रेन पीटरमारिस्ट्सबर्ग पहुँचनेवाली थी तो उन्हें तीसरी श्रेणीवाले डिब्बे में जाने के लिए कहा गया। लेकिन गाँधीजी ने जाने से इनकार किया तो टी.टी ने उन्हें जबरदस्ती से पीटरमारिस्ट्सबर्ग स्टेशन पर उतार दिया।

कड़कड़ाती ठंड में बैरिस्टर गाँधी पीटरमारिस्ट्सबर्ग स्टेशन के वेटिंग रूम में पहुँचे। वहाँ सारी रात वे यही सोचते रहे कि क्या उन्हें झुक जाना चाहिए और भारत वापस लौट जाना चाहिए या फिर भारतीयों पर हो रहे अन्याय के खिलाफ़ संघर्ष करना चाहिए। इसी सोच ने सत्याग्रह का जन्म दिया। सत्याग्रह का अर्थ है अन्याय के खिलाफ़ शांतिपूर्वक लड़ाई लड़ना।

गाँधी तब न महात्मा थे और न ही राष्ट्रपिता। वे तब सिर्फ एक बैरिस्टर थे। लेकिन ट्रेन में हुई इस घटना ने उन्हें महात्मा बनने का रास्ता खोल दिया। 7 जून 1893 की उस रात दक्षिण अफ्रिका के पीटरमारिस्ट्सबर्ग में गाँधी के सत्याग्रह की नींव पड़ चुकी थी। अफ्रिका के कई होटलों में गाँधी की एंट्री रोक दी गई। ये सारी घटनाएँ गाँधीजी की जिंदगी में नये मोड़ लेकर आईं। भारतीयों पर अन्याय को देखते हुए गाँधीजी ने अंग्रेज़ी साम्राज्य में रहकर अपने देशवासियों के सम्मान के लिए लड़ाई लड़ने का निर्णय लिया। 1893 से लेकर 1914 तक महात्मा गाँधीजी दक्षिण अफ्रिका में नागरिकों के अधिकारों के लिए आंदोलन करते रहे। 1915 में गाँधीजी भारत लौटे और फिर आज़ादी का आंदोलन चलाया। इसी आंदोलन ने हमें अंग्रेज़ों से आज़ाद कराया। दक्षिण अफ्रिका गाँधीजी के जीवन का एक महत्वपूर्ण पड़ाव साबित हुआ। यहाँ उन्हें कई तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। परिणामतः इन अनुभवों ने उनके जीवन को पूरी तरह बदल दिया।

कठिन शब्दार्थ

वकालत	वकील का काम	बैरिस्टर	वकील
के खिलाफ़	के विरुद्ध	झुक जाना	हार मानना
लौट जाना	वापस जाना		

अभ्यास

I. हिंदी में अर्थ लिखिए।

इनकार करना	मना करना, नकारना	जबरदस्ती	मज़बूरन
खिलाफ़	विरुद्ध	झुकना	विनित होना, हार मानना
संघर्ष	टकराव, लड़ाई	नींव	मूल, बुनियाद, आधार
अधिकार	हक	आज़ाद	स्वतंत्र
साबित	प्रमाणित		

II. वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

लड़ना - गाँधीजी ने अपने देशवासियों की आज़ादी के लिए अहिंसा के पथ पर लड़ने का निर्णय किया।

इनकार करना - गाँधीजी ने तीसरी श्रेणीवाले डिब्बे में सफ़र करने से इनकार किया।

फैसला - अशोक ने कलिंग युद्ध के बाद अहिंसा का पालन करने का फैसला किया।

सामना करना - हर मनुष्य को जीवन में सुख-दुख का सामना करना पड़ता है।

साबित - गाँधीजी ने साबित किया कि सत्य ही ईश्वर है।

III. गद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

"गाँधीजी जहाज़ पर सवार होकर दक्षिण अफ्रिका के डरबन पहुँचे। यहाँ 7 जून 1893 को उन्होंने प्रीटोरिया के लिए रवाना हुए। गाँधीजी के पास पहली श्रेणी का टिकट था। लेकिन जब ट्रेन पीटरमारिस्ट्सबर्ग पहुँचने वाली थी तो उन्हें तीसरी श्रेणीवाले डिब्बे में जाने के लिए कहा गया। लेकिन गाँधीजी ने जाने से इनकार किया तो उन्हें जबरदस्ती से पीटरमारिस्ट्सबर्ग स्टेशन पर उतार दिया गया।"

1. गाँधीजी कैसे डरबन पहुँचे?
   गाँधीजी जहाज़ से डरबन पहुँचे।
2. गाँधीजी के पास कौन-सी श्रेणी का टिकट था?
   गाँधीजी के पास पहली श्रेणी का टिकट था।
3. गाँधीजी को कौन-से डिब्बे में जाने के लिए कहा गया?
   गाँधीजी को तीसरी श्रेणीवाले डिब्बे में जाने के लिए कहा गया।

IV. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए।

1. गाँधीजी दक्षिण अफ्रिका कब गये?
   गाँधीजी सन् 1893 को दक्षिण अफ्रिका गये।

2. गाँधीजी को रेल से किस स्टेशन पर उतार दिया गया था?
   गाँधीजी को रेल से पीटर्समारिट्सबर्ग स्टेशन पर उतार दिया गया था।

3. गाँधीजी कब से कब तक दक्षिण अफ्रिका में रहे?
   गाँधीजी सन् 1893 से सन् 1914 तक दक्षिण अफ्रिका में रहे।

V. 'दक्षिण अफ्रिका में गाँधीजी' पाठ का सारांश लिखिए।

1893 में दक्षिण अफ्रिका के सेठ अब्दुल्ला ने मुकद्दमा लड़ने के लिए गाँधीजी को वहाँ बुलाया। जहाज़ से गाँधीजी डरबन पहुँचे। गाँधीजी ने पहली श्रेणी का टिकट लेकर प्रीटोरिया की ट्रेन पकड़ी। बीच में टी.टी ने उन्हें तीसरी श्रेणी के डिब्बे में जाने के लिए कहा। इनकार करने पर जबरदस्ती से उन्हें पीटरमारिट्सबर्ग स्टेशन पर उतार दिया गया।

कड़कड़ाती ठंड में गाँधीजी स्टेशन के वेटिंग रूम में पहुँचे। उन्होंने निश्चय किया कि भारतीयों पर हो रहे इस अन्याय के खिलाफ़ संघर्ष करना चाहिए। इसी घटना ने सत्याग्रह का जन्म दिया तथा गाँधीजी को महात्मा बनाया।

दक्षिण आफ्रिका में गाँधीजी ने अंग्रेज़ी साम्राज्य में अपने देशवासियों के सम्मान के लिए सन् 1893 से 1914 तक लड़ते रहे। सन् 1915 को वे भारत लौटे। दक्षिण अफ्रिका में गाँधीजी ने 'सत्याग्रह' अस्त्र का प्रयोग करके जीत हासिल की। उसी अस्त्र का प्रयोग भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए भी उन्होंने किया।

पाठेतर कार्य

दक्षिण अफ्रिका में गाँधीजी के अनुभवों को अपने शब्दों में लिखिए।

भाषा प्रयोग सीखिए

लड़ना - लड़ाई

ठंड - ठंडी

4. कर्मवीर कामराज

– बी. लक्ष्मी अम्माल

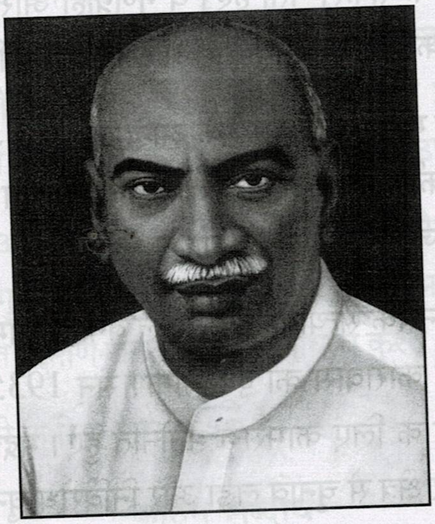

कामराज न केवल तमिलनाडु के प्रिय नेता थे, बल्कि समूचे राष्ट्र के एक वरिष्ठ नेता भी थे। उनका जन्म 1903 जुलाई 15 को तमिलनाडु राज्य के विरुदुनगर शहर में हुआ था।

बाल्यावस्था

कामराज जब छः साल के लड़के थे, तब उनके पिता की मृत्यु हो गयी। निचले मध्यवर्ग के व्यापारी का घराना था। अतः बालक कामराज को स्कूल की शिक्षा छोड़कर घर संभालना पड़ा। उसके लिए मामा की, कपड़े की दूकान पर "सेल्समेन" का काम करना पड़ा। उन दिनों आज़ादी का देशव्यापी आन्दोलन ज़ोरों पर था। आज़ादी की पुकार कामराज को आकृष्ट कर रही थी। एक दिन काम-धंधे का बंधन तोड़कर वे देश-सेवा के लिए निकल पड़े। उन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन को सफल बनाने के लिए तन-मन से अपने को समर्पित कर दिया।

देशभक्त कामराज

देश की स्वाधीनता के लिए अपनी स्वतंत्रता, देश के हित के लिए अपना सांसारिक आकर्षण त्याग देना कोई मामूली बात नहीं है। वे निष्ठावान सेवक थे, उन्होंने आजीवन ब्रह्मचारी रहकर राष्ट्रसेवा करने का व्रत निभाया। वे विचार के धनी थे। उनकी खूबी यह भी थी कि वे जो भी निर्णय करते, उसके बारे में पहले ही विचार-विमर्श कर लेते थे। वे स्वतः सिद्ध नेता थे; नेतृत्व शक्ति उनका जन्मजात गुण था। राजनैतिक जीवन में उनका अपना विशिष्ट आदर्श तत्व था। वे बड़े

जागरूक व्यक्ति थे। वे नेक, न्यायी और दक्ष व्यक्ति थे। इन तीनों ने उनको बार-बार उन्नति के पथ पर अग्रसर किया। उन्होंने महात्मा गाँधीजी के असहयोग आन्दोलन में एक साधारण स्वयंसेवक के रूप में भाग लिया और राष्ट्र के सफल नेता हुए। वे गुणग्राही और अवगुणों को भी ताड़ लेनेवाले पारदर्शी व्यक्ति थे। वे नेता होकर भी स्वयंसेवक थे और स्वयंसेवकों के दलनायक भी थे।

सन् 1925 में वैक्कम में "अछूतोध्दार" के आन्दोलन में वे अग्रणी रहे। संयोग से उस समय गाँधीजी केरल पधारे थे। उनकी दस्तांदाजी से बीच-बचाव हो गया और आन्दोलन समाप्त हुआ। कामराज के लिए यह पहली राजनैतिक सफलता थी।

गाँधीजी के शुरू किये नमक सत्याग्रह को सफल बनाना कामराज का अगला कार्यक्रम था। उन्होंने सत्याग्रह में भाग लेकर कारावास का दंड भोगा। सन् 1935 में कांग्रेस के अध्यक्ष-पद के लिए सत्यमूर्ति और सचिव पद के लिए कामराज मनोनीत हुए। मद्रास असेंबली(विधान सभा) के चुनाव में कामराज ने विरुदुनगर क्षेत्र से चुनाव लड़ा और निर्विरोध चुने गये। सन् 1940 में कामराज ने अपने स्वयंसेवक एवं प्रदेश संगठक के स्तर से ऊपर उठकर तमिलनाडु कांग्रेस के अध्यक्ष पद के लिए अपने को तैयार कर लिया। इसमें कामराज की जीत हुई। यह पद मद्रास के मुख्य मंत्री बनने तक बरकरार रहा।

मुख्य मंत्री कामराज

सन् 1954 में अप्रैल 13 को कामराज मुख्य मंत्री बने। मुख्य मंत्री के रूप में उन्होंने जो कुछ सेवाएँ राज्य की समुन्नति के लिए कीं, वे अविस्मरणीय हैं। सन् 1957 के दूसरे तथा 1962 के तीसरे आम चुनावों में तमिलनाडु में कांग्रेस की जो जीत हुई, उसके मूल सूत्रधारी कर्ताधर्ता यही कर्मवीर कामराज थे।

कामराज ने अपने दीर्घ सेवाकाल में तमिलनाडु की उन्नति के लिए योजनाएँ बनाकर उन्हें पूरी कीं। आपने गाँव एवं शहरों में सैकड़ों नये स्कूल खुलवाये। स्कूल के बच्चों को मध्याह्न-भोजन मुफ़्त में दिलाने की व्यवस्था की। गाँवों के लिए बिजली की सुविधा करायी और कई नये-नये कुटीर-उद्योगों तथा बड़े-बड़े कल-कारखानों की स्थापना करायीं। हाई-स्कूल तक निःशुल्क शिक्षा देने की व्यवस्था की। कामराज ने तमिलनाडु भर में खेती-बारी की वृद्धि के लिए कई बाँध बनवाये।

कांग्रेस के अध्यक्ष कामराज

सन् 1963, अक्तूबर 2 को कामराज मुख्य मंत्री पद से अलग हुए। नेहरूजी ने कांग्रेस महासभा का अध्यक्ष-पद कामराज को सौंपा। उस समय कामराज ने कहा कि आगे से भारत समाजवादी गणतंत्र की प्रणाली में प्रगति-पथ पर नयी सफलताएँ प्राप्त करेगा। यह समाजवादी गणतंत्र की प्रक्रिया कामराज की अद्भुत योजना पद्धति की अनूठी उपलब्धि है।

गाँधीजी की स्वच्छता और सादगी, नेहरूजी का औदार्य और त्याग तथा सरदार पटेल की दृढता और दिलेरी आदि सभी गुणों से संपन्न कामराज का जीवन अत्यन्त सादा, सरल और संयमी था। वे भारत की अस्सी प्रतिशत ग्रामीण जनता का प्रतिनिधित्व करते थे।

उनका जीवन नयी पीढ़ी के लिए एक आदर्श है।

कठिन शब्दार्थ

आज़ादी	- स्वतंत्रता	आकृष्ट करना	- अपनी ओर खींच लेना, आकर्षित करना
आजीवन	- जीवन भर	खूबी	- महानता/अच्छी बात
सार्वजनिक	- सब लोगों के लिए/आम	दक्ष	- समर्थ, सक्षम
अग्रसर करना	- आगे बढाना	मनोनीत करना	- चुनना, चयन करना
सूत्रधारी	- संचालन करनेवाला	कर्ताधर्ता	- जिससे सारा कार्य चलता हो
निर्विरोध	- जिसका विरोध न हो, एकमत से	दस्तांदाजी	- हस्तक्षेप।

अभ्यास

I. हिंदी में शब्दार्थ लिखिए।

स्वाधीनता	- स्वतन्त्रता	निष्ठावान	- लगन के साथ काम करनेवाला
स्वयं सेवक	- स्वेच्छा से काम करनेवाला / सेवा करनेवाला	पारदर्शी	- दूरदर्शी, बहुत दूर तक सोचनेवाला, चतुर, बुद्धिमान
अग्रणी	- पहला, आगे रहनेवाले		

II. वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

सत्याग्रह - कामराज ने सत्याग्रह आंदोलन में भाग लिया।

जीत - चुनाव में कामराज की जीत हुई।

मनोनीत होना - सन् 1935 में कांग्रेस के सचिव पद के लिए कामराज मनोनीत हुए।

अविस्मरणीय - गांधीजी के जीवन में हरिश्चंद्र नाटक एक अविस्मरणीय घटना है।

III. गद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

सन् 1954 में कामराज मुख्य मंत्री बने। मुख्य मंत्री के रूप में उन्होंने जो कुछ सेवाएँ राज्य की समुन्नति के लिए कीं, वे अविस्मरणीय हैं। सन् 1957 के दूसरे तथा 1962 के तीसरे आम चुनावों में तमिलनाडु में कांग्रेस की जो जीत हुई, उसके मूल सूत्रधारी कर्ताधर्ता यही कर्मवीर कामराज थे। कामराज ने अपने दीर्घ सेवाकाल में तमिलनाडु की उन्नति के लिए योजनाएँ बनाकर उन्हें पूरी कीं। आपने गाँवों-शहरों में सैकड़ों नये स्कूल खुलवाये। स्कूल के बच्चों को मध्याह्न-भोजन मुफ़्त में दिलाने की व्यवस्था की। गाँवों के लिए बिजली की सुविधा करायी और कई नये-नये कुटीर-उद्योगों तथा बड़े कल-कारखानों की स्थापना करायी। हाई-स्कूल तक निःशुल्क शिक्षा देने की व्यवस्था की। कामराज ने तमिलनाडु भर में खेती-बारी की वृद्धि के लिए कई बाँध बनवाये।

1. कामराज कब मुख्य मंत्री बने?

   सन् 1954 में कामराज मुख्य मंत्री बने।

2. सन् 1957 तथा 1962 के आम चुनावों में तमिलनाडु में किस पार्टी की जीत हुई है?

   सन् 1957 और 1962 के आम चुनावों में तमिलनाडु में कांग्रेस की जीत हुई।

3. कामराज ने शिक्षा के क्षेत्र में क्या क्या सेवाएँ कीं।

   कामराज ने गाँवों-शहरों में सैकड़ों स्कूल खुलवाये। स्कूल के बच्चों को मध्याह्न भोजन मुफ़्त में दिलाने की व्यवस्था की। हाई स्कूल तक निःशुल्क शिक्षा देने की व्यवस्था की।

4. कामराज की अविस्मरणीय सेवाओं में दो का उल्लेख कीजिए।

   कामराज ने गाँवों के लिए बिजली की सुविधा कराई। कई नये-नये कुटीर उद्योगों तथा बड़े कल-कारखानों की स्थापना कराई। खेतीबारी की वृद्धि के लिए कई बाँध बनवाये।

IV. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए।

1. कामराज की बाल्यावस्था के बारे में लिखिए।

   कामराज का जन्म 15 जुलाई 1903 में तमिलनाडु के विरूदुनगर शहर में हुआ। जब वे छे साल के लड़के थे , तब उनके पिता की मृत्यु हो गयी। तो बालक कमराज को स्कूल की शिक्षा छोड़कर घर संभालना पड़ा। उन्हें अपने मामा की दूकान पर 'सेल्समेन' (बिक्रेता) का काम करना पड़ा।

2. कामराज ने देशभक्त के रूप में क्या-क्या त्याग किये ?

   कामराज ने देश की सेवा करने के लिए अपना सांसारिक जीवन त्याग कर दिया। वे निष्ठावान सेवक थे। उन्होंने आजीवन ब्रह्मचारी रहकर राष्ट्रसेवा करने का व्रत निभाया।

V. "कामराज" पाठ का सारांश लिखिए।

कामराज का जन्म 15 जुलाई 1903 में तमिलनाडु के विरूदुनगर शहर में हुआ। जब वे छे: साल के लड़के थे, तब उनके पिता की मृत्यु हो गयी। तो बालक कामराज को स्कूल की शिक्षा छोड़कर घर संभालना पड़ा। उन्हें अपने मामा की दूकान पर 'सेल्समेन' (बिक्रेता) का काम करना पड़ा। उस समय आज़ादी का देशव्यापी आंदोलन ज़ोर पर था। तो कामराज अपना कामकाज छोड़कर देशव्यापी आंदोलन में शामिल हुए।

कामराज ने देश की सेवा करने के लिए अपना सांसारिक जीवन त्याग कर दिया। वे निष्ठावान सेवक थे। आपने महात्मा गाँधी के असहयोग आंदोलन में एक साधारण स्वयं सेवक के रूप में भाग लिया और राष्ट्र के सफल नेता हुए।

सन् 1925 में वैक्कम में 'अछूतोद्धार' आंदोलन में आप अग्रणी रहे। इसके बाद गांधीजी के नमक सत्याग्रह में भाग लेकर कारावास का दंड भोगा। सन् 1935 में आप काँग्रेस के सचिव पद के लिए मनोनीत हुए। मद्रास विधान सभा चुनाव में आप विरुदुनगर क्षेत्र से चुने गये। सन् 1940 में आप तमिलनाडु काँग्रेस के अध्यक्ष बने। सन् 1954 में कामराज मुख्य मंत्री बने। आप मुख्य मंत्री के पद पर दीर्घकाल रहे। अपने सेवाकाल में कामराज ने तमिलनाडु की उन्नति के लिए अनेक योजनाएँ बनायीं। आपने गाँवों के लिए बिजली की सुविधा कराई। कई नये-नये, कुटीर उद्योगों तथा बड़े कल- कारखानों की स्थापना कराई। तमिलनाडु भर में खेती-बारी की वृद्धि के लिए कई बाँध बनवाये और हाई स्कूल तक निःशुल्क शिक्षा देने की व्यवस्था की। बाद में आप काँग्रेस महासभा के अध्यक्ष भी रहे।

कामराज भारत के अस्सी प्रतिशत ग्रामीण जनता का प्रतिनिधित्व करते थे। आपका जीवन नई पीढ़ी के लिए आदर्श है।

5. कोविड - 19

- आर. राजवेल

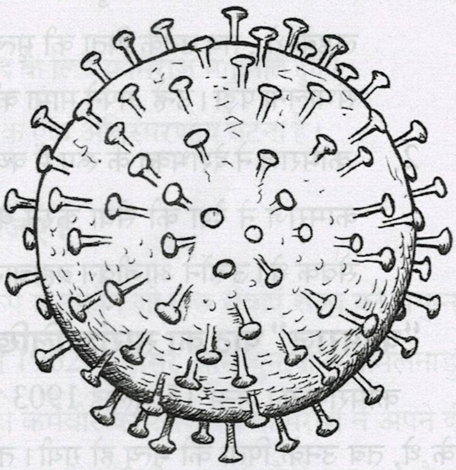

संसार में अनेक प्रकार की जीव राशियाँ हैं। ये जीव राशियाँ एक दूसरे पर आश्रित हैं। सभी जीव राशियाँ प्रकृति का सहारा पाकर, प्रकृति के अनुकूल रहती हैं। जब तक प्रकृति और सभी जीव राशियों में ताल मेल रहता है, तब तक सब लोग आनंद से जीवन बिता सकते हैं। लेकिन जब इस संतुलन में विचलन होता है, तब अनेक प्रकार के बुरे परिणामों का सामना करना पड़ता है। ये परिणाम कभी कभी अतिवृष्टि, अनावृष्टि का रूप लेते हैं तो कभी कभी विभिन्न प्रकार के रोगों का रूप धारण करते हैं।

सन् 2019 में हमने ऐसे ही एक भयंकर रूप को देखा। हाँ, 'कोरोना' महा मारी ने सारे संसार को उलट पलट किया। 'कोरोना' क्या है? कोरोना या "COVID-19" एक ऐसी संक्रामक बीमारी है जिसे विश्व स्वास्थ्य संघठन ने 'महामारी' (PANDEMIC) घोषित किया। <u>CO</u>RONA <u>VI</u>RUS <u>D</u>ISEASE-20<u>19</u> से "CO" "VI" "D" "19" शब्द जुड़कर इस महामारी का नाम "COVID-19" रखा गया है।

बीमारी

'कोरोना' एक वायरस जनित रोग है जिसने महामारी का रूप ले लिया है। इस रोग ने समस्त संसार में तबाही मचा दी। इस रोग की शुरुआत जुकाम एवं खांसी मात्र से होती है जो धीरे-धीरे एक विकराल रूप ले लेती है और रोगी के श्वासतंत्र को बुरी तरह नष्ट करती है। कभी-कभी रोगी की मृत्यु भी हो जाती है।

कोरोना की उत्पत्ति :

कोरोना की उत्पत्ति सबसे पहले सन्1930 में एक मुर्गी में हुई थी। इसने मुर्गी के फ़ेफ़डों को बुरी तरह बाधित किया। आगे चलकर सन् 1940 में कई अन्य जानवरों में भी यह रोग पाया गया। इसके बाद सन् 1960 में एक व्यक्ति में पाया गया जिसे सर्दी की शिकायत थी। फिर सन् 2019 में चीन के उहान शहर के लोगों में यह फ़ैलने लगा और धीरे-धीरे पूरे विश्व में फैलता चला।

कोरोना से बचाव :

यह एक संक्रामक रोग है जो बहुत ही तेजी से एक दूसरे में फैलता है। W.H.O. (विश्व स्वास्थ्य संगठन) ने इससे बचाव पाने के लिए कुछ सावधानियों की सूची निकाली है। वे इस प्रकार हैं :-

अत्यंत आवश्यकता होने पर ही बाहर जाना चाहिए। बाहर जाते समय नाक-मुँह को मुखौटे (mask) से बंद करके जाना है। क्योंकि यह रोग नाक और मुँह के द्वारों से ही फैलता है। लोगों से 5 से 6 फुट की दूरी सदैव बनाये रखें। सदैव बाहर से आने के बाद अपने हाथों को साबुन से 20-30 सेकंड तक अवश्य धोएँ। संक्रमण की स्थिति में खुद को दूसरों से अलग कर लें और नज़दीकी अस्पताल में जाएँ।

'कोरोना' से बचने के लिए अनेक वैक्सीन उपलब्ध हैं। ये वैक्सीन निःशुल्क उपलब्ध हैं। सबको यह वैक्सीन ज़रूर लगा लेना है। हर व्यक्ति अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता को मज़बूत करें, इससे बचने का यही उपाय है। शरीर की प्रतिरोधात्मक शक्ति को बढ़ा लेने के लिए अनेक उपाय हैं– जैसे रोज़ देहाभ्यास, योग अभ्यास आदि करना। भोजन में प्रतिरोधात्मक सामग्रियों को जैसे काली मिर्च, तुलसी, लौंग, नीम, नींबू आदि भी शामिल करना ज़रूरी है। खाने से पहले हाथ धोना, सार्वजनिक स्थानों में स्वच्छ रहना आदि बहुत ज़रूरी है। मार्च 2022 तक विश्व भर में लगभग 50 करोड़ लोग इस बीमारी से पीड़ित हो गये और उनमें 62 लाख मर गये।

इस बीमारी को दुनिया से दूर करने के लिए हम भी अपना योगदान दें।

कठिन शब्दार्थ

महामारी	-	पूरे विश्व में फैला रोग	विकराल रूप	-	भयंकर रूप
प्रभाव	-	असर	श्वास तंत्र	-	श्वासोच्छ्वास तंत्र-इनमें सांस संबंधी अंग जैसे नाक, स्वरयंत्र (Larynx), श्वासनलिका (Wind Pipe) और फेफड़े (Lungs) आदि शामिल हैं।

अभ्यास

I. हिंदी में अर्थ लिखिए।

प्रणाली	- ढाँचा	पाया जाना	- मिलना
सर्दी	- ठंड	संक्रामक बीमारी	- जल्दी फैलनेवाला रोग
तबाही	- नाश	विकराल	- भयंकर
सावधानी	- सतर्कता	प्रतिरोधात्मक	- रोगों से लड़ने की शक्ति

II. वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

श्वसन - कोरोना से हमारा श्वसन तंत्र बाधित होता है।

प्रणाली - श्वसन प्रणाली में नाक, श्वास नालिका और फेफड़े हैं।

संक्रामक - कोरोना एक संक्रामक रोग है।

महामारी - कोरोना एक महामारी रोग है।

प्रतिरोधक क्षमता - हमें अपने शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ा लेना चाहिए।

योगदान - इस काम के लिए आपका योगदान महत्वपूर्ण है।

III. गद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

'कोरोना' से बचने के लिए अनेक वैक्सीन उपलब्ध हैं। ये वैक्सीन निःशुल्क उपलब्ध हैं। सबको यह वैक्सीन ज़रूर लगा लेना है। हर व्यक्ति अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता को मज़बूत करें, रोगों से बचने का यही उपाय है। शरीर की प्रतिरोधात्मक शक्ति को बढ़ा लेने के लिए अनेक उपाय हैं– जैसे रोज़ देहाभ्यास करना, योग अभ्यास करना आदि। भोजन में प्रतिरोधात्मक सामग्रियों को जैसे काली मिर्च, तुलसी, लौंग, नीम, नींबू आदि भी शामिल करना ज़रूरी है। खाने से पहले हाथ धोना, सार्वजनिक स्थानों में स्वच्छ रहना आदि बहुत ज़रूरी है।

1. कोराना से बचने के लिए क्या उपलब्ध है?

   कोरोना से बचने के लिए वैक्सीन (टीका) उपलब्ध है।

2. प्रतिरोधात्मक शक्ति को बढ़ाने के लिए रोज़ क्या करना चाहिए।

   प्रतिरोधात्मक शक्ति को बढ़ाने के लिए रोज़ देहाभ्यास, योग अभ्यास आदि करना चाहिए।

3. प्रतिरोधात्मक शक्ति को बढ़ाने के लिए भोजन में क्या-क्या शामिल करना चाहिए?

   प्रतिरोधात्मक शक्ति को बढ़ाने के लिए भोजन में काली मिर्च, तुलसी, लौंग, नीम, नींबू आदि शामिल करना चाहिए।

IV. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए।

1. कोरोना कैसी बीमारी है? सन् 2019 में किस देश में यह पाया गया?

   कोरोना एक महामारी रोग है। यह रोग 2019 में चीन के उहान शहर में पाया गया।

2. कोरोना की बीमारी से बचने के लिए तीन सावधानियों को लिखिए?

   अत्यंत आवश्यकता होने पर ही घर से बाहर जाना चाहिए। बाहर जाते समय नाक मुँह को कपड़े से बांधकर, मास्क (mask) लगाकर जाना चाहिए। लोगों से 5 से 6 फुट की दूरी बनाये रखना चाहिए।

V. 'कोविड-19' पाठ का सारांश लिखिए।

सन् 2019 में संसार ने एक भयंकर रोग का प्रभाव देखा। उस रोग का नाम है 'कोरोना'। इसे कोविड़ 19 के नाम से लोग जानते हैं। कोरोना, एक वाइरस के कारण फैलता है। इस रोग को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने महामारी (Pandemic) घोषित किया। कोरोना की उत्पत्ति सबसे पहले 1930 में एक मुर्गी में हुई थी। फिर सन् 2019 में चीन के उहान शहर के लोगों में यह रोग फैलने लगा, और धीरे धीरे पूरे विश्व में फैल गया।

यह एक संक्रामक रोग है। बहुत ही तेजी से एक से दूसरे को फैल जाता है। इससे बचने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इन उपायों को बताया है- अत्यंत आवश्यकता होने पर ही घर से बाहर जाना चाहिए। बाहर जाते समय नाक, मुँह को कपड़े से बांधकर, मास्क (mask) लगाकर जाना चाहिए। लोगों से 5 से 6 फुट की दूरी बनाये रखना चाहिए।

कोरोना से बचने के लिए अनेक वैक्सीन (टीका) उपलब्ध हैं। इस रोग से अपने को बचाने के लिए शरीर के प्रतिरोधात्मक शक्ति को बढ़ा लेना चाहिए। प्रतिरोधात्मक शक्ति को बढ़ाने के लिए रोज़ देहाभ्यास, योग अभ्यास आदि करना चाहिए। भोजन में काली मिर्च, तुलसी, लौंग, नीम, नींबू आदि शामिल करना चाहिए। खाने से पहले हाथ धोना, सार्वजनिक स्थानों में स्वच्छ रहना आदि बहुत ज़रूरी है।

6. स्वामी विवेकानंद

भारत के नवजागरण का शंख-बजानेवाले महापुरुषों में स्वामी विवेकानंद का स्थान अद्‌वितीय है। उनका दिव्य संदेश वस्तुतः भारत के लिए ही नहीं, अपितु संपूर्ण विश्व के लिए आध्यात्मिक उत्थान का उद्‌घोष था।

स्वामी विवेकानंदजी का जन्म सन् 1863 ई. में कोलकत्ता में हुआ। बचपन में उनका नाम नरेन्द्रनाथ था। वे बचपन से ही होनहार थे। उन्होंने अंग्रेज़ी स्कूलों में शिक्षा पायी और सन् 1884 ई.मे बी.ए. की डिग्री प्राप्त की। बचपन से ही उनके अंदर एक प्रबल आध्यात्मिक भूख थी। इस आध्यात्मिक भूख को शांत करने के लिए वे ब्रह्मसमाज की नित्य प्रार्थना सभा में सम्मिलित होते थे। सुरीले स्वर के कारण कीर्तन-समाज में उनका बड़ा आदर था।

उन दिनों स्वामी रामकृष्ण परमहंस के प्रति लोगों की बड़ी श्रद्‌धा थी। नवयुवक नरेन्द्रनाथ ने भी उनके सत्संग से लाभ उठाना प्रारंभ किया और धीरे-धीरे उनके उपदेशों से वे बहुत प्रभावित हुए और उनकी भक्त-मंडली में सम्मिलित हो गये। एक सच्चे गुरु से अध्यात्म तत्त्व और वेदांत रहस्य जानकर युवक नरेन्द्र की आध्यात्मिक पिपासा शांत हुई। उनकी गुरु-भक्ति अद्‌वितीय थी। जब कभी वे परमंहसजी की चर्चा करते तो एक-एक शब्द से उनके प्रति श्रद्‌धा और सम्मान का भाव टपकता था।

स्वामी विवेकानंद ने गुरुदेव के प्रथम दर्शन का वर्णन इस प्रकार किया है:-

"देखने में वे बिल्कुल साधारण आदमी मालूम होते थे। उनके रूप में कोई विशेषता न थी। बोली बहुत सरल और सीधी थी। मैंने मन में सोचा कि क्या संभव है कि यह सिद्‌ध पुरुष हो। मैं धीरे-धीरे उनके पास पहुँचा और उनसे वे प्रश्न पूछे जो मैं अक्सर औरों से पूछा करता था, 'महाराज, क्या आप ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास रखते हैं? उन्होंने जवाब दिया, 'हाँ'। मैंने फिर पूछा, "क्या आप उसका अस्तित्व सिद्‌ध कर सकते हैं?" 'उन्होंने जवाब दिया, 'हाँ'। मैंने फिर पूछा, 'कैसे' जवाब मिला, "मैं उसे ठीक वैसे ही देखता हूँ जैसे तुम्हें।"

परमहंसजी की वाणी में बिजली की-सी शक्ति थी जो संशयात्मा को तत्क्षण ठीक रास्ते पर ला देती थी और यही प्रभाव आगे चलकर विवेकानंद जी की वाणी और दृष्टि में भी उत्पन्न हो गया था।

नरेन्द्र की माता की इच्छा थी कि "मेरा लड़का वकील बने, अच्छे घर में उसका ब्याह हो और वह दुनिया के सुख भोगे।" जब रामकृष्ण परमंहस के प्रभाव में आकर नरेन्द्रनाथ ने संन्यास लेने का निश्चय किया तो उनकी माता परमहंस जी की सेवा में उपस्थित हुईं और अनुनय-विनय की कि मेरे बेटे को जोग न सिखाइये। पर जिस हृदय ने शाश्वत प्रेम और आत्मानुभूति के आनंद का स्वाद पा लिया हो उसे लौकिक सुख-भोग कैसे अपनी ओर खींच सकता है? नरेंद्रनाथ की वैराग्य-वृत्ति दिन-ब-दिन बढ़ती ही गयी।

रामकृष्ण परमंहस की महासमाधि के बाद उनके शिष्यों के नेतृत्व का भार नरेंद्र पर आया। तभी उन्होंने तथा उनके साथियों ने संन्यास का व्रत लिया। उसके बाद स्वामीजी उच्च आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए हिमालय की ओर चले गये। कई वर्षों तक वे तपस्या और चित्त-शुद्धि की साधना में लगे रहे। वे सिद्ध महात्माओं की खोज करते रहे और उनके सत्संग से लाभ उठाते रहे। सत्य की खोज करने के लिए उन्होंने सभी तरह के कष्ट प्रसन्नता से सहते रहे। स्वामी जी ने स्वयं कहा है कि कभी-कभी मुझे दो, तीन दिन तक खाना नहीं मिलता था, अक्सर ऐसे स्थान पर नंगे बदन सोया था जहाँ की सर्दी का अंदाजा थर्मामीटर से भी नहीं लगा सकते। कितनी ही बार शेर-बाघ और दूसरे जंगली जानवरों का सामना करना पड़ा। पर राम के प्यारे को इन बातों से क्या डर?

स्वामी जी अपने देश के आचार व्यवहार, रीति-नीति, साहित्य और दर्शन, सामाजिक जीवन, उसके पूर्वकाल के महापुरुष, इन सबको योग्य और सम्मान्य मानते थे। उनके एक भाषण का निम्नलिखित अंश सोने के अक्षरों में लिखा जाने योग्य है:-

"प्यारे देशवासियो! पुनीत आर्यावर्त में बसनेवालो! क्या तुम अपनी इस तिरस्करणीय भीरुता से स्वाधीनता प्राप्त कर सकोगे? हे भाइयो! अच्छी तरह याद रखो कि सीता, सावित्री और दमयंती तुम्हारी जाति की देवियाँ हैं। हे वीर पुरुषो! मर्द बनो और ललकारकर कहो कि मैं भारतीय हूँ, मैं भारत का रहनेवाला हूँ। हर एक भारतवासी चाहे वह कोई भी हो, मेरा भाई है। अपढ़ भारतीय, निर्धन भारतीय, ऊँची जाति का भारतीय, नीची जाति का भारतीय सब मेरे भाई हैं। भारत मेरे बचपन का हिंडोला, मेरे यौवन का आनंद-लोक और मेरे बुढ़ापे का वैकुंठ है"।

स्वामी जी आज हमारे बीच में नहीं हैं, पर आध्यात्मिक ज्योति की जो मशाल वे जला गये हैं वह सदा के लिए संसार को आलोकित करती रहेगी।

कठिन शब्दार्थ

अद्‌वितीय	अनुपम, बेजोड़	उत्थान	उन्नति
उद्‌घोष	सूचना	अनुयायी	अनुकरण करनेवाला
सिद्धांत	उसूल	पिपासा	प्यास/इच्छा
विशेषता	खासियत	तत्क्षण	तुरंत
अनुनय	विनय, प्रार्थना	शाश्वत	कभी नष्ट न होनेवाला/स्थायी
अंदाज़ा	अनुमान	आर्यावर्त	भारत
भीरुता	कायरता	स्वाधीनता	स्वतंत्रता
निर्धन	गरीब	आलोकित	प्रकाशित

अभ्यास

I. हिंदी में अर्थ लिखिए।

शाश्वत	स्थाई	मशाल	मोटी बत्ती, टार्च (torch)
उत्थान	उन्नति	अनुपम	बेजोड़
दर्शन	साक्षात्कार	खोजना	ढूँढना
निश्चय	निर्णय	आचार	चाल-चलन

II. वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

प्यास बुझाना	रामकृष्ण परमहंस ने विवेकानंद की आध्यात्मिक प्यास बुझाई।
प्रभावित होना	गाँधीजी से प्रभावित होकर वल्लभ भाई पटेल उनके अनुज बने।
अस्तित्व	कल्पना के बिना कविता का कोई अस्तित्व नहीं।
ललकारना	प्रकृति को कोई ललकार नहीं सकता।
भ्रमण	विभिन्न क्षेत्रों का भ्रमण करने से हमारा ज्ञान बढ़ता है।

III. गद्‌यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

"स्वामी विवेकानंद जी का जन्म सन् 1863 ई में कोलकत्ता में हुआ। बचपन में उनका नाम नरेन्द्रनाथ था। वे बचपन से ही होनहार थे। उन्होंने अंग्रेज़ी स्कूलों में शिक्षा पायी और सन् 1884 ई.में बी.ए. की डिग्री प्राप्त की। बचपन से ही उनके अंदर एक प्रबल आध्यात्मिक भूख थी"।

1. स्वामी विवेकानंद का जन्म कब हुआ?

   स्वामी विवेकानंद का जन्म सन् 1863 ई. में कोलकत्ता में हुआ।

2. स्वामी विवेकानंद के बचपन का नाम क्या था ?

स्वामी विवेकानंद के बचपन का नाम नरेन्द्रनाथ था।

3. स्वामी विवेकानंद ने बी.ए. डिग्री कब प्राप्त की ?

स्वामी विवेकानंद ने सन् 1884 में बी.ए. की डिग्री प्राप्त की।

IV. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए।

1. परमहंस की वाणी में कौन-सी शक्ति थी ?

परमहंस जी की वाणी में बिजली की शक्ति थी।

2. विवेकानंद ने युवकों को क्या उपदेश दिया ?

विवेकानंद ने युवकों को आपस में भाईचारे का व्यवहार करने का उपदेश दिया।

3. विवेकानंद ने परमहंस से क्या सवाल किया ?

विवेकानंद ने परमहंस से आध्यात्मिक ज्ञान संबंधी सवाल किया।

V. "स्वामी विवेकानंद" पाठ का सारांश लिखिए।

स्वामी विवेकानंद का जन्म 1863 ई. में कोलकत्ता में हुआ। बचपन में उनका नाम नरेन्द्रनाथ था।

स्वामी विवेकानंद बचपन से ही आध्यात्मिक ज्ञान के भूखे थे। अपनी इस आध्यात्मिक ज्ञान की भूख को शांत करने के लिए वे रामकृष्ण परमहंस के पास गये। परमहंस की बिजली जैसी वाणी ने विवेकानंद के आध्यात्मिक ज्ञान का मार्ग खोला।

परमहंस के सत्संग से विवेकानंद ने यह जान लिया कि लौकिक सुख-भोग क्षणिक है। लेकिन आत्मानुभूति का आनंद सत्य है। आत्मानुभूति का आनंद प्राप्त करने का मार्ग संन्यास है। इसलिए वे संन्यासी बने। फिर ज्ञान की प्राप्ति के लिए हिमालय की ओर निकल पड़े।

हिमालय से वापस आने के बाद वे देश के कोने-कोने में भ्रमण करके उपदेश देने लगे। उन्होंने भारतीय युवकों को उपदेश दिया कि अपने को भारतीय कहने में गर्व का अनुभव करना चाहिए और जाति-पाँति को भूलकर आपस में भाई-चारे का व्यवहार करें।

पाठेतर कार्य

स्वामी विवेकानंद ने आध्यात्मिक ज्ञान कैसे हासिल किया? अपने शब्दों में लिखिए।

भाषा-प्रयोग सीखिए

मामा - मामी	सेवक - सेविका	छात्र - छात्रा
सदस्य - सदस्या	अध्यक्ष - अध्यक्षा	ब्रह्मचारी - ब्रह्मचारिणी

7. आर्किमेडीस

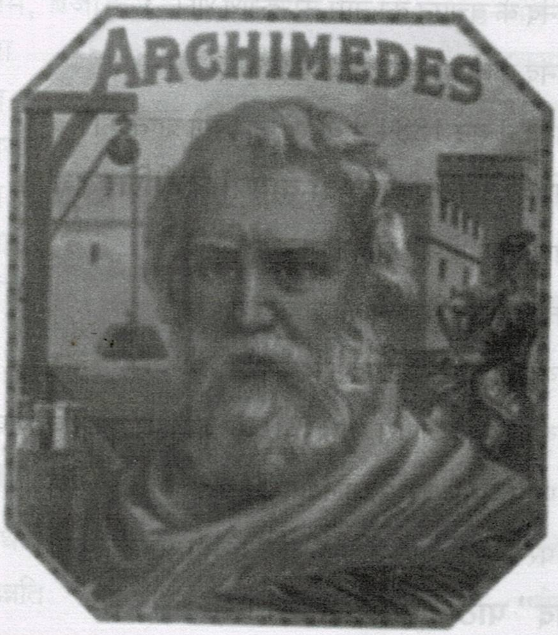

आज से करीब दो हज़ार वर्ष पहले की बात है। सुदूर पश्चिम में सिसिली द्वीप में हीरो नाम का एक राजा राज्य करता था। उसने एक राज-मुकुट बनवाना चाहा। इसके लिए राज्य के सबसे चतुर सुनार बुलवाये गये। उन सबसे कहा गया कि अपने-अपने उत्तम कारीगरी के नमूने दरबार में पेश करें। राजा की इच्छा के अनुसार सब कारीगरों ने अपने-अपने काम के नमूने पेश किये। इन नमूनों की जाँच हुई। इसके बाद जिसका नमूना सबसे अच्छा था वह कारीगर बुलाया गया। राजा ने उसे एक अच्छा मुकुट बनाने को कहा। थोड़े दिनों में वह कारीगर मुकुट बनाकर ले आया।

मुकुट बड़ा सुन्दर था। जो भी उसे देखता, वही उसकी प्रशंसा करता। मगर राजा उससे उतना खुश न हुआ। उसके मन में एक सन्देह पैदा हो गया कि कहीं इस कारीगर ने कुछ सोना चुरा तो नहीं लिया और अपनी चोरी छिपाने के लिए उतने ही वज़न की चाँदी मिला तो नहीं दी। यह सन्देह किस प्रकार दूर हो? यह कैसे जाना जाए कि सुनार ने सोना चुराया है या नहीं, यदि चुराया है तो कितना चुराया है आदि प्रश्न राजा हीरो के दिमाग में घूमने लगे।

राजा ने अपने दरबार के गणित-शास्त्री आर्किमेडीस को बुलाया। उससे अपने मन की सारी बातें कहीं और पूछा – "क्या कोई ऐसा उपाय है जिससे यह सन्देह दूर हो सके।"

आर्किमेडीस बोला – “कोशिश करके कोई तरीका निकालना पड़ेगा।” इसके बाद वह घर लौटा और तब से इसकी खोज में लग गया। एक सप्ताह बीता, एक मास बीता, इसी प्रकार पूरा वर्ष निकल गया। लेकिन आर्किमेडीस को कोई सफलता न मिली। अन्त में जब वह हारकर प्रयत्न करना बन्द कर देना चाहता था, तभी एक घटना घटी। वह एक दिन टब में स्नान कर रहा था। टब पानी से लबालब भरा था। जब वह टब में बैठा तो उसके शरीर की माप का पानी टब के बाहर निकल गया।

वह आनंदपूर्वक ‘युरेका’, ‘युरेका........’ चिल्लाते हुए दौड़ने लगा। ‘युरेका’ शब्द का अर्थ है, ‘मालूम हो गया’।

बस, इतनी-सी ही घटना से आर्किमेडीस को अपनी समस्या का समाधान मिल गया। उसके दिमाग में एक ऐसी बात आ गयी, जिससे वह यह जान सकता था कि राजा के स्वर्ण मुकुट में से सुनार ने कितना सोना चुराया है और कितनी चाँदी मिला दी है।

आर्किमेडीस ने राजमुकुट की तौल-भर सोने और चाँदी के दो अलग-अलग ढेर लिये। इसके बाद मुकुट को तथा सोने और चाँदी के दोनों ढेरों को अलग-अलग करके पानी में डुबोया, जिस बर्तन में ये डुबोये गये, वह पानी से भरा था। इसलिए हर बार कुछ-कुछ पानी बाहर गिरा। कभी अधिक, कभी कम। अंत में जितना पानी गिरा, यह नाप लिया गया।

ज्योंही आर्किमेडीस ने उक्त प्रयोग किया, त्योंही वह समझ गया कि मुकुट के वज़न की चाँदी के ढेर को पानी में डुबोने से जो पानी बहा, वह मुकुट को डुबोने से जितना बहा था उससे अधिक था। अर्थात् मुकुट को पानी में डुबोने पर उतना पानी नहीं बहा जितना सोने और चाँदी के ढेरों को पानी में डुबोने पर बहा था। इससे यह पता चल गया कि मुकुट में न तो विशुद्ध सोना ही है और न चाँदी ही। दोनों को मिलाकर मुकुट बनाया गया है।

आर्किमेडीस का यह प्रयोग साधारण न था। यह प्रयोग एक अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्धांत की खोज के लिए प्रेरणा देता है, जिसके अनुसार अब धातुओं की शुद्धि-अशुद्धि की जाँच की जा सकती है।

कठिन शब्दार्थ

दरबार - राजसभा

प्रशंसा - तारीफ़, गुणगान

तरीका - ढंग, विधि

प्रेरणा - कार्य में प्रवृत्त होने के लिए प्रोत्साहित करना

कारीगर - शिल्पकार, हुनर

वज़न - भार, तौल

सन्देह - शंका, संशय

अभ्यास

I. हिंदी में अर्थ लिखिए।

चतुर - होशियार, निपुण

कारीगर - शिल्पकार

दरबार - राजसभा

प्रशंसा - तारीफ

नमूना - उदाहरण, ढाँचा

II. वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

बुलवाना - सोने का मुकुट बनाने के लिए अनेक लोग बुलवाये गये।

दिमाग में घूमने लगा - मुकुट की स्वच्छता के बारे में अनेक प्रश्न राजा के दिमाग में घूमने लगे।

तरीका - मुझे काम करने का तरीका मालुम है।

समस्या - यहाँ कोई समस्या नहीं है।

सिद्धान्त - आर्किमेडिस का सिद्धान्त जगत् प्रसिद्ध है।

III. गद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

"आज से करीब दो हज़ार वर्ष पहले की बात है। सुदूर पश्चिम में सिसिली द्वीप में हीरो नाम का एक राजा राज्य करता था। उसने एक राज-मुकुट बनवाना चाहा। इसके लिए राज्य के सबसे चतुर सुनार बुलवाये गये। उन सबसे कहा गया कि अपने-अपने उत्तम कारीगरी के नमूने दरबार में पेश करें। राजा की इच्छा के अनुसार सब कारीगरों ने अपने-अपने काम के नमूने पेश किये। इन नमूनों की जाँच हुई। इसके बाद जिसका नमूना सबसे अच्छा था वह कारीगर बुलाया गया। राजा ने उस कारीगर को एक अच्छा मुकुट बनाने को कहा। थोड़े दिनों में वह कारीगर मुकुट बनाकर ले आया। मुकुट बड़ा सुन्दर था। जो भी उसे देखता, वही उसकी प्रशंसा करता। मगर राजा उससे उतना खुश न हुआ। उसके मन में एक सन्देह पैदा हो गया कि कहीं इस कारीगर ने कुछ सोना चुरा तो नहीं लिया और अपनी चोरी छिपाने के लिए उतने ही वज़न की चाँदी मिला तो नहीं दी।

1. हीरो कौन था?
   हीरो सिसिली नामक द्वीप का राजा था।
2. हीरो ने क्या बनाना चाहा?
   हीरो ने सोने का एक मुकुट बनाना चाहा।
3. मुकुट कैसा था?
   मुकुट बड़ा सुन्दर था। जो भी देखता, वही उसकी प्रशंसा करता।
4. राजा के मन में क्या संदेह हुआ?
   राजा के मन में संदेह पैदा हुआ कि कहीं मुकुट के कारीगर ने कुछ सोना चुरा तो नहीं लिया।

IV. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए।

1. राज-मुकुट बनवाने के लिए किसको बुलवाया गया और क्यों?
   राज मुकुट बनवाने के लिए राज्य के सभी चतुर सुनार बुलवाये गये; उन सबके कारीगरी के नमूनों में से उत्तम कारीगरी का चयन करने के लिए वे बुलाये गये।
2. आर्किमेडीस की समस्या का समाधान कैसे मिला?
   एक दिन आर्किमेडीस टब में स्नान कर रहा था। टब पानी से भरा था। जब वह टब में बैठे तो उसके शरीर की माप का पानी बाहर निकल गया। यह देखकर उसके मन में समस्या का समाधान मिल गया।

V. "आर्किमेडिस" पाठ का सारांश लिखिए।

करीब दो हज़ार वर्ष पहले सुदूर पश्चिम में सिसिली नामक द्वीप में हीरो नामक एक राजा राज कर रहा था। उसने एक उत्कृष्ट कारीगर के द्वारा अत्यंत सुन्दर स्वर्ण मुकुट बनवाया। मुकुट अत्यंत सुन्दर था। राजा के मन में संदेह पैदा हुआ कि कहीं मुकुट के कारीगर ने कुछ सोना चुरा तो नहीं लिया और अपनी चोरी छिपाने के लिए उतने ही वज़न की चाँदी मिला तो नहीं दी! अपने संदेह को दूर करने के लिए राजा ने अपने दरबार के गणित शास्त्री आर्किमेडीस को बुलाया। उससे राजा ने अपना संदेह बताया और उसे दूर करने के लिए कहा। इसके बाद आर्किमेडीस मुकुट की स्वच्छता की परीक्षा करने के लिए अनेक खोज करने लगा। बहुत समय बीतने के बाद भी उसे कोई उपाय सूझ नहीं पड़ा। एक दिन आर्किमेडीस टब में स्नान कर रहा था। टब पानी से भरा था। जब वह टब में बैठा तो उसके शरीर की माप का पानी बाहर निकल गया। यह देखकर उसके मन में समस्या का समाधान मिल गया। वह आनंदपूर्वक 'यूरेका-यूरेका' (मुझे मालूम हो गया) चिल्लाते हुए दौड़ने लगा।

आर्किमेडीस ने राजमुकुट की तौल भर सोने और चाँदी के दो अलग अलग ढेर लिया। जब इन्हें पानी में डुबाया, तब थोड़ा पानी बाहर निकला। अंत में जितना पानी गिरा, उसे नाप लिया। इस प्रयोग के माध्यम से आर्किमेडीस ने यह पता लगाया कि मुकुट में न तो विशुद्ध सोना है, और न चाँदी ही। दोनों को मिलाकर मुकुट बनाया गया है। आर्किमेडीस का यह आविष्कार अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके माध्यम से धातुओं की शुद्धि-अशुद्धि की जाँच हो सकती है।

8. शिवाजी की गुरुभक्ति

– कृष्णानंद जी गुप्त

कदाचित् ही कोई ऐसा विद्यार्थी होगा जो जगत्प्रसिद्ध महाराष्ट्र-वीर शिवाजी का नाम न जानता हो। शिवाजी महाराज के गुरु का नाम समर्थ रामदास महाराज था।

शिवाजी की गुरुभक्ति बड़ी विलक्षण थी। एक बार गुरुजी ने सोचा कि देखें शिवा (गुरुजी शिवाजी को शिवा कहा करते थे।) मुझमें सच्ची भक्ति रखता है या नहीं, इस बात की परीक्षा लेनी चाहिए। यह सोचकर स्वामीजी अपने पेट के दर्द का बहाना कर एक पहाड़ की गुफ़ा में जा लेट गये। जब शिवाजी को मालूम हुआ कि स्वामीजी के पेट में बड़ा दर्द है और उसके मारे वे व्याकुल हो रहे हैं तब शिवाजी तत्काल अपने कुछ साथियों को लेकर वहाँ पहुँचे, जहाँ स्वामीजी पड़े हुए थे। स्वामीजी का कष्ट देखकर शिवाजी के हृदय में असह्य वेदना होने लगी! शिवाजी ने पूछा, "गुरुदेव! आपका कष्ट देखकर मुझसे रहा नहीं जाता, आपके पेट में दर्द होने का क्या कारण है? शीघ्र बताइये तो उसका उपाय किया जाए।"

स्वामीजी-शिवा, क्या बताऊँ कल रात से न जाने यकायक क्या हो गया कि पेट में बड़ा दर्द हो रहा है, चैन ही नहीं पड़ता। तभी से यहाँ पड़ा हुआ हूँ। मालूम होता है कि अब मेरा अंतिम समय निकट आ गया है।

स्वामीजी की बात सुनकर शिवाजी की आँखों में आँसू आ गये। वे आँसू पोंछते हुए बोले, "गुरुजी, आप ऐसी अनिष्ट की बात मुँह से क्यों निकालते हैं? क्या ऐसी कोई औषधि नहीं है जिससे आपका यह कष्ट दूर हो सके?"

स्वामीजी-औषधि तो अवश्य है; परन्तु उसका लाना बड़ा कठिन है।

स्वामीजी की बात सुनकर शिवाजी के सब साथी एक स्वर से बोल उठे, "गुरुजी, आप औषधि तो बताइये। यदि आपकी पीड़ा मिटाने के लिए हमारे प्राणों की भी आवश्यकता आ पड़े तो हम सानन्द देने तैयार हैं।"

गुरुजी-क्यों शिवा, औषधि ला सकेगा?

शिवाजी-गुरुजी, आप औषधि तो बताइये।

गुरुजी-यदि तुममें से कोई जंगल में जाकर बाघिन का दूध ला सके तो अवश्य मेरे पेट की पीड़ा दूर हो सकती है, अन्यथा नहीं।

गुरुजी की बात सुनकर सब एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। भला, इतना साहस किसमें था जो जान-बूझकर अपने को मृत्यु के मुँह में डाले? सबने मौन धारण कर लिया।

तब शिवाजी बोले-गुरुजी, इस सेवक को आज्ञा हो तो जाकर बाघिन का दूध लाये।

शिवाजी की बात सुनकर स्वामीजी बोले-शिवा, मैं तुझे अपने प्राणों से भी अधिक प्यारा समझता हूँ। अपने सुख के लिए मैं तेरा अनिष्ट नहीं करना चाहता। रहने दे, उस दूध की कोई आवश्यकता नहीं।

शिवाजी–गुरुजी, आप किसी बात की चिन्ता न करें। मैं अभी जाकर आपके लिए बाघिन का दूध लाता हूँ।

गुरुजी–अच्छा शिवा, यदि तेरी यही इच्छा है, तो जा! परन्तु बहुत शीघ्र आना।

शिवाजी-गुरुजी, मैं अभी आया।

वर्षा ऋतु और अंधेरी काली रात्रि थी। चारों ओर वन में शान्ति विराज रही थी। हाँ, कभी-कभी हाथियों की चिंघाड़, सिंहों की गर्जना अवश्य सुनाई पड़ती थी। आकाश में दो-चार तारे दिखाई पड़ते थे। रात्रि के पथिकों का पथ-प्रदर्शक चन्द्रमा भी शिवाजी के धैर्य की परीक्षा लेने के लिए बादलों में छिपा हुआ था। ऐसे भयानक समय में शिवाजी को छोड़ और किसमें ऐसा साहस है, जो अपने गुरु के लिए अपने प्राणों को तुच्छ समझ बाघिन का दूध लाने पर उद्यत हो। धन्य शिवाजी, धन्य तुम्हारी गुरु-भक्ति!

शिवाजी को उस अन्धकारमय-प्रदेश में फिरते-फिरते लगभग एक घंटा हो गया, परन्तु बाघिन दिखाई न दी। अब शिवाजी बड़ी चिन्ता में पड़े कि क्या करना चाहिए। इधर गुरुजी की चिन्ता लगी हुई थी।

धीरे-धीरे आकाश-मंडल में मेघ छा गये। वर्षा भी होने लगी। शिवाजी ने तब भी धैर्य न छोड़ा। धीरे-धीरे मूसलधार पानी बरसने लगा। शिवाजी पानी बरसने के कारण एक सघन पेड़ के नीचे बैठ गये।

ईश्वर की कृपा से उसी समय एक बाघिन सर्दी से बचने के लिए उसी पेड़ के तले आयी। उसके साथ उसके दो बच्चे भी थे।

शिवाजी के हृदय में बाघिन को देखकर कुछ आशा बँधी, परन्तु एक कठिनता यह थी कि बाघिन अपना दूध किस तरह दुह लेने देगी।

बाघिन आकर शिवाजी के पास ही खड़ी हो गयी। शिवाजी ने उसके ऊपर हाथ फेरना आरंभ किया। बाघिन भी चुपचाप खड़ी रही। शिवाजी उससे बोले–

"मेरे गुरुजी को पेट के दर्द के कारण बड़ी असह्य पीड़ा हो रही है। उनकी उदर-पीड़ा मिटाने के लिए बाघिन के दूध की बड़ी आवश्यकता है। क्या थोड़ा-सा दूध ले सकता हूँ?"

यह कह शिवाजी अपने साथ जो बर्तन लाये थे, उसमें उसका दूध दुहने लगे। बाघिन ने दूध दुहते समय 'चूं' तक न किया। वह कपिला गाय की तरह सीधी खड़ी रही। इस बीसवीं शताब्दी के नयी रोशनीवाले सभ्यगण अवश्य इस बात को निरी गप्प समझेंगे। कहेंगे, 'ऐ! क्या यह भी संभव है कि मनुष्य बाघिन का दूध दुहे और वह चुपचाप खड़ी रहे? यह बिलकुल असत्य है। यह कार्य मनुष्य की सामर्थ्य के बाहर है।' हाँ, शिवाजी मनुष्य अवश्य थे, परन्तु उनको आज्ञा देनेवाले समर्थ गुरु

रामदास मनुष्य नहीं थे। वे मनुष्य रूप में एक दैवी शक्ति थे। उन्हीं की आज्ञा से शिवाजी दूध लेने गये। भला, इतना साहस किसमें है कि फिर कोई शिवाजी का बाल भी बाँका कर सके?

एक बात और है। क्या पशुओं में प्रेम नहीं होता? क्या उनमें दयालुता नहीं होती? बाघिन ने जब समझ लिया कि यह मनुष्य मेरा अनिष्ट नहीं करना चाहता, बल्कि थोड़ा-सा दूध चाहता है तब वह चुपचाप खड़ी रही। यदि शिवाजी चाहते कि मैं इसे भय दिखाकर दूध ले लूँ तो क्या यह संभव था? वह वहीं पर शिवाजी के ऊपर चढ़ बैठती।

जब शिवाजी दूध दुह चुके तब बाघिन एक ओर खड़ी हो गयी। शिवाजी भी दूध लेकर अपने डेरे की ओर चल पड़े।

शिवाजी ने दूध लाकर गुरुजी को दे दिया और बोले– "लीजिये, आपके प्रताप से मैं बड़ी निर्विघ्नता से बाघिन का दूध ले आया हूँ।"

समर्थ महाराज शिवाजी की ऐसी भक्ति देखकर बड़े चकित हुए। उन्हें बड़ा हर्ष हुआ कि शिवा अपनी परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया। वे बोले–"शिवा, धन्य तुझको! धन्य है तेरी माता जीजाबाई को कि जिसकी कोख से ऐसा पुरुष-रत्न उत्पन्न हुआ। शिवा, मुझे दूध की बिलकुल आवश्यकता न थी, मैं केवल तेरी परीक्षा लेना चाहता था। मैंने व्यर्थ तुझको इतना कष्ट दिया।" यह कहकर गुरुजी ने शिवाजी को अपनी छाती से लगा लिया और वे बोले– "शिवा, मैं तुझे आशीर्वाद देता हूँ कि जिस कार्य का बीड़ा तूने उठाया है, उसमें सफल हो, अपने देश का उद्धार कर, शत्रुओं का दमन करने में समर्थ हो! जब तक पृथ्वी पर हिन्दु मात्र है, तेरा नाम अमर रहे।"

हे ईश्वर, इस भारतभूमि पर अब फिर शिवाजी के सदृश वीर, श्रेष्ठगुरुभक्त और देशभक्ति पुरुष-रत्न जन्म लें।

कठिन शब्दार्थ

विलक्षण	विशिष्ट	व्याकुल होना	चिंतित होना
यकायक	अचानक	औषधि	दवा
ताकना	देखना	जान-बूझकर	सोच समझकर

अभ्यास

I. हिंदी में अर्थ लिखिए।

उद्यत होना	- तैयार होना	मूसलदार पानी	- ज़ोर की वर्षा
आशा बंधी	- अभिलाषा हुई	उदर पीड़ा	- पेट में दर्द,
निरी गप्प	- झूठ	दैवी भक्ति	- भगवान की भक्ति

II. वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

दयालुता	- शिवाजी के मन में दयालुता थी।
चकित होना	- गुरु की बात सुनकर सब चकित हुए।
आशीर्वाद	- गुरु ने शिष्यों को आशीर्वाद दिया।
ताकना	- छात्र एक दूसरे के मुँह ताकने लगे।

III. गद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

मुझमें सच्ची भक्ति रखता है या नहीं, इस बात की परीक्षा लेनी चाहिए। यह सोचकर स्वामीजी अपने पेट के दर्द का बहाना कर एक पहाड़ की गुफ़ा में जा लेटे। जब शिवाजी को मालूम हुआ कि स्वामीजी के पेट में बड़ा दर्द है और उसके मारे वे व्याकुल हो रहे हैं तब शिवाजी तत्काल अपने कुछ साथियों को लेकर वहाँ पहुँचे, जहाँ स्वामीजी पड़े हुए थे। स्वामीजी का कष्ट देखकर शिवाजी के हृदय में बड़ी असह्य वेदना होने लगी ! शिवाजी ने पूछा, "गुरुदेव ! आपका कष्ट देखकर मुझसे रहा नहीं जाता, आपके पेट में दर्द होने का क्या कारण है ? शीघ्र बताइये तो फिर उसका उपाय किया जाए।"

1. स्वामीजी के पेट में दर्द का समाचार सुनकर शिवाजी ने क्या किया ?
   स्वामीजी के पेट में दर्द का समाचार सुनकर शिवाजी अपने कुछ साथियों को लेकर गुरुजी के यहाँ पहुँचे।

2. स्वामीजी से शिवाजी ने क्या कहा ?
   स्वामीजी से शिवाजी ने कहा, – आपका कष्ट देखकर मुझसे रहा नहीं जाता, आपके पेट में दर्द होने का क्या कारण है।

3. स्वामीजी ने क्यों शिवाजी की परीक्षा ली ?
   स्वामीजी ने सोचा कि शिवाजी – मुझमें सच्ची भक्ति रखता है या नहीं, इस बात की परीक्षा लेनी चाहिए– इसलिए स्वामीजी ने शिवाजी की परीक्षा ली।

IV. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए।

1. शिवाजी ने अपनी गुरुभक्ति को साबित करने के लिए क्या किया?

   शिवाजी ने गुरु के पेट का दर्द दूर करने के लिए बाघिन का दूध ले आने के लिए तुरंत तैयार हुए। वन से बाघिन का दूध लेकर आये।

2. शिवाजी की गुरुभक्ति को देखकर गुरु समर्थ रामदास ने क्या कहा?

   समर्थ महाराज रामदास ने शिवाजी की गुरुभक्ति देखकर कहा, "धन्य तुझको! धन्य है तेरी माता जीजाबाई को कि जिसकी कोख से ऐसा पुरुष रत्न उत्पन्न हुआ"।

V "शिवाजी की गुरुभक्ति" पाठ का सारांश लिखिए।

इस पाठ का लेखक श्री कृष्णानंदजी गुप्त है। इस पाठ में शिवाजी महाराज की गुरुभक्ति से संबन्धित घटना का वर्णन है। एक बार शिवाजी के गुरु श्री समर्थ रामदास महाराज ने सोचा कि शिवाजी 'मुझमें सच्ची भक्ति रखता है या नहीं, इस बात की परीक्षा लेनी चाहिए'। उन्होंने पेट के दर्द का बहाना करते हुए पहाड़ की गुफा में जा लेटे। जब शिवाजी को मालूम हुआ कि गुरु के पेट में दर्द है, तो शिवाजी तुरंत अपने साथियों के साथ गुरुजी के स्थान पहुँचे। शिवाजी ने गुरु से पूछा, क्या ऐसी कोई दवा है जिससे आपके पेट का दर्द दूर हो सके। गुरु ने कहा, अगर कोई जंगल में जाकर बाघिन का दूध ला सकता है तो पेट की पीड़ा दूर हो सकती है। गुरु की बात सुनकर सब एक दूसरे को ताकने लगे; लेकिन शिवाजी बाघिन का दूध ले आने के लिए तुरंत तैयार हुए। गुरुजी ने शिवाजी को न जाने के लिए कहा, लेकिन शिवाजी वन जाने लगे। वन में जाकर बाघिन की बहुत तलाश की। इस बीच में मूसलदार पानी बरसने लगा। वर्षा से बचने के लिए शिवाजी एक पेड़ की छाया में खड़े हुए। उस समय उसी पेड़ के नीचे एक बाघिन भी आ खड़ी हुई। शिवाजी ने बाघिन के ऊपर प्यार से हाथ फेरना शुरू किया। फिर अपने साथ जो बर्तन लाये उसमें, धीरे से बाघिन का दूध लेने लगे। दूध दुहते समय बाघिन ने 'चू' तक नहीं किया। आजकल के बच्चे इस घटना के बारे में सुनकर कहेंगे कि ये सब निरी गप्प हैं। लेकिन जानवरों में भी प्यार है। शिवाजी बाघिन का दूध लेकर गुरुजी के पास आये। समर्थ महाराज शिवाजी की गुरुभक्ति देखकर चकित हुए। वे बोले - शिवा, धन्य तुझको। गुरु ने आशीर्वाद दिया कि शिवाजी सभी प्रयासों में सफल होंगे। हमारी प्रार्थना है कि इस भारतभूमि पर शिवाजी जैसे वीर, देशभक्त लोग फिर से जन्म लें।

9. तेनालीराम

दक्षिण भारत में विजयनगर नामक एक शक्तिशाली राज्य था। विजयनगर के तेनाली गाँव में एक साधारण-सा व्यक्ति रहता था जिसका नाम राम था। लोग उसे 'तेनाली राम' कहते थे। रोज़गार की तलाश में वह राजधानी आया। राजधानी का नाम भी विजयनगर था। उन दिनों विजयनगर के महाराजा कृष्णदेवराय थे। वे बड़े उदार, विद्याप्रेमी और कलाप्रिय राजा थे। तेनाली राम ने महाराजा से मुलाकात की। महाराजा उसकी बातों से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उसे तुरंत नौकरी दे दी। धीरे-धीरे वह महाराजा के दरबार में आने-जाने लगा। दरबार में बड़े-बड़े विद्वान और कलाकार थे। तेनाली राम ने उनपर भी अपनी बुद्धिमानी और चतुराई का सिक्का जमा दिया। थोड़ समय में ही वह दरबारी भी बन गया।

तेनाली राम के बारे में अनेक कहानियाँ प्रसिद्ध हैं। उन कहानियों से पता चलता है कि तेनाली राम कितना चतुर और बुद्धिमान था।

एक बार महाराज कृष्णदेवराय तेनाली राम की किसी बात पर नाराज हो गये। उन्होंने क्रोध में उसे डाँटते हुए कहा– "जा, यहाँ से चला जा। मुझे कभी अपना मुँह न दिखाना।"

दूसरे दिन तेनाली राम अपने मुँह पर एक मुखौटा लगाकर दरबार में आ गया। उसे देखकर सब दरबारी हैरान हो गये। महाराज ने जब उसे देखा तो उन्हें क्रोध आ गया। उन्होंने सिपाहियों को आदेश दिया– "इस बदतमीज़ को ले जाओ और जेल में बंद कर दो।"

तेनाली राम नम्रता से बोला– "महाराज, मेरा अपराध"?

"अपराध! मैंने तुमसे कहा था कि मुझे कभी अपना मुँह न दिखाना। फिर तुमने यहाँ आने का साहस कैसे किया? और फिर ..... ऐसा मुखौटा लगाकर!" – महाराज गरज उठे।

तेनाली राम ने हाथ जोड़कर अत्यंत नम्रता से कहा– "अशिष्टता के लिए क्षमा चाहता हूँ। मैंने आपकी आज्ञा का पालन किया है। मेरा मुँह दिखाई न दें इसीलिए यह मुखौटा लगाकर आया हूँ।"

तेनाली राम की बात सुनकर सभी दरबारी उसकी प्रशंसा करने लगे। महाराज मुस्कुराये और उसे क्षमा करते हुए बोले– "उतारो यह मुखौटा अभी।"

एक दिन तेनाली राम की कोठी में कुछ चोर घुस आये। तेनाली राम सो नहीं रहा था, जागा हुआ था। उसने अपनी पत्नी से ऊँची आवाज़ में कहा – "देखो, हमारे धन के लालच में कभी चोर-डाकू हमारे घर में आ सकते हैं। हमारे पास जो हीरे-जवाहरात और आभूषण हैं, उन्हें संदूक में भरकर बगीचे के कुएँ में छिपा दें।"

यह कहकर वह उठा और एक बड़ा-सा पत्थर उठाकर कुएँ में डाल दिया।

चोर लोगों को यह बात सुनाई पड़ी। पति-पत्नी की सारी बातचीत और कुएँ में धडाम की आवाज़ सुनकर चोर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने सोचा कि अब हमारा काम आसान हो जाएगा।

तेनाली राम के घर के अंदर जाते ही चोर कुएँ के पास पहुँचे। उन्होंने देखा कि कुएँ में पानी बहुत गहरा है। कुएँ में उतरने की उनमें हिम्मत न थी। उन्हें एक उपाय सूझा। वे बाल्टियाँ ले आये और रात भर कुएँ से पानी निकालते रहे। इतने में सवेरा होने लगा। तेनाली राम बाहर आया। उसे देखते ही पकड़े जाने के डर से चोर भागने लगे। भागते हुए चोरों से तेनाली राम बोला– "सुनो भाइयो! मेरा धन्यवाद तो लेते जाओ। तुमने मेरा इतना बड़ा बगीचा रात भर में सींच दिया। शाबाश!"

इस प्रकार अपनी चतुराई और बुद्धिमानी से तेनाली राम ने अपना घर भी बचा लिया और बगीचा भी चोरों से सिंचवा लिया।

कठिन शब्दार्थ

तलाश - खोज	हैरान होना - आश्चर्य चकित होना	अपराध - जुर्म
आज्ञा - आदेश	आभूषण - गहने	हिम्मत - साहस

अभ्यास

I. हिंदी में शब्दार्थ लिखिए।

मुलाकात	-	भेंट	नाराज़ होना	-	गुस्से में आना
तुरंत	-	फ़ौरन	हैरान होना	-	अचंभे में पड़ना
सिक्का जमाना	-	प्रभावित करना	लालच	-	अति लोलुपता

II. वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

मुलाकात करना – मैं प्रधान मंत्री से मुलाकात करने के लिए दिल्ली गया।

नौकरी देना – मेरे दोस्त ने नौकरी देने की प्रार्थना करते हुए हिंदी प्रचार सभा को एक पत्र लिखा।

हैरान होना – ताजमहल को देखकर लोग हैरान होते हैं।

अशिष्टता – कहा जाता है कि किसी से उनके वेतन के संबंध में पूछना अशिष्टता है।

III. गद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

दक्षिण भारत में विजयनगर नामक एक शक्तिशाली राज्य था। विजयनगर के तेनाली गाँव में एक साधारण-सा व्यक्ति रहता था जिसका नाम राम था। लोग उसे तेनाली राम कहते थे। रोज़गार की तलाश में वह राजधानी आ गया। राजधानी का नाम भी विजयनगर था। उन दिनों विजयनगर के महाराजा कृष्णदेवराय थे। वे बड़े उदार, विद्याप्रेमी और कलाप्रिय राजा थे। तेनाली राम ने महाराजा से मुलाकात की। महाराजा उसकी बातों से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उसे तुरंत नौकरी दे दी।

(1) तेनाली राम विजयनगर क्यों आया?

नौकरी की तलाश में तेनाली राम विजयनगर आया।

(2) विजयनगर के राजा कौन थे?

विजयनगर के राजा कृष्णदेवराय थे।

(3) कृष्णदेवराय कैसे राजा थे?

कृष्णदेवराय बड़े उदार, विद्याप्रेमी और कलाप्रेमी राजा थे।

IV. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए।

1. तेनाली राम ने किससे मुलाकात की?

   तेनाली राम ने राजा कृष्णदेवराय से मुलाकात की।

2. राजा कृष्णदेवराय ने नाराज़ होकर तेनाली राम से क्या कहा?

   राजा कृष्णदेवराय ने नाराज़ होकर तेनाली राम से कहा – "जा, यहाँ से चला जा। मुझे कभी अपना मुँह न दिखाना।"

3. एक दिन तेनाली राम की कोठी में कौन घुस आये?

   एक दिन तेनाली राम की कोठी में कुछ चोर घुस आये।

4. चोर लोग रात भर क्या कर रहे थे?

   चोर लोग रात भर कुएँ से पानी निकाल रहे थे।

V. 'तेनाली राम' पाठ का सारांश लिखिए।

तेनाली राम का नाम दक्षिण का बच्चा-बच्चा जानता है। वह विजयनगर के राजा कृष्णदेवराय का दरबारी था। वह बड़ा बुद्धिमान और चतुर था।

एक बार राजा कृष्णदेवराय किसी कारण तेनाली राम पर नाराज़ हो गये। उन्होंने तेनाली राम से कहा कि तुम मुझे अपना मुँह न दिखाना। दूसरे दिन तेनाली राम एक मुखौटा पहनकर आया। दरबार में उसे देखकर राजा को बड़ा गुस्सा आया। लेकिन तेनाली राम ने कहा "आपने कहा कि मुँह न दिखाना। आपने कब कहा कि दरबार में न आना?" यह सुनकर राजा हँस पड़े।

एक दिन तेनाली राम की कोठी में कुछ चोर घुस गये। तेनाली राम ने यह देख लिया। उसने सोचा कि उन चोरों से खुद बच जाए और उन्हें उचित दंड भी मिले। उसने अपनी पत्नी से ज़ोर से कहा – "आजकल शहर में चोरी का डर है। इसलिए सभी गहनों को पेटी में भर दो और उसे बगीचे के कुएँ में छिपा दो।" यह कहकर उसने एक बड़े पत्थर को कुएँ में डाल दिया।

चोरों ने तेनाली राम की बात और कुएँ में धडाम की आवाज़ सुनी। चोरों ने सोचा कि तेनालीरामन ने आभूषण से भरे पेटी को कुएँ में डाल रखा है। वे पेटी लेने के लिए कुएँ से पानी निकालने लगे। पानी निकालते-निकालते सवेरा हो गया, तो चोर भाग गये।

इस तरह अपनी बुद्धिमत्ता से तेनाली राम खुद बच गया और बगीचे की सिंचाई मुफ़्त में करवायी।

10. स्वाभिमानी बालक

आठ बरस की उम्र का एक छोटा-सा लड़का अपने गाँव के मदरसे में पढ़ता था। वह पढ़ने-लिखने में तेज़ था, पर था गरीब। उसकी आदतें बहुत अच्छी थीं।

एक दिन उसके साथी लड़कों ने दर्जे में मूँगफ़लियाँ खायीं और छिलके वहीं डाल दिये। थोड़ी देर में मास्टर आये और उन्होंने छात्रों से पूछा – ये छिलके किसने फेंके?

किसी ने जवाब नहीं दिया।

"हर एक विद्यार्थी अपने सामने के छिलके उठाकर बाहर फेंके", मास्टर साहब का हुक्म हुआ। सब लड़कों ने अपने-अपने सामने के छिलके उठाकर फेंक दिये। लेकिन उस गरीब विद्यार्थी के सामने के छिलके ज्यों के त्यों पड़े थे। मास्टर साहब गुस्से से लाल-पीले हो गये।

अध्यापक कड़ककर बोले – तुझे शर्म नहीं आती? एक तो दर्जे के कमरे में मूँगफ़ली खाता है और छिलके उठाकर फेंकने का तमीज़ नहीं? छिलके उठा।

मगर वह लड़का चुपचाप खड़ा रहा। बोला – "मैंने मूँगफ़लियाँ नहीं खायीं। इसलिए छिलके नहीं उठाऊँगा।"

बस! अब क्या था? मास्टर की आँखों से चिनगारियाँ निकलने लगीं। आँख दिखाकर बोले– छिलके नहीं उठाओगे तो यहाँ से निकाल दूँगा।

फिर भी वह लड़का टस से मस नहीं हुआ। उसका एक ही जवाब था – "मैंने मूँगफ़ली नहीं खायी। मैं छिलके नहीं उठाऊँगा।"

अध्यापक लड़के की यह बात सुनकर गुस्से में आये। उसी दम उन्होंने उसके पिताजी के नाम चिट्ठी लिखी – आपका लड़का वर्ग में मूँगफ़ली खाता है, फिर भी छिलके उठाने से इनकार करता है। उसे कड़ी सज़ा देनी पड़ेगी।

पिताजी ने लड़के से विवरण पूछा। उसने सारी घटना कह सुनायी। पिताजी को अपने बेटे पर पूरा भरोसा था। उन्हें यकीन था कि अपना बेटा कभी झूठ नहीं बोलेगा। फ़ौरन चिट्ठी का जवाब भेजा, "मेरे लड़के को न बाज़ार की चीज़ें खाने की आदत है, न हम उसे ऐसी चीज़ें ख़रीदने के लिए पैसे ही देते हैं।"

मास्टर साहब चिट्ठी पढ़कर शर्मिंदा हो गये।

लड़को, क्या तुम्हारे पिता तुम्हारे बारे में इस तरह यक़ीन दिला सकते हैं? मालूम है, यह लड़का कौन था? यह था 'बाल गंगाधर तिलक' जो आगे चलकर 'लोकमान्य तिलक' के नाम से मशहूर हुआ।

कठिन शब्दार्थ

मदरसा	- पाठशाला	दर्जा	- वर्ग, कक्षा
तमीज़	- अदब, शिष्टाचार, विवेक	इनकार करना	- अस्वीकार करना
भरोसा	- विश्वस	यकीन	- विश्वास
ज्यों का त्यों	- वैसा ही, जैसे के तैसे		

अभ्यास

I. हिंदी में अर्थ लिखिए।

मदरसा - पाठशाला मशहूर - प्रसिद्ध यकीन - विश्वास जवाब - उत्तर

II. वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

इनकार	- बालक ने छिलके उठाने से इनकार कर दिया।
कड़ककर बोलना	- छात्र की बात सुनकर, अध्यापक कड़ककर बोले।
खरीदना	- मैं मूँगफली खरीदना चाहती हूँ।
आँखों से चिंगारियाँ निकालना	- अन्याय को देखकर वीर की आँखों से चिंगारियाँ निकलीं।
तेज	- बाल गंगाधर तिलक पढ़ाई में तेज़ थे।

III. गद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

पिताजी ने लड़के से विवरण पूछा। उसने सारी घटना कह सुनायी। पिताजी को अपने बेटे पर पूरा भरोसा था। उन्हें यकीन था कि अपना बेटा कभी झूठ नहीं बोलेगा। फ़ौरन चिट्ठी का जवाब भेजा, "मेरे लड़के को न बाज़ार की चीज़ें खाने की आदत है, न हम उसे ऐसी चीज़ें ख़रीदने के लिए पैसे ही देते हैं।" मास्टर साहब चिट्ठी पढ़कर शर्मिंदा हो गये। लड़को, क्या तुम्हारे पिता तुम्हारे बारे में इस तरह यक़ीन दिला सकते हैं? मालूम है, यह लड़का कौन था? यह था 'बाल गंगाधर तिलक' जो आगे चलकर 'लोकमान्य तिलक' के नाम से मशहूर हुआ।

1. पिताजी ने अपने बेटे के बारे में क्या सोचा?

पिताजी ने बेटे के बारे में सोचा कि वह कभी झूठ नहीं बोलेगा।

2. पिताजी ने चिट्ठी के जवाब में क्या लिखा।

पिताजी ने लिखा – मेरे बेटे को न बाज़ार की चीज़ें खाने की आदत है, न हम उसे ऐसी चीज़ें खरीदने के लिए पैसे ही देते हैं।

3. 'स्वाभिमानी बालक' पाठ में आनेवाला बालक कौन था?

वह बालक बाल गंगाधर तिलक था।

IV. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए।

1. चिट्ठी पढ़कर मास्टर साहब क्यों शर्मिंदा हो गये?

चिट्ठी पढ़कर मास्टर साहब शर्मिंदा हुए, क्योंकि उन्होने अनावश्यक बालक को दंड दिया।

2. तिलक किस उम्र में मदरसे में पढ़ने गये और वर्ग में क्या हुआ?

तिलक आठ बरस की उम्र में गाँव के मदरसे में पढ़ने गये। एक दिन वर्ग में छात्रों ने मूँगफलियाँ खाकर छिलके वहीं डाल दिये।

V. 'स्वाभिमानी बालक' पाठ का सारांश लिखिए।

इस पाठ में बालगंगाधर तिलक के बचपन में हुई एक घटना का वर्णन है। जब तिलक आठ साल के थे तब गाँव के मदरसे में पढ़ने गये। एक दिन वर्ग में छात्रों ने मूँगफलियाँ खाकर छिलके वहीं डाल दिये। मास्टर आये और मूँगफलियों के छिलके देखकर नाराज़ हुए। उन्होंने बालकों से अपने सामने से छिलके उठाकर बाहर फेंकने का हुक्म दिया। तिलक के सामने भी छिलके पड़े थे, लेकिन उन छिलकों को तिलक ने नहीं फेंका था। इसलिए उन्हें उठाकर बाहर फेंकने से तिलक ने इनकार कर दिया। मास्टर के बार बार कहने पर भी उसने छिलके उठाकर नहीं फेंका। अध्यापक को लड़के की इस बात पर गुस्सा आया। उन्होने तुरंत, लड़के के पिताजी के नाम पर पत्र लिखा। पिताजी ने लड़के से विवरण पूछा। लड़के ने सारी बात बताई। पिता को अपने बेटे पर विश्वास था। उन्होने तुरंत मास्टर को पत्र लिखा, "मेरे बेटे को न बाज़ार की चीज़ें खाने की आदत है, न हम उसे ऐसी चीज़ें खरीदने के लिए पैसे ही देते हैं।" पत्र देखकर मास्टर साहब शर्मिन्दा हुए।

इस पाठ में दो बातें हमें सीखनी हैं; जब हम सत्य बोलते हैं तब निडर रह सकते हैं। माँ बाप को अपने बच्चों को अच्छा चाल चलन सिखाना है और उनपर भरोसा भी रखना है।

राष्ट्रभाषा पाठ्य पुस्तक

भाग - 3

एकांकी

पृष्ठ

1. बहू की विदा ... 82
2. रीढ़ की हड्डी ... 93
3. अंधेर नगरी ... 107
4. परिवर्तन ... 115
5. शहीद झलकारीबाई ... 129

1. बहू की विदा

– विनोद रस्तोगी

[हिन्दी रंगमंच के समुन्नत विकास के लिए प्रयत्नशील, नाटक तथा रंगमंच के पारस्परिक संबंध को दृढ़ करनेवाले नई पीढ़ी के नाटककारों में श्री विनोद रस्तोगी का नाम प्रमुख है। नाटककार होने के बावजूद आप एक कवि, उपन्यासकार, कहानीकार एवं बाल-कथाकार भी हैं।

'बहू की विदा' सामाजिक एकांकी है। इसमें विनोद रस्तोगी ने समाज में प्रचलित दहेज प्रथा की कठोरता पर हमारा ध्यान आकर्षित किया है।]

पात्र–परिचय

जीवनलाल	:	एक धनी व्यापारी, उम्र पचास वर्ष
राजेश्वरी	:	जीवनलाल की पत्नी, उम्र छियालीस वर्ष
रमेश	:	जीवनलाल का पुत्र, उम्र बाईस वर्ष
कमला	:	रमेश की पत्नी, उम्र उन्नीस वर्ष
प्रमोद	:	कमला का भाई, उम्र तेईस वर्ष

(कमरा आधुनिक ढंग से सजा है। सामने की ओर बायें कोने में रेडियो और दायें कोने में पुस्तकों का रैक है। कमरे के बीच में सोफ़ा-सेट है। छोटी गोल मेज़ पर सुन्दर फूलदान रखा है।

कमरे में दो द्वार हैं। सामने वाला द्वार अन्दर जाने के लिए और दायीं ओर का द्वार बाहरी बरामदे में खुलता है। दोनों पर पर्दे पड़े हैं। दायीं ओर खिड़की है जो खुली हुई है।

पर्दा उठने पर जीवनलाल खिड़की के समीप खड़े हुए दिखाई पड़ते हैं। वे बाहर की ओर देख रहे हैं। आँखों पर चश्मा है। भरे हुए चेहरे पर बड़ी-बड़ी मूँछें हैं। सिर गंजा है। धोती-कुर्ता पहने हैं। मुख पर गम्भीरता और समृद्धि के चिह्न हैं।

उनसे कुछ दूर हटकर प्रमोद विनम्र भाव से खड़ा है। उसने पैंट और बुश शर्ट पहने है। चेहरे पर निराशाजन्य करुण भाव है।)

प्रमोद – (आगे बढ़कर धीमे स्वर में) क्या निर्णय किया आपने?

जीवनलाल – विदा नहीं होगी।

प्रमोद – लेकिन आप सोचिए तो। यदि आपने विदा नहीं की तो बहन की क्या दशा होगी?

जीवनलाल – मैंने उसकी दशा का ठेका नहीं लिया है।

प्रमोद – हर लड़की पहला सावन अपनी सखी–सहेलियों के साथ हँस-खेलकर बिताने का सपना देखती है।

जीवनलाल – जानता हूँ।

(जीवनलाल सोफ़े पर बैठकर जम्हाई लेते हैं, मानों प्रमोद की बातों से ऊब रहे हों।)

प्रमोद – यह जानकर भी .....

जीवनलाल – अपना निर्णय सुना चुका हूँ। विदा नहीं होगी।

प्रमोद – यदि मैं कमला को बिना लिये ही गया तो माँ का हृदय टूट जाएगा।

जीवनलाल – मैं मज़बूर हूँ। अगर माँ-बहन का इतना ही ख्याल था तो दहेज पूरा क्यों नहीं दिया?

प्रमोद – (दीन स्वर से) अपने सामर्थ्य के अनुसार जितना भी हो सका हमने दे दिया। फिर भी अगर...

जीवनलाल – (कड़े स्वर में) अगर तुम्हारा सामर्थ्य कम था तो अपनी बराबरी का घर देखते। झोंपड़ी में रहकर महल से नाता क्यों जोड़ा?

प्रमोद – (हाथ जोड़कर) जी....

जीवनलाल – (उठकर आवेश से टहलते हुए) देना तो दूर, बारात की खातिर भी ठीक से नहीं की गयी। मेरे नाम पर जो धब्बा लगा, मेरी शान को जो ठेस पहुँची, भरी बिरादरी में जो हँसी हुई, उस करारी चोट का घाव आज भी हरा है। जाओ, कह देना अपनी माँ से कि अगर बेटी की विदा कराना चाहती हैं तो पहले घाव के लिए मरहम भेजें।

प्रमोद – जी... आप इस समय तो विदा कर दें। हम आपकी हर माँग पूरी करने की भरसक चेष्टा करेंगे।

जीवनलाल – मैंने दुनिया देखी है, प्रमोद! ये बाल धूप में सफ़ेद नहीं हुए हैं। और तुम – (उत्तेजित स्वर में) कल के छोकरे मुझे बेवकूफ़ बनाना चाहते हो।

प्रमोद – यह आप क्या कह रहे हैं!

जीवनलाल – ठीक कह रहा हूँ। मेरा फ़ैसला आखिरी है। विदा तभी होगी जब पाँच हज़ार नकद (दायाँ हाथ फैलाकर) इस हाथ पर रख दोगे।

प्रमोद – (आवेश में) यह तो सरासर अन्याय है। शिकायत आपको हमसे है। उस भोली-भाली लड़की ने आपका क्या बिगाड़ा है जो विदा न करके आप उससे बदला ले रहे हैं? अगर रमेश बाबू होते....

जीवनलाल – तो वह क्या कर लेता? मेरे सामने मुँह खोलने की हिम्मत नहीं है उसमें। वह मेरा बेटा है। तुम्हारी तरह बड़ों के मुँह लगने की बदतमीज़ी करनेवाला कोई आवारा छोकरा नहीं।

प्रमोद – (अपमान से तिलमिलाकर) बाबूजी! बेटीवाला समझकर ही आप मेरा अपमान कर रहे हैं। किन्तु....किन्तु यह न भूलिए कि आप भी बेटीवाले हैं।

जीनवनलाल– हाँ, हम भी बेटीवाले हैं; लेकिन तुम्हारी तरह नहीं। पिछले महीने हमने भी अपनी गौरी की शादी की है। वह खातिरदारी की कि बारातवाले दंग रह गये। इतना दहेज दिया कि देखनेवालों ने दाँतों तले उँगली दबा ली। (दर्द मिश्रित आवेश में) तुम मेरी बराबरी करोगे? हँ....बेटीवाले......बेटीवाले होकर भी हमारी मूँछ ऊँची है। समझे?

प्रमोद – जी......

जीवनलाल – रमेश गया है गौरी को विदा कराने। (कलाई पर बँधी घड़ी देखकर) कुछ देर में उसे लेकर आता ही होगा। मेरी बेटी पहला सावन यहाँ बिताएगी। तुम्हारी बहन के सपने कभी पूरे नहीं होंगे और उसके सपनों के खून का दाग तुम्हारे हाथों और तुम्हारी माँ के आँचल पर होगा। समझे?

प्रमोद – (व्यंग्य से) जो हमारी बहन है क्या वह आपकी कोई नहीं है?

जीवनलाल – (तेज़ी से) बेटी और बहू को एक ही तराजू पर तौलना चाहते हो? बेटी बेटी है और बहू बहू।

प्रमोद – ठीक है। जब आप अपनी ज़िद पर अड़े हैं तो विनती करना व्यर्थ है (कहकर धीमे स्वर में) क्या जाने से पहले एक बार बहन से मिल सकता हूँ?

जीवनलाल – ज़रूर। और हाँ, उसे यह भी बताते जाना कि अगली बार मेरे लिए मरहम लेकर विदा कराने कब आओगे। (ऊँचे स्वर में) अरे, सुनती हो। गौरी की माँ! ज़रा बहू को भेज दो। अपने भाई से मिल ले आकर। (सहज स्वर में) मैं तब तक देखूँ कि माली के बच्चे ने झूला डाला या नहीं? (द्वार की ओर बढ़ते हैं। द्वार का पर्दा हटाकर मुड़ते हुए) गौरी के लिए झूला डाल रहा हूँ लॉन में।

(जीवनलाल का प्रस्थान। प्रमोद थका-सा सोफ़े पर बैठ जाता है। अन्दर से कमला आती है। चाँद-से सुन्दर मुखड़े पर उदासी की घटा है। हाथों में लाल रंग की चूड़ियाँ

हैं। रेशमी साड़ी-ब्लाउज़ पहने है। प्रमोद के पास जाकर चुपचाप खड़ी हो जाती है .... सिर नीचा किये।)

प्रमोद – (भारी स्वर में) बैठ जाओ, कमला।

(कमला सिसकने लगती है)

प्रमोद – (आर्द्र स्वर में) पागल न बनो; कमला! रोओ मत, मैं कहता हूँ रोओ मत! इन मोतियों का मूल्य समझनेवाला यहाँ कोई नहीं है। पानी से पत्थर नहीं पिघल सकता!

कमला – (सिसकती हुई) भैया! क्या....

प्रमोद – घबराओ मत! मैं जल्दी फिर आऊँगा और उस बार बिदा अवश्य होगी, क्योंकि मैं चोट के लिए मरहम लेकर आऊँगा।

कमला – (न समझने के भाव से) मरहम.......?

प्रमोद – हाँ कमला! हमारे व्यवहार से बाबूजी के कलेजे में घाव हो गया है। उन्हें मरहम चाहिए और उस मरहम की कीमत है पाँच हज़ार रुपये!

(कमला चौंककर भाई की ओर देखती है।)

प्रमोद – तुम चिन्ता न करो कमला! मरहम का प्रबन्ध हो जाएगा। इस गिरे हाल में भी मकान सात-आठ हज़ार में तो बिक ही जाएगा।

कमला – (व्याकुलतापूर्ण आग्रह से) मेरी विदा के लिए घर न बेचना, भैया! आपको मेरे सुख-सुहाग की सौगन्ध है।

प्रमोद – यह क्या कह रही हो तुम? क्या तुम नहीं चाहती कि पहला सावन सखी-सहेलियों के साथ माँ के घर बिताने?

कमला – किस लड़की की यह कामना नहीं होगी, भैया? लेकिन...... लेकिन उस कामना की पूर्ति के लिए इतनी बड़ी कीमत चुकाना कहाँ तक ठीक है? साल-दो साल में विमला का ब्याह भी आपको करना है। आवेश में आकर.....

प्रमोद – (बीच में ही) लेकिन तुम....

कमला – मेरी चिन्ता आप न करें। सच, बिदा न होने से मुझे ज़रा भी दुःख न होगा।

प्रमोद – कमला.........!

कमला	–	गौरी आ रही है। बहुत अच्छा स्वभाव है उसका। हर समय हँसती-हँसाती ही रहती है। उसके साथ रहकर मुझे सखी-सहेलियों की कमी बिल्कुल नहीं अखरेगी। आप विश्वास करें, भैया!
प्रमोद	–	लेकिन आज नहीं तो कल रुपया तो देना ही पड़ेगा, कमला! कागज़ के टुकड़ों पर अपना स्नेह और प्यार बेचनेवालों के बीच तुम इस तरह कब तक रह सकोगी?
कमला	–	धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा, भैया! माँ जी तो ममता की मूर्ति हैं ही, बाबूजी ज़रा जिद्दी स्वभाव के हैं। समय के साथ वे भी सब भूल जाएँगे।
प्रमोद	–	मुझे तो ऐसा नहीं लगता। सब एक ही धातु के बने हैं। हो सकता है, माँ जी की ममता सिर्फ़ दिखावा हो!
		(अन्दर से राजेश्वरी का प्रवेश। गोरा रंग, स्वस्थ शरीर। सफ़ेद साड़ी और ब्लाउज़ पहने है।)
राजेश्वरी	–	कैसे दिखावा, भैया?
		(प्रमोद चौंक पड़ता है। कमला और प्रमोद उठने का उपक्रम करते हैं।)
राजेश्वरी	–	(दूसरे कोच पर बैठती हुई) बैठे रहो तुम लोग। (हँसकर) क्या बातें हो रही थीं भाई-बहन में?
प्रमोद	–	बस, कुशल-क्षेम पूछ रहा था।
राजेश्वरी	–	हाँ, बिदा के लिए क्या कहा उन्होंने?
		(प्रमोद मौन रहता है। कमला दृष्टि नीची कर लेती है।)
राजेश्वरी	–	समझ गयी, अपनी ज़िद के आगे तो वे किसी की सुनते ही नहीं। जब तुम्हारी चिट्ठी आयी थी तभी मना कर रहे थे। मैं तो समझाते-समझाते हार गयी। क्या कहा उन्होंने।
		(प्रमोद अब भी मौन है।)
राजेश्वरी	–	मुझसे शर्म कैसी? मेरे लिए जैसा रमेश वैसे ही तुम। बोलो, कितना रुपया चाहते हैं वे?
प्रमोद	–	जी.... जी, रुपये की तो बात नहीं हुई। वे तो....
राजेश्वरी	–	(बीच में ही) माँ से झूठ बोलते हो! मैं उन्हें अच्छी तरह जानती हूँ। इनसान से ज़्यादा प्यारा उन्हें पैसा है।
प्रमोद	–	जी..... आप ......

राजेश्वरी – (प्रमोद की ओर गूढ़ दृष्टि से देखती हुई) बोलो, कितना रुपया लेकर वे विदा करने को तैयार हैं? चुप क्यों हो? बताओ।

प्रमोद – (धीमे और उदास स्वर में) पाँच हज़ार।

राजेश्वरी – बस! मैं देती हूँ तुम्हें रुपये। उनके मुँह पर मारकर कहना कि यह लो कागज़ के रंग-बिरंगे टुकड़े जिन्हें तुम आदमी से ज़्यादा प्यार करते हो। (उठकर सामने वाले द्वार की ओर बढ़ती हुई) मैं अभी लाती हूँ।

प्रमोद – (उठकर) ठहरिए, माँ जी!

(राजेश्वरी रुक जाती है और मुड़कर प्रमोद की ओर देखती है।)

प्रमोद – मुझे रुपये नहीं चाहिए। मैं बिना बिदा कराये ही जा रहा हूँ।

(कमला उसी प्रकार मूर्तिवत् बैठी है)

राजेश्वरी – (लौटती हुई) यह क्या कह रहे हो, बेटा? मेरे रहते विदा न हो, यह कभी नहीं हो सकता। मैं माँ हूँ, माँ के दिल को समझती हूँ। (भारी स्वर में) जिस तरह उतावली होकर मैं गौरी की राह देख रही हूँ उसी तरह तुम्हारी माँ भी कमला की राह देख रही होगी। नहीं, विदा ज़रूर होगी। तुम अकेले नहीं जाओगे। (कमर से कुंजियों का गुच्छा निकालकर कमला की ओर बढ़ाती हुई) जा बेटी, तिजोरी से रुपये निकाल ला। (कमला गुच्छा लेने के लिए हाथ आगे नहीं बढ़ाती। प्रमोद खिड़की की ओर मन्द गति से बढ़ता है।)

राजेश्वरी – जाती क्यों नहीं? (गुच्छा कमला के हाथ में थमाती हुई) जल्दी कर। (कमला उठकर 'माँजी' कहती है और सिसकने लगती है। राजेश्वरी 'मेरी बेटी' कहकर उसे हृदय से लगा लेती है। प्रमोद खिड़की से बाहर की ओर देखने लगता है।)

जीवनलाल – (बाहर से) अरे सुनती हो! गौरी के आने का समय हो गया और तुमने स्वागत की कोई तैयारी नहीं की।

राजेश्वरी – (कमला से) जा, बेटी! तू अन्दर जा!

(कमला अन्दर जाती है। प्रमोद मुड़कर बाहर वाले द्वार की ओर देखता है, जिधर से जीवनलाल आते हैं।)

जीवनलाल – अरे तुम यहाँ खड़ी हो? जाकर तैयारी करो स्वागत की। ज़रा यह भी तो देख ले कि नाक वाले अपनी बेटी का स्वागत कैसे करते हैं।

राजेश्वरी – (चिढ़कर) क्या गालियों के अलावा कभी सीधी बात नहीं निकलती मुँह से? जब देखो तब बेढंगी बातें।

जीवनलाल – यह लो! इसमें कौन-सी गाली दे दी मैंने?

राजेश्वरी – तुम समझते हो कि दुनियाँ में एक तुम्हीं नाक वाले हो, और सब नकटे हैं।

जीवनलाल – तुम्हें तो मेरी हर बात में बुराई ही दिखाई देती है। प्रमोद, तुम्हीं बताओ, मैंने कोई बुरी बात कही है?

प्रमोद – (धीरे-धीरे आगे बढ़ता हुआ) ठीक ही कहा है आपने। आज के युग में पैसा ही नाक और मूँछ है। जिसके पास पैसा नहीं है, वह नाक-मूँछ होते हुए भी नकटा है, मूँछकटा है।

(नेपथ्य में होर्न का स्वर)

जीवनलाल – (प्रसन्न स्वर में) आ गयी मेरी गौरी। (राजेश्वरी से) अरे, खड़ी-खड़ी मेरा मुँह क्या देख रही हो? अन्दर से मिठाई का थाल लाओ। (राजेश्वरी उसी प्रकार खड़ी रहती है।) उसकी दृष्टि बाहर वाले द्वार की ओर है। प्रमोद भी उसी ओर देख रहा है। अन्दर वाले द्वार के पर्दे की ओट में कमला खड़ी है। बाहर से उसका हाथ दिखाई पड़ रहा है। जीवनलाल बड़े उत्साह से द्वार की ओर बढ़ते हैं। तभी बाहर से रमेश आता है। इकहरे बदन का सुन्दर नवयुवक है। उसने पैंट और कमीज़ पहने है। हाथ में बरसाती कोट है। चेहरे पर उदासी के चिह्न हैं। बरसाती कोट कौच पर रखकर चुपचाप खड़ा हो जाता है।

जीवनलाल – (बाहर वाले द्वार का पर्दा हटाकर बाहर झाँकने के बाद घबराये हुए स्वर में) गौरी कहाँ है?

रमेश – (धीमे स्वर में) वह नहीं आयी।

जीवनलाल – नहीं आयी? क्यों? तबीयत तो ठीक है उसकी?

रमेश – जी हाँ।

जीवनलाल – फिर?

रमेश – उन्होंने विदा नहीं की!

(राजेश्वरी हतप्रभ-सी कौच पर बैठ जाती है। कमला के हाथ में कम्पन होता है जिससे पर्दा भी हिल जाता है। प्रमोद बड़े ध्यान से जीवनलाल की ओर देख रहा है।)

जीवनलाल – (जैसे किसी ने छाती पर घूँसा मार दिया हो) विदा नहीं की? क्यों नहीं की विदा?

रमेश – कह रहे थे कि दहेज पूरा नहीं दिया गया।

जीवनलाल – (बिगड़कर) हमने जो जीवन भर की कमाई दे दी और उनकी नज़र में दहेज पूरा नहीं दिया गया। लोभी कहीं के!

राजेश्वरी – (उठकर) उन्हें क्यों भला-बुरा कह रहे हो? बेटीवाले चाहे अपना घर-द्वार बेचकर दे दें, पर बेटे वालों की नाक-भौं सिकुड़ी ही रहती हैं।

जीवनलाल – मगर शराफ़त और इन्सानियत.........

राजेश्वरी – (बीच में ही) अब शराफ़त और इन्सानियत की दुहाई देते हो। कुछ देर पहले तो........

जीवनलाल – चुप रहो तुम!

राजेश्वरी – बहुत चुप रही। अब नहीं रहूँगी। आखिर क्या कमी है बहू के दहेज में? मगर तुम हो कि....

जीवनलाल – (अनसुनी करके) मेरी बेटी की विदा न करके उन्होंने मेरा अपमान किया है। मैं.....मैं.........

राजेश्वरी – तुम भी तो किसी की बेटी की विदा न करके अपमान कर रहे हो किसी का।

जीवनलाल – (चीखकर) गौरी की माँ.........

राजेश्वरी – अब भी आँखें नहीं खुलीं? जो व्यवहार तुम दूसरों से अपनी बेटी के लिए चाहते हो वह दूसरे की बेटी को भी दो। जब तक बहू और बेटी को एक-सा नहीं समझोगे, न तुम्हें सुख मिलेगा और न शान्ति।

(जीवनलाल बेचैनी से इधर-उधर टहलते हैं। वे हाथ मल रहे हैं। सिर नीचे झुका है। प्रमोद रमेश के पास जाकर खड़ा हो जाता है।)

जीवनलाल – बहू और बेटी! बेटी और बहू! अजीब उलझन है। कुछ समझ में नहीं आता।

राजेश्वरी – अगर हर बेटे वाले यह याद रखें कि वह बेटीवाला भी है तो सब उलझनें सुलझ जाएँगी।

जीवनलाल – (रुककर पत्नी की ओर देखते हुए) .... शायद तुम ठीक कहती हो।

प्रमोद – (आगे बढ़कर धीमे स्वर में) अब मुझे आज्ञा दीजिए, बाबूजी!

जीवनलाल – (चौंककर) ऐं........

प्रमोद – मेरी गाड़ी का समय हो रहा है। मैं जा रहा हूँ। (द्वार तक जाता है। फिर घूमकर।) मैं जल्द ही फिर आऊँगा। विश्वास रखें, इस बार आपकी चोट के लिए मरहम लाना न भूलूँगा।

जीवनलाल – (दुखी स्वर में) ठहरो, प्रमोद। मुझे और लज्जित न करो बेटा! मेरी चोट का इलाज बेटी के ससुराल वालों ने दूसरी चोट से कर दिया है।

प्रमोद – (लौटता हुआ आश्चर्य से) बाबूजी..... !

जीवनलाल – (निःश्वास छोड़कर) कभी-कभी चोट भी मरहम का काम कर जाती है, बेटा (राजेश्वरी की ओर मुड़कर) अरे, खड़ी-खड़ी हमारा मुँह क्या ताक रही हो? अन्दर जाकर तैयारी क्यों नहीं करती? बहू की विदा नहीं करनी है क्या?

(कमला का हाथ पर्दे की ओट में हो जाता है। वह हर्ष से आँसू पोंछती हुई शीघ्रता से अन्दर जाती है। रमेश और प्रमोद मुस्कुराकर एक-दूसरे की ओर देखते हैं। जीवनलाल मन्द गति से खिड़की की ओर बढ़ते हैं और तभी धीरे-धीरे यवनिका गिरती है।)

अभ्यास

I. 'बहु की विदा' एकांकी का सारांश लिखिए।

'बहु की विदा' एक सामाजिक एकांकी है। यह एकांकी विनोद रस्तोगी का है। उन्होंने इस एकांकी में यह कहा है कि बेटी और बहू में अंतर नहीं होना चाहिए। दोनों को समान रूप से देखना चाहिए। समाज में प्रचलित दहेज प्रथा की कठोरता की ओर उन्होंने हमारा ध्यान आकर्षित किया है।

प्रमोद अपनी बहन कमला को पहले सावन पर अपने घर ले जाने आता है। लेकिन कमला के ससुर जीवनलाल कमला को नहीं भेजते। वे कहते हैं कि दहेज की रकम पाँच हज़ार बाकी है, उसे देकर कमला को ले जाओ।

प्रमोद गिड़गिड़ाता है, फिर भी जीवनलाल राजी नहीं होते। आखिर प्रमोद कमला से कहता है कि वह अपना मकान बेचेगा और पाँच हज़ार रुपये देकर उसको ले जाएगा। इतने में कमला की सास राजेश्वरी आती है। वह प्रमोद को पाँच हज़ार देने तैयार होती है।

इसी समय कमला का पति रमेश आता है। वह अपनी बहन गौरी को पहले सावन पर ले आने गया था। लेकिन उसके साथ गौरी नहीं आयी। रमेश कहता है कि दहेज की कमी के कारण उसकी विदाई नहीं हुई।

अब जीवनलाल की आँखें खुलती है। उनको मालूम होता है कि बेटी और बहू में भेद नहीं है। वे कमला को प्रमोद के साथ भेजते हैं।

II. निम्नलिखित पात्रों का परिचय दीजिए।

1. जीवनलाल

जीवनलाल 'बहु की विदा' एकांकी का प्रमुख पात्र है। एकांकी की कथा-वस्तु का आधार जीवनलाल की धन-लोलुपता ही है। अंत में जीवनलाल के मनःपरिवर्तन द्वारा एकांकी का उद्देश्य पूरा होता है।

जीवनलाल रमेश और गौरी के पिता हैं। रमेश की शादी में जीवनलाल बहुत दहेज चाहते थे। कमला के भाई प्रमोद ने दहेज तो दिया है, पर पाँच हज़ार रुपये बाकी रह जाता है। जीवनलाल का लालची मन यह सह नहीं पाता। जब प्रमोद अपनी बहन को पहले सावन पर अपने घर ले जाने आता है, वे साफ़-साफ़ कह देते हैं कि पहले पाँच हज़ार सौंपे जाएँ, उसके बाद कमला की विदाई होगी।

जीवनलाल की भी बेटी है, उसका नाम गौरी है। उसकी भी शादी हो गयी थी, पहले सावन पर जीवनलाल अपनी बेटी के आने की बड़ी प्रतीक्षा में थे।

कमला की विदाई जिस कारण से नहीं होती, उसी कारण से जीवनलाल की बेटी गौरी की भी विदा नहीं हुई। तभी उनको शराफ़त, इनसानियत आदि चीज़ें याद आती हैं। उन्हें गहरी चोट लगती है। इसी चोट का परिणाम उनका मन परिवर्तन है। वे मानते हैं कि बेटी और बहू में भेद नहीं है। वे कमला को उसके भाई के साथ भेजते हैं।

2. राजेश्वरी

राजेश्वरी 'बहू की विदा' एकांकी का प्रमुख पात्र है। वह जीवनलाल की पत्नी और रमेश की माँ है। आम तौर पर सास अपनी बहू के विषय में काफ़ी कठोर रहा करती है। लेकिन राजेश्वरी इसका अपवाद है। राजेश्वरी ममता की मूर्ति है।

हर माँ जानती है कि बहू भी किसी माँ की बेटी है। जैसे राजेश्वरी गौरी की राह देखती है वैसे ही कमला की माँ भी कमला की राह देख रही होगी। इसलिए वह प्रमोद को अपनी ओर से पाँच हज़ार देने को तैयार होती है।

राजेश्वरी अपने पति जीवनलाल के लालची स्वभाव को पसंद नहीं करती। अंत में जीवनलाल के मन में जो परिवर्तन होता है, उसका कारण राजेश्वरी ही है।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए।

1. जीवनलाल ने कमला की विदा क्यों नहीं की?
   दहेज की रकम पाँच हज़ार रुपये बाकी थी। इसलिए जीवनलाल ने कमला की विदा नहीं की।
2. कमला की सास राजेश्वरी कैसी औरत थी?
   कमला की सास राजेश्वरी ममता की मूर्ति थी।
3. कमला का पति रमेश कहाँ गया था?
   कमला का पति रमेश अपनी बहन गौरी को पहले सावन पर ले आने गया था।

II. निम्नलिखित पात्रों का परिचय दीजिए।

1. जीवनलाल

जीवनलाल 'बहु की विदा' एकांकी का प्रमुख पात्र है। एकांकी की कथा-वस्तु का आधार जीवनलाल की धन-लोलुपता ही है। अंत में जीवनलाल के मनःपरिवर्तन द्वारा एकांकी का उद्देश्य पूरा होता है।

जीवनलाल रमेश और गौरी के पिता हैं। रमेश की शादी में जीवनलाल बहुत दहेज चाहते थे। कमला के भाई प्रमोद ने दहेज तो दिया है, पर पाँच हज़ार रुपये बाकी रह जाता है। जीवनलाल का लालची मन यह सह नहीं पाता। जब प्रमोद अपनी बहन को पहले सावन पर अपने घर ले जाने आता है, वे साफ़-साफ़ कह देते हैं कि पहले पाँच हज़ार सौंपे जाएँ, उसके बाद कमला की विदाई होगी।

जीवनलाल की भी बेटी है, उसका नाम गौरी है। उसकी भी शादी हो गयी थी, पहले सावन पर जीवनलाल अपनी बेटी के आने की बड़ी प्रतीक्षा में थे।

कमला की विदाई जिस कारण से नहीं होती, उसी कारण से जीवनलाल की बेटी गौरी की भी विदा नहीं हुई। तभी उनको शराफ़त, इनसानियत आदि चीज़ें याद आती हैं। उन्हें गहरी चोट लगती है। इसी चोट का परिणाम उनका मन परिवर्तन है। वे मानते हैं कि बेटी और बहू में भेद नहीं है। वे कमला को उसके भाई के साथ भेजते हैं।

2. राजेश्वरी

राजेश्वरी 'बहू की विदा' एकांकी का प्रमुख पात्र है। वह जीवनलाल की पत्नी और रमेश की माँ है। आम तौर पर सास अपनी बहू के विषय में काफ़ी कठोर रहा करती है। लेकिन राजेश्वरी इसका अपवाद है। राजेश्वरी ममता की मूर्ति है।

हर माँ जानती है कि बहू भी किसी माँ की बेटी है। जैसे राजेश्वरी गौरी की राह देखती है वैसे ही कमला की माँ भी कमला की राह देख रही होगी। इसलिए वह प्रमोद को अपनी ओर से पाँच हज़ार देने को तैयार होती है।

राजेश्वरी अपने पति जीवनलाल के लालची स्वभाव को पसंद नहीं करती। अंत में जीवनलाल के मन में जो परिवर्तन होता है, उसका कारण राजेश्वरी ही है।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए।

1. जीवनलाल ने कमला की विदा क्यों नहीं की?
   दहेज की रकम पाँच हज़ार रुपये बाकी थी। इसलिए जीवनलाल ने कमला की विदा नहीं की।
2. कमला की सास राजेश्वरी कैसी औरत थी?
   कमला की सास राजेश्वरी ममता की मूर्ति थी।
3. कमला का पति रमेश कहाँ गया था?
   कमला का पति रमेश अपनी बहन गौरी को पहले सावन पर ले आने गया था।

4. जीवनलाल क्यों बेचैन हुए?

दहेज पूरा न देने के कारण गौरी की विदाई नहीं हुई। यह बात सुनकर जीवनलाल बेचैन हुए।

IV. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

1. मेरे नाम जो धब्बा लगा, मेरी शान को जो ठेस पहुँची, भरी बिरादरी में जो हँसी हुई, उस करारी चोट का घाव आज भी हरा है।

संदर्भः- यह वाक्य 'बहू की विदा' नामक एकांकी से दिया गया है। एकांकीकार श्री विनोद रस्तोगी हैं। प्रमोद जब अपनी बहन कमला को पहले सावन पर घर ले जाने आता है तब जीवनलाल प्रमोद से यह वाक्य कहते हैं।

व्याख्याः- जीवनलाल का विचार है कि कमला की शादी के समय बारातियों का उचित आदर नहीं हुआ। इस कारण उनकी बिरादरी में उनका अपमान हुआ। इस चोट को वे भूल नहीं सकते।

विशेषताः- इसमें जीवनलाल के लालची स्वभाव को दर्शाया गया है।

2. इन मोतियों का मूल्य समझनेवाला यहाँ कोई नहीं है। पानी से पत्थर नहीं पिघल सकता।

संदर्भः- ये वाक्य 'बहू की विदा' नामक एकांकी से दिये गये हैं। एकांकीकार श्री विनोद रस्तोगी हैं। प्रमोद अपनी बहन कमला से इस तरह कहता है।

व्याख्याः- जीवनलाल कहते हैं कि दहेज की बाकी रकम पाँच हज़ार रुपये देने के बाद कमला को ले जाओ। यह सुनकर कमला रोती है। तब प्रमोद कहता है कि इन लोगों का मन पत्थर बन गया है। ये तुम्हारे आँसू जैसे मोतियों का महत्व नहीं जानते।

विशेषताः- कठोर हृदयवालों में करुणा भाव दिखायी नहीं देता। उसका उल्लेख इसमें है।

3. माँ से झूठ बोलते हो! मैं उन्हें अच्छी तरह जानती हूँ। इन्सान से ज़्यादा प्यारा उन्हें पैसा है।

संदर्भः- ये वाक्य 'बहू की विदा' नामक एकांकी से दिये गये हैं। एकांकीकार श्री विनोद रस्तोगी हैं। राजेश्वरी प्रमोद से इस तरह कहती है।

व्याख्याः- राजेश्वरी प्रमोद से पूछती है कि कमला की विदा के बारे में जीवनलाल ने क्या कहा। प्रमोद जवाब देने को हिचकता है, तो राजेश्वरी समझ लेती है। अपने पति की धन-लोलुपता वह अच्छी तरह जानती है। वह कहती है कि जीवनलाल इन्सान से उतना प्यार नहीं करते जितना पैसे से करते हैं।

विशेषताः- इसमें राजेश्वरी के मातृहृदय एवं न्याय स्वभाव का परिचय मिलता है।

* * * * *

2. रीढ़ की हड्डी

पात्र-परिचय

उमा	-	लड़की
प्रेमा	-	लड़की की माँ
रामस्वरूप	-	लड़की के पिता
शंकर	-	लड़का
गोपालप्रसाद	-	लड़के के पिता
रतन	-	नौकर

[मामूली तरह से सजा हुआ एक कमरा। अन्दर के दरवाजे से आते हुए जिन महाशय की पीठ नज़र आ रही है, वे अधेड़ उम्र के मालूम होते हैं, एक तख्त को पकड़े हुए पीछे की ओर चलते-चलते कमरे में आते हैं। तख्त का दूसरा सिरा उनके नौकर ने पकड़ रखा है।]

बाबू–अबे, धीरे-धीरे चल। .....अब तख्त को उधर मोड़ दे....उधर। ....बस, बस।

नौकर– बिछा दूँ साहब?

बाबू–(जरा तेज़ आवाज़ में) और क्या करेगा? परमात्मा के यहाँ अक्ल बँट रही थी तो तू देर से पहुंचा था? .....बिछा हूँ साहब! .....और यह पसीना किस लिए बहाया है?

नौकर–(तख्त बिछाता है।) ही-ही-ही।

बाबू–हँसता क्यों है? .....अबे, हमने भी जवानी में कसरतें की हैं। कलसों से नहाता था लोटों की तरह। यह तख्त क्या चीज़ है? ......उसे सीधा कर......यो......हाँ, बस। ....और सुन, बहू जी से दरी माँग ला, इसके ऊपर बिछाने के लिए। ....चद्दर भी, कल जो धोबी के यहाँ से आई है, वही।

नौकर जाता है। बाबू साहब इस बीच में मेज़पोश ठीक करते हैं। एक झाड़न से गुलदस्ते को साफ करते हैं। कुर्सियों पर भी दो-चार हाथ लगाते हैं, सहसा घर की मालकिन प्रेमा आती है। गंदुमी रंग, छोटा कद। चेहरे और आवाज़ से जाहिर होता है कि किसी काम में बहुत व्यस्त हैं। उनके पीछे-पीछे भीगी बिल्ली की तरह नौकर आ रहा है-खाली हाथ। बाबू साहब रामस्वरूप दोनों की तरफ देखते हैं।

प्रेमा–मैं कहती हूँ, तुम्हें इस वक्त धोती की क्या जरूरत पड़ गई? एक तो वैसे ही जल्दी-जल्दी में....

रामस्वरूप–धोती?

प्रेमा–हाँ, अभी तो बदल कर आये हो, और फिर न जाने किस लिए...

राम–लेकिन तुमसे धोती माँगी किसने?

प्रेमा–यही तो कह रहा था रतन।

राम–क्यों बे रतन, तेरे कानों में डाट लगी है क्या? मैंने कहा था-धोबी के यहाँ से जो चद्दर आई है, उसे माँग ला ...अब तेरे लिए दूसरा दिमाग कहाँ से लाऊँ? उल्लू कहीं का।

प्रेमा–अच्छा, जा, पूजावाली कोठरी में लकड़ी के बक्स के ऊपर धुले हुए कपड़े रक्खे हैं न? उन्हीं में से एक चद्दर उठा ला।

रतन–और दरी?

प्रेमा–दरी यहीं तो रक्खी है, कोने में। वह पड़ी तो है।

राम– (दरी उठाते हुए) और बीबी जी के कमरे में से हारमोनियम उठा ला, और सितार भी..जल्दी जा।

(रतन जाता है। पति-पत्नी तख्त पर दरी बिछाते हैं।)

प्रेमा–लेकिन वह तुम्हारी लाडली बेटी तो मुँह फुलाये पड़ी

राम–मुँह फुलाये।..और तुम उसकी माँ, किस मर्ज की दवा हो? जैसे-तैसे करके तो वे लोग पकड़ में आये हैं। अब तुम्हारी बेवकूफी से सारी मेहनत बेकार जाय तो मुझे दोष मत देना।

प्रेमा–तो मैं ही क्या करूँ? सारे जतन करके तो हार गई। तुम्हीं ने उसे पढ़ा-लिखाकर इतना सिर चढ़ा रक्खा है। मेरी समझ में तो ये पढ़ाई-लिखाई के जंजाल आते नहीं। अपना जमाना अच्छा था। 'आ ई' पढ़ ली, गिनती सीख ली और बहुत हुआ तो 'स्त्री-सुबोधिनी' पढ़ ली। सच पूछो तो स्त्री-सुबोधिनी में ऐसी-ऐसी बातें लिखी हैं, ऐसी बातें कि क्या तुम्हारी बी.ए.एम.ए., की पढ़ाई होगी। और आजकल के तो लच्छन ही अनोखे हैं–

राम–ग्रामफोन बाजा होता है न?

प्रेमा–क्यों?

राम–दो तरह का होता है। एक तो आदमी का बनाया हुआ। उसे एक बार चलाकर जब चाहे रोक लो। और दूसरा परमात्मा का बनाया हुआ। उसका रिकार्ड एक बार चढ़ा तो रुकने का नाम नहीं।

प्रेमा–हटो भी। ठठोली ही सूझती रहती है। यह तो होता नहीं कि उस अपनी उमा को राह पर लाते। अब देर ही कितनी रही है, उन लोगों के आने में।

राम-तो हुआ क्या?

प्रेमा–तुम्हीं ने तो कहा था कि जरा ठीक-ठाक करके नीचे लाना। आजकल तो लड़की कितनी ही सुन्दर हो, बिना टीमटाम के भला कौन पूछता है? इसी मारे मैंने तो पौडर-बौडर उसके सामने रक्खा था। पर उसे तो इन चीजों से न जाने किस जन्म की नफ़रत है। मेरा कहना था कि

आँचल में मुँह लपेटकर लेट गई। भई, मैं तो बाज आई तुम्हारी इस लड़की से।

राम-न जाने कैसा इसका दिमाग है। वरना आजकल की लड़कियों के सहारे तो पौडर का कारबार चलता है।

प्रेमा–अरे, मैंने तो पहले ही कहा था। इंट्रेंस ही पास करा देते-लड़की अपने हाथ रहती, और इतनी परेशानी न उठानी पड़ती! पर तुम तो राम.-(बात काटकर) चुप, चुप।....(दरवाजे में झाँकते हुए) तुम्हें कतई अपनी ज़बान पर काबू नहीं है। कल ही यह बता दिया था कि उन लोगों के सामने जिक्र और ढंग से होगा। मगर तुम तो अभी से सब-कुछ उगले देती हो। उनके आने तक तो न जाने क्या हाल करोगी।

प्रेमा–अच्छा बाबा, मैं न बोलूंगी। जैसी तुम्हारी मर्जी हो, करना। बस, मुझे तो मेरा काम बता दो।

राम-तो उमा को जैसे हो तैयार कर लो। न सही पौडर। वैसे कौन बुरी है। पान लेकर भेज देना उसे, और, नाश्ता तो तैयार है न? (रतन का आना) आ गया रतन। ... इधर ला, इधर। बाजा नीचे रख दे। चद्दर खोल। पकड़ा तो जरा इधर से। चिद्दर बिछाते हैं।

प्रेमा–नाश्ता तो तैयार है। मिठाई तो वे लोग ज्यादा खायेंगे नहीं। कुछ नमकीन चीजें बना दी हैं। फल रक्खे हैं ही। चाय तैयार है, और टोस्ट भी। मगर हाँ, मक्खन? मक्खन तो आया ही नहीं।

राम-क्या कहा? मक्खन नहीं आया? तुम्हें भी किस वक्त याद आई है। जानती हो कि मक्खन वाले की दूकान दूर है, पर तुम्हें तो ठीक वक्त पर कोई बात सूझती ही नहीं। अब बताओ, रतन मक्खन लाये कि यहाँ का काम करे। दफ्तर के चपरासी से कहा था आने के लिए सो नखरों के मारे.....

प्रेमा यहाँ का काम कौन ज्यादा है? कमरा तो सब ठीक-ठाक है ही। बाजा-सितार आ ही गया। नाश्ता यहाँ कमरे में ट्रे में रक्खा हुआ है, सो तुम्हें पकड़ा दूँगी। एकाध चीज़ खुद ले आना। इतनी देर में रतन मक्खन ले ही आयेगा।-दो आदमी ही तो हैं?

राम-हाँ, एक तो बाबू गोपालप्रसाद और दूसरा खुद लड़का है। देखो, उमा से कह देना कि जरा क़रीने से आये। ये लोग ज़रा ऐसे ही हैं। गुस्सा तो मुझे बहुत आता है इनके दकियानूसी खयालों पर। खुद पढ़े-लिखे हैं, वकील हैं, सभा-सोसाइटियों में जाते हैं, मगर लड़की चाहते हैं ऐसी कि ज्यादा पढ़ी-लिखी न हो।

प्रेमा–और लड़का?

राम–बताया तो था तुम्हें। बाप सेर है तो लड़का सवा सेर। बी.एस.सी. के बाद लखनऊ में ही तो पढ़ता है, मेडिकल कालेज में। कहता है कि शादी का सवाल दूसरा है, तालीम का दूसरा। क्या करूँ, मजबूरी है। मतलब अपना है वरना इन लड़कों और इनके बापों को ऐसी कोरी-कोरी सुनाता कि ये भी...।

रतन–(जो अब तक दरवाजे के पास चुपचाप खड़ा हुआ था, जल्दी-जल्दी) बाबू जी, बाबू जी!

राम-क्या है?

रतन–कोई आते हैं।

राम-(दरवाजे से बाहर झाँककर जल्दी मुँह अन्दर करते हुए) अरे, ए.... प्रेमा, वे आ भी गये। (नौकर पर नज़र पड़ते ही) अरे, तू यहीं खड़ा है, बेवकूफ। गया नहीं मक्खन लाने?....सब चौपट कर दिया। ....अबे उधर से नहीं, अन्दर के दरवाजे से जा (नौकर अन्दर जाता है) और तुम जल्दी करो प्रेमा। उमा को समझा देना, थोड़ा-सा गा देगी।

(प्रेमा जल्दी से अन्दर की तरफ आती है। उसकी धोती जमीन पर रखे हुए बाजे से अटक जाती है।)

प्रेमा–ऊँह। यह बाजा नीचे ही रख गया है, कमबख्त।

राम–तुम जाओ, मैं रखे देता हूँ। ....जल्दी।

(प्रेमा जाती है। बाबू रामस्वरूप बाजा उठाकर रखते हैं। किवाड़ों पर दस्तक।)

राम-हँ-हँ-हँ। आइए, आइए। ...हैं-हँ-हैं।

(बाबू गोपालप्रसाद और उनके लड़के शंकर का आना। आँखों से लोक-चतुराई टपकती है। आवाज़ से मालूम होता है कि काफी अनुभवी और फितरती महाशय हैं। उनका लड़का कुछ खीस निपोरने वाले नौजवानों में से है। आवाज पतली है और खिसियाहट-भरी। झुकी कमर इनकी खासियत है।)

राम-(अपने दोनों हाथ मलते हुए) हैं-हँ, इधर तशरीफ लाइए..... इधर....।

(बाबू गोपालप्रसाद बैठते हैं, मगर बेंत गिर पड़ता है।)

राम- यह बेंत!.....लाइये मुझे दीजिए। (कोने में रख देते हैं। सब बैठते हैं) हैं-हँ...मकान

ढूँढ़ने में कुछ तकलीफ़ तो नहीं हुई?

गोपाल–(खखारकर) नहीं। ताँगेवाला जानता था। ...और फिर हमें तो यहाँ आना ही था। रास्ता मिलता कैसे नहीं?

राम-हँ-हँ-हँ। यह तो आपकी बड़ी मेहरबानी है। मैंने आपको तकलीफ़ तो दी

गोपाल–अरे नहीं साहब! जैसा मेरा काम वैसा आपका काम। आखिर लड़के की शादी तो करनी ही है। बल्कि यों कहिए कि मैंने आपके लिए काफ़ी न दे दी।

राम-हँ-हैं-हँ! यह लीजिए, आप तो मुझे काँटों में घसीटने लगे। हम तो आपके-हँ-ह-सेवक ही हैं हैं-हँ! (थोड़ी देर बाद लड़के की ओर मुखातिब होकर) और कहिए, शंकर बाबू, कितने दिनों की और छुट्टियाँ हैं?

शंकर–जी, कालिज की तो छुट्टियाँ नहीं हैं। 'वीक एण्ड' में चला आया था।

राम–तो आपके कोर्स खत्म होने में तो अब साल-भर रहा होगा?

शंकर–जी, यही कोई साल दो साल।

राम–साल दो साल?

शंकर–हँ-हँ-हैं......जी, एकाध साल का 'मार्जिन' रखता हूँ....

गोपाल–बात यह है साहब कि यह शंकर एक साल बीमार हो गया था। क्या बताएँ, इन लोगों को इसी उम्र में सारी बीमारियाँ सताती हैं। एक हमारा जमाना था कि स्कूल से आकर दर्जनों कचौड़ियाँ उड़ा जाते थे, मगर फिर जो खाना खाने बैठते तो वैसी ही भूख।

राम– कचौड़ियाँ भी तो उस जमाने में पैसे की दो आती थीं।

गोपाल–जनाब, यह हाल था कि चार पैसे में ढेर-सी बालाई आती थी और अकेले दो आने की हज़म करने की ताक़त थी, और अब तो बहुतेरे खेल वगैरह भी होते हैं स्कूल में। तब न कोई वॉलीबाल जानता था, न टेनिस, न बैडमिण्टन। बस, कभी हॉकी या कभी क्रिकेट कुछ लोग खेला करते थे। मगर मजाल कि कोई कह जाय कि यह लड़का कमजोर है।

(शंकर और रामस्वरूप खीसें निपोरते हैं।)

राम–जी हाँ, जी हाँ, उस जमाने की बात ही दूसरी थी–

गोपाल-(जोशीली आवाज में) और पढ़ाई का यह हाल था कि एक बार कुर्सी पर बैठे कि बारह घंटे की 'सिटिंग' हो गई, बारह घंटे! जनाब, मैं सच कहता हूँ कि उस जमाने का मैट्रिक भी वह अंग्रेजी लिखता था फ़रटि की कि आजकल के एम.ए. भी मुकाबिला नहीं कर सकते।

राम- जी हाँ, जी हाँ ! यह तो है ही।

गोपाल-माफ़ कीजिएगा बाबू रामस्वरूप, उस जमाने की जब याद आती है, अपने को जब्त करना मुश्किल हो जाता है !

राम-हँ-हँ-हैं !......जी हाँ, वह तो रंगीन जमाना था, रंगीन जमाना ! हँ-हैं-हँ ?

(शंकर भी ही-हीं करता है।)

गोपाल-(एक साथ अपनी आवाज और तरीका बदलते हुए) अच्छा, तो, साहब, फिर 'बिजनेस' की बातचीत हो जाय।

राम-(चौंककर बिजनेस ? बिजि (समझकर) ओह.....अच्छा, अच्छा। लेकिन ज़रा नाश्ता तो कर लीजिए।

(उठते हैं)

गोपाल-यह सब आप क्या तकल्लुफ़ करते हैं ?

राम-हैं-हैं-हैं ! तकल्लुफ़ किस बात का ! हँ-हँ ! यह तो मेरी बड़ी तकदीर है कि आप मेरे यहाँ तशरीफ़ लाये। वरना मैं किस काबिल हूँ। हैं-हँ !...माफ़ कीजियेगा जरा। अभी हाजिर हुआ।

(अन्दर जाते हैं।)

गोपाल-(थोड़ी देर बाद दबी आवाज में) आदमी तो भला है, मकान-वकान से हैसियत भी बुरी नहीं मालूम होती। पता चले, लड़की कैसी है।

शंकर–जी...... (कुछ खखारकर इधर-उधर देखता है।)

गोपाल.-क्यों क्या हुआ ?

शंकर-कुछ नहीं।

गोपाल.-झुककर क्यों बैठते हो ? ब्याह तय करने आये हो, कमर सीधी करके बैठो। तुम्हारे दोस्त ठीक कहते हैं कि शंकर की 'बैकबोन'....

(इतने में बाबू रामस्वरूप आते हैं, हाथ में चाय की ट्रे लिये हुए मेज पर रख देते हैं।)

गोपाल.-आखिर आप माने नहीं।

राम.-(चाय प्याले में डालते हुए) हँ-हँ-हँ ! आपको विलायती चाय पसन्द है या हिन्दुस्तानी ?

गोपाल.-नहीं-नहीं साहब, मुझे आधा दूध और आधी चाय दीजिये और जरा चीनी ज्यादा डालिएगा। मुझे तो भाई यह नया फैशन पसन्द नहीं। एक तो वैसे ही चाय में पानी काफ़ी होता है, और फिर चीनी भी नाम को डाली जाय तो चाय का क्या रहेगा ? राम.-हँ-हँ, कहते तो आप सही हैं।

(प्याला पकड़ाते हैं।)

शंकर-(खखारकर) सुना है, सरकार अब ज्यादा चीनी लेने वालों पर 'टैक्स' लगाएगी।

गोपाल.-(चाय पीते हुए) हूँ। सरकार जो चाहे सो कर ले, पर अगर आमदनी करनी है तो सरकार को बस एक ही टैक्स लगाना चाहिए।

राम-(शंकर को प्याला पकड़ाते हुए) वह क्या?

गोपाल.-खूबसूरती पर टैक्स (रामस्वरूप और शंकर हँस पड़ते हैं।) मजाक नहीं साहब, यह ऐसा टैक्स है जनाब कि देनेवाले चूँ भी न करेंगे। बस, शर्त यह है कि हर एक औरत पर यह छोड़ दिया जाय कि वह अपनी खूबसूरती के 'स्टेन्डर्ड' के माफिक अपने ऊपर टैक्स तय कर ले। फिर देखिए, सरकार की कैसी आमदनी बढ़ती है।

राम-(जोर से हँसते हुए) वाह-वाह! खूब सोचा आपने! वाक़ई आजकल यह खूबसूरती का सवाल भी बेढब हो गया है। हम लोगों के जमाने में तो यह कभी उठता भी न था। (तश्तरी गोपालप्रसाद की तरफ बढ़ाते हैं।) लीजिए।

गोपाल–(समोसा उठाते हुए) कभी नहीं साहब, कभी नहीं।

राम–(शंकर की तरफ मुखातिब होकर) आपका क्या खयाल है शंकर बाबू?

शंकर–किस मामले में?

राम–यही कि शादी तय करने में खूबसूरती का हिस्सा कितना होना चाहिए।

गोपाल-(बीच में ही) यह बात दूसरी है बाबू रामस्वरूप, मैंने आपसे पहले भी कहा था, लड़की का खूबसूरत होना निहायत जरूरी है। कैसे भी हो, चाहे पाउडर वगैरह लगाये। चाहे वैसे ही। बात यह है कि हम-आप मान भी जायें, मगर घर की औरतें तो राजी नहीं होतीं। आपकी लड़की तो ठीक है?

राम-जी हाँ, वह तो अभी आप देख लीजिएगा।

गोपाल-देखना क्या! जब आपसे इतनी बातचीत हो चुकी है, तब तो यह रस्म ही समझिए।

राम-हँ-हँ वह तो आपका मेरे ऊपर भारी अहसान है। हँ-हँ!

गोपाल-और जायचा (जन्मपत्र) तो मिल ही गया होगा?

राम-जी, जायचे का मिलना क्या मुश्किल बात है। ठाकुर जी के चरणों में रख दिया। बस, खुद-ब-खुद मिला हुआ समझिए।

गोपाल-यह ठीक कहा आपने, बिल्कुल ठीक। (थोड़ी देर रुककर) लेकिन हाँ, यह जो मेरे

कानों में भनक पड़ी है, यह तो गलत है न?

राम-(चौंककर) क्या?

गोपाल- यही पढ़ाई-लिखाई के बारे में!......जी हाँ, साफ बात है साहब, हमें ज्यादा पढ़ी-लिखी लड़की नहीं चाहिये। मेम साहब तो रखनी नहीं, कौन भुगतेगा उनके नखरों को। बस, हद से हद मैट्रिक पास होनी चाहिए........क्यों शंकर?

शंकर–जी हाँ, कोई नौकरी तो करानी नहीं।

राम-नौकरी का तो सवाल ही नहीं उठता।

गोपाल-और क्या साहब! देखिए, कुछ लोग मुझसे कहते हैं कि जब आपने अपने लड़कों को बी.ए., एम.ए. तक पढ़ाया है तब उनकी बहुएँ भी ग्रैजुएट लीजिए। भला पूछिए इन अक्ल के ठेकेदारों से कि क्या लड़कों की पढ़ाई और लड़कियों की पढ़ाई एक बात है? अरे, मर्दो का काम तो है ही पढ़ना और क़ाबिल होना। अगर औरतें भी वही करने लगी, अंग्रेजी अखबार पढ़ने लगीं और 'पालिटिक्स' वगैरह पर बहस करने लगीं तब तो हो चुकी गृहस्थी। जनाब, मोर के पंख होते हैं, मोरनी के नहीं; शेर के बाल होते हैं, शेरनी के नहीं।

राम-जी हाँ, और मर्द की दाढ़ी होती है, औरतों की नहीं। ......हँ..हैं. हँ!

(शंकर भी हँसता है, मगर गोपालप्रसाद गम्भीर हो जाते हैं।)

गोपाल-हाँ, हाँ। वह भी सही है। कहने का मतलब यह है कि कुछ बातें दुनिया में ऐसी हैं जो सिर्फ मर्दो के लिए हैं और ऊँची तालीम भी ऐसी चीज़ों में से एक है।

राम-(शंकर से) चाय और लीजिए।

शंकर-धन्यवाद। पी चुका।

राम-(गोपालप्रसाद से) आप?

गोपाल-बस साहब, अब तो खत्म ही कीजिए।

राम-आपने तो कुछ खाया ही नहीं। चाय के साथ 'टोस्ट' नहीं थे। क्या बतायें, वह मक्खन...

गोपाल-नाश्ता ही तो करना था साहब, कोई पेट तो भरना था नहीं। और फिर टोस्ट-वोस्ट मैं खाता भी नहीं।

राम- हैं-हँ (मेज़ को एक तरफ सरका देते हैं। फिर अन्दर के दरवाजे की तरफ़ मुँह कर जरा जोर से) अरे, ज़रा पान भिजवा देना. ....सिगरेट मँगवाऊँ?

गोपाल- जी नहीं।

(पान की तश्तरी हाथों में लिए उमा आती है। सादगी के कपड़े। गर्दन झुकी हुई। बाबू गोपालप्रसाद आँखें गड़ाकर और शंकर आँखें छिपाकर उसे ताक रहे हैं।)

राम-हँ...हँ ! यही, हैं...हैं, आपकी लड़की है। लाओ बेटी, पान मुझे दो।

(उमा पान की तश्तरी अपने पिता को देती है। उस समय उसका चेहरा ऊपर को उठ जाता है और नाक पर रखा हुआ सोने की रिमवाला चश्मा दीखता है। बाप-बेटे चौंक उठते हैं।)

गोपालप्रसाद और शंकर.-(एक साथ) चश्मा ! !

राम-(जरा सकपकाकर) जी, वह तो....वह.....पिछले महीने में इसकी आँखें दुखनी आ गई थीं, सो कुछ दिनों के लिए चश्मा लगाना पड़ रहा है।

गोपाल-पढ़ाई-वढ़ाई की वजह से तो नहीं है कुछ ?

राम-नहीं साहब, वह तो मैंने अर्ज किया न।

गोपाल-हूँ (सन्तुष्ट होकर कुछ कोमल स्वर में) बैठो बेटी।

राम- यहाँ बैठ जाओ उमा, उस तख्त पर, अपने बाजे-वाजे के पास।

(उमा बैठती है।)

गोपाल-चाल में तो कुछ खराबी है नहीं। चेहरे पर भी छवि है। .....हाँ, कुछ गाना-बजाना सीखा है ?

राम-जी हाँ, सितार भी, और बाजा भी। सुनाओ तो उमा एकाध गीत सितार के साथ।

(उमा सितार उठाती है। थोड़ी देर बाद मीरा का मशहूर गीत 'मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई' गाना शुरू कर देती है। स्वर से जाहिर है कि गाने का अच्छा ज्ञान है। उसके स्वर में तल्लीनता आ जाती है, यहाँ तक कि उसका मस्तक उठ जाता है। उसकी आँखें शंकर की झेंपती-सी आँखों से मिल जाती हैं और वह गाते-गाते एक साथ रुक जाती है।)

राम-क्यों, क्या हुआ ? गाने को पूरा करो उमा।

गोपाल-नहीं-नहीं साहब, काफी है। लड़की आपकी अच्छा गाती है।

(उमा सितार रखकर अंदर जाने को उठती है।)

गोपाल-अभी ठहरो, बेटी।

राम-थोड़ा और बैठी रहो, उमा ! (उमा बैठती है।)

गोपाल-(उमा से) तो तुमने पेंटिंग-वेंटिंग भी सीखी है ?

उमा.-(चुप)

राम- हाँ, वह तो मैं आपको बताना भूल ही गया। यह जो तस्वीर टँगी हुई है, कुत्तेवाली, इसी ने खींची है। और वह उस दीवार पर भी।

गोपाल-हूँ ! यह तो बहुत अच्छा है। और सिलाई वगैरह ?

राम-सिलाई तो सारे घर की इसी के जिम्मे रहती है, यहाँ तक कि मेरी कमीजें भी। हँ..हॅं..।

गोपाल-ठीक।.....लेकिन, हाँ बेटी, तुमने कुछ इनाम-विनाम भी जीते हैं ?

(उमा चुप। रामस्वरूप इशारे के लिए खाँसते हैं। लेकिन उमा चुप है उसी तरह गर्दन झुकाये। गोपालप्रसाद अधीर हो उठते हैं और रामस्वरूप सकपकाते हैं।)

राम-जवाब दो, उमा। (गोपाल से) हँ...हँ, जरा शरमाती है, इनाम तो इसने....

गोपाल-(जरा रूखी आवाज में) जरा इसे भी तो मुँह खोलना चाहिए।

राम-उमा, देखो, आप क्या कह रहे हैं। जवाब दो न।

उमा.-(हल्की लेकिन मजबूत आवाज़ में) क्या जवाब दूँ बाबू जी। जब कुर्सी-मेज बिकती है तब दूकानदार कुर्सी-मेज से कुछ नहीं पूछता, सिर्फ खरीददार को दिखला देता है। पसन्द आ गई तो अच्छा है, वरना......

राम-(चौंककर खड़े हो जाते हैं।) उमा, उमा !

उमाः- अब मुझे कह लेने दीजिए बाबू जी। .....ये जो महाशय मेरे खरीददार बनकर आये हैं, इनसे जरा पूछिए कि क्या लड़कियों का दिल नहीं होता ? क्या उनको चोट नहीं लगती ? क्या वे बेवस भेड़-बकरियाँ हैं, जिन्हें कसाई अच्छी तरह देख-भालकर खरीदते हैं ?

गोपालः- (ताब में आकर) बाबू रामस्वरूप, आपने मेरी इज्जत उतारने के लिए मुझे यहाँ बुलाया था ?

उमाः- (तेज़ आवाज़ में) जी हाँ, और हमारी बेइज्जती नहीं होती जो आप इतनी देर से नाप-तोल कर रहे हैं ? और जरा अपने इन साहबजादे से पूछिए कि अभी पिछली फरवरी में ये लड़कियों के होस्टल के इर्द-गिर्द क्यों घूम रहे थे, और वहाँ से कैसे भगाये गये थे !

शंकरः- बाबूजी, चलिए।

गोपालः- लड़कियों के हॉस्टल में ?.....क्या तुमने कालेज में पढ़ी है ?

रामस्वरूप- चुप !

उमाः- जी हाँ, मैंने कॉलेज में पढ़ी है। मैंने बी.ए. पास किया है। कोई पाप नहीं किया, कोई चोरी नहीं की, और न आपके पुत्र की तरह ताक-झाँककर कायरता दिखाई। मुझे अपनी इज्जत-

अपने मान का खयाल तो है। लेकिन इनसे पूछिए कि ये किस तरह नौकरानी के पैरों पड़कर अपना मुँह छिपाकर भागे थे।

रामः– उमा, उमा.... !

गोपालः– (खड़े होकर गुस्से में) बस, हो चुका। बाबू रामस्वरूप, आपने मेरे साथ दगा किया। आपकी लड़की बी.ए. पास है, और आपने मुझसे कहा था कि सिर्फ मैट्रिक तक पढ़ी है। लाइए, मेरी छड़ी कहाँ है। मैं चलता हूँ। (छड़ी ढूँढकर उठाते हैं।) बी.ए. पास? उफ़्फ़ोह! गज़ब हो जाता! झूठ का भी कुछ ठिकाना है। आओ बेटे, चलो.....

दरवाजे की ओर बढ़ते हैं।

उमाः– जी हाँ, जाइए, ज़रूर चले जाइए। लेकिन घर जाकर ज़रा यह पता लगाइएगा कि आपके लाड़ले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं-यानी बैकबोन, बैकबोन।

बाबू गोपालप्रसाद के चेहरे पर बेबसी का गुस्सा है और उनके लड़के का रुलासापन। दोनों बाहर चले जाते हैं। बाबू रामस्वरूप कुर्सी पर धम से बैठ जाते हैं। उमा सहसा चुप हो जाती है। लेकिन उसकी हँसी सिसकियों में तबदील हो जाती है। प्रेमा का घबराहट की हालत में आना।

प्रेमाः– उमा, उमा.....रो रही है? यह सुनकर रामस्वरूप खड़े होते हैं। रतन आता है।

रतनः बाबू जी मक्खन! (सब रतन की तरफ देखते हैं और पर्दा गिरता है।)

अभ्यास

I. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी का सारांश लिखिए।

रीढ़ की हड्डी एकांकी का लेखक जगदीश चंद्र माथुर जी हैं। यह एकांकी शादी ब्याह तय करने से पहले 'लड़की देखने की' प्रथा पर आधारित है। लेखक ने इस एकांकी के माध्यम से कहा है कि हम चाहे कितने भी पढ़े-लिखे हों कितने भी आधुनिक क्यों न हो, महिलाओं के प्रति हमारी सोच नहीं बदली है। लेखक ने स्त्री-शिक्षा के महत्व को भी समझाया है।

उमा को देखने के लिए गोपालप्रसाद और उनका लड़का शंकर आनेवाले हैं। उमा के पिता रामस्वरूप एवं उनका नौकर कमरे को सजाते हैं। नाश्ता आदि भी तैयार किया जा रहा है। उमा कॉलेज तक पढ़ी हुई है परंतु लड़केवालों को कम पढ़ी-लिखी लड़की ही चाहिए। इसलिए रामस्वरूप बताते हैं कि उमा दसवीं तक ही पढ़ी है। इस दौरान गोपालप्रसाद एवं शंकर आते हैं और 'बिजेनेस' यानी ब्याह के बारे में बात करते हैं।

उमा पढ़ी-लिखी है। सीधी-सादी लड़की है – फैशन के नाम पर पाउडर मैक-अप करके अपनी सुंदरता को बढ़ाना नहीं चाहती। उमा पान की तश्तरी लेकर रामस्वरूप और शंकर के सामने आती है। गोपालप्रसाद चश्मे पहने उमा को देखकर चौंकते हैं। क्योंकि उनके विचार में पढ़ी-लिखी लड़कियाँ ही चश्मा पहनती हैं।

रामस्वरूप द्वारा उमा के चश्मा लगाने की वजह को स्पष्ट कर देने से संतुष्ट हो जाते है। उमा को गाने के लिए मज़बूर करते हैं। उमा सितार उठाकर गीत सुनाते समय शंकर को देखती है। गाना आधी में समाप्त कर देती है। गोपालप्रसाद उसकी पेंटिंग-सिलाई के बारे में पूछते हैं। इसका उत्तर खुद रामस्वरूप देते हैं। इनाम जीतने के बारे में उमा से पूछते हैं, और उमा के मुँह से उत्तर पाने की आशा प्रकट करते हैं। उमा ऊँची आवाज़ में कहती है कि जब कुर्सी मेज़ बेची जाती है, तब दूकानदार मेज़ कुर्सी से कुछ नहीं पूछता है, सिर्फ़ खरीददार को दिखा देता है। गोपालप्रसाद क्रोधित होकर डाँटते हैं। उमा का आत्मसम्मान जाग उठता है और कहती है-"इतनी देर से आप मेरी नाप-तौल कर रहे हैं, इसमें मेरी बेइज्जती नहीं होती?" उमा सच्चाई को सबके सामने प्रकट करती है। पिछले साल में शंकर के लड़कियों के हॉस्टल के पास घूमने फिरने और भगाये जाने की राज़ खोलती है। गोपालप्रसाद गुस्से में आकर उमा की कालेज की पढ़ाई के बारे में पूछते हैं तो उत्तर देती है कि "हाँ मैंने बी.ए. तक पढ़ी है"। कोई चोरी नहीं की। आगे उमा, गोपालप्रसाद से कहती है, "घर जाकर अपने लड़के से पूछिए कि उनकी 'रीढ़ की हड्डी है कि नहीं"। इस एकांकी में उमा, संपूर्ण स्त्री जाति की प्रतिनिधि बनकर आयी है।

II. निम्नलिखित पात्रों का परिचय दीजिए।

1. गोपालप्रसाद

गोपालप्रसाद 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी के एक प्रमुख पात्र हैं। वे अपना पुत्र शंकर के लिए कम पढ़ी-लिखी लड़की की तलाश में रहते हैं। वे वकील हैं और उन्हें अपने पेशे का गर्व भी है। शिक्षा का महत्व जानते हैं लेकिन रूढ़िवादी विचारवाले व्यक्ति हैं। इसलिए अपने बेटे शंकर का विवाह कम पढ़ी-लिखी लड़की से करना चाहते हैं।

वे एक चतुर व्यक्ति हैं। इसलिए चरित्रहीन पुत्र का विवाह कम पढ़ी-लिखी लड़की से करना चाहते हैं ताकि विवाह के बाद लड़के के प्रति लड़की अपनी आवाज़ न उठाए।

जब वे उमा को चश्मा पहने देखते हैं, शंका करते हैं कि शायद उमा पढ़ी-लिखी हो। रामस्वरूप जब चश्मा पहनने की वजह बताते हैं तो संतुष्ट हो जाते हैं।

अंत में जब उमा के मुँह से शंकर के चरित्र के बारे में जानकारी उन्हें मिलती है तब बेटे का समर्थन करते हुए उमा पर अपना क्रोध उतार देते हैं। शंकर की कमी को स्वीकार करने के लिए वे तैयार नहीं हैं, अपितु रामस्वरूप से बेइज़्ज़ती की शिकायत करते हैं। इस तरह गोपालप्रसाद को बड़बोले-लालची और स्त्री-पुरुष की समानता में अविश्वास रखनेवाले व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है।

2. उमा

उमा 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी का प्रमुख नारी पात्र है। वह रामस्वरूप की लाड़ली पुत्री है। पूरी एकांकी उमा के चरित्र पर आधारित है। इस एकांकी का उद्देश्य है-स्त्री-शिक्षा, स्त्रियों में आत्म-निर्भरता, स्वाभिमान एवं आत्म-विश्वास जगाना। उमा शिक्षित ही नहीं अपितु प्रगतिशील विचारवाली नारी है। किसी भी परिस्थिति में आत्म गौरव को छोड़ना नहीं चाहती।

उमा बनावटी-सुंदरता को पसंद नहीं करती। जब शंकर उसे देखने आता है तब पाउडर लगाना भी नहीं चाहती। वह सीधी-सादी लड़की है। पढ़ी-लिखी महिलाओं में ऐसा गुण विरले ही मिलता है। उमा पेंटिंग एवं संगीत में भी निपुण है। गोपालप्रसाद बार-बार उमा के बारे में प्रश्न करते हैं जो उमा को पसंद नहीं है। उमा सितार बजाती है, गाना गाती है। गोपालप्रसाद के नारी संबंधी विचारों से वह सहमत नहीं है। उमा "स्त्री और पुरुष को समान" माननेवाली युवती है। वह साहसी एवं बुद्धिमान लड़की है। समय आने पर शंकर के कुचरित्र की बात खोलकर बताती है। गोपालप्रसाद से कहती है कि अपने पुत्र की रीढ़ की हड्डी की जाँच करें, वह हमेशा स्त्रियों के हास्टल के आस-पास घूमता-फिरता है। रामस्वरूप को यद्यपि उमा के चरित्र पर गर्व है फिर भी विवाह के रुक जाने पर दुखी हैं। उमा के चरित्र से एकांकीकार यह कहना चाहते हैं कि स्त्रियों को शिक्षा अवश्य दिलाना है और उनके आत्म-विश्वास को बढ़ाना है। उनके साथ आदरपूर्वक व्यवहार करना चाहिए। इस एकांकी में उमा नारी समुदाय का प्रतिनिधित्व करती है।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए।

1. 'रीढ़ की हड्डी' किस प्रकार का एकांकी है?

   रीढ़ की हड्डी सामाजिक व्यंग तथा आदर्शवादी एकांकी है।

2. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी का 'शंकर' कैसा पात्र है?

   शंकर दुर्बल एवं चरित्र-हीन पात्र है। स्त्रियों के संबंध में उसका विचार सही नहीं हैं। वह स्व-लाभ प्रधान चरित्र है।

3. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में 'उमा' पहले कुछ बोलने के लिए क्यों मना करती है?

   उमा का कहना है कि जिस तरह कोई चीज़ खरीदने जाते हैं तब वह चीज़ कुछ नहीं कहती। यहाँ उमा की स्थिति भी निर्जीव चीज़ जैसी है। इसलिए वह नहीं बोलती।

4. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी का उद्देश्य क्या है।

   औरतों की दशा को सुधारना एवं उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करना, स्त्री शिक्षा की अनिवार्यता एवं बोलने के अधिकार पर बताना 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी का उद्देश्य है।

IV. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

1. "बस, शर्त यह है कि हर एक औरत पर यह छोड़ दिया जाय कि वह अपनी खूबसूरती के 'स्टेन्डर्ड' के माफ़िक अपने ऊपर टेक्स तय कर लें।"

यह वाक्य 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी से लिया गया है। एकांकीकार जगदीश चंद्र माथुर हैं।

संदर्भ :- जगदीश चंद्र माथुर हिंदी के प्रसिद्ध लेखक एवं नाटककार थे। उनके सारे एकांकी जीवन के यथार्थ को चित्रित करते हैं। उनके नारी पात्र स्वतंत्र व्यक्तित्व रखते हैं, उन्होंने ही एआईआर (AIR) के लिए आकाशवाणी का नामकरण किया।

उमा बनावटी-सुंदरता को पसंद नहीं करती। जब शंकर उसे देखने आता है तब पाउडर लगाना भी नहीं चाहती। वह सीधी-सादी लड़की है। पढ़ी-लिखी महिलाओं में ऐसा गुण विरले ही मिलता है। उमा पेंटिंग एवं संगीत में भी निपुण है। गोपालप्रसाद बार-बार उमा के बारे में प्रश्न करते हैं जो उमा को पसंद नहीं है। उमा सितार बजाती है, गाना गाती है। गोपालप्रसाद के नारी संबंधी विचारों से वह सहमत नहीं है। उमा "स्त्री और पुरुष को समान" माननेवाली युवती है। वह साहसी एवं बुद्धिमान लड़की है। समय आने पर शंकर के कुचरित्र की बात खोलकर बताती है। गोपालप्रसाद से कहती है कि अपने पुत्र की रीढ़ की हड्डी की जाँच करें, वह हमेशा स्त्रियों के हास्टल के आस-पास घूमता-फिरता है। रामस्वरूप को यद्यपि उमा के चरित्र पर गर्व है फिर भी विवाह के रुक जाने पर दुखी हैं। उमा के चरित्र से एकांकीकार यह कहना चाहते हैं कि स्त्रियों को शिक्षा अवश्य दिलाना है और उनके आत्म-विश्वास को बढ़ाना है। उनके साथ आदरपूर्वक व्यवहार करना चाहिए। इस एकांकी में उमा नारी समुदाय का प्रतिनिधित्व करती है।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए।

1. 'रीढ़ की हड्डी' किस प्रकार का एकांकी है?
   रीढ़ की हड्डी सामाजिक व्यंग तथा आदर्शवादी एकांकी है।
2. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी का 'शंकर' कैसा पात्र है?
   शंकर दुर्बल एवं चरित्र-हीन पात्र है। स्त्रियों के संबंध में उसका विचार सही नहीं हैं। वह स्व-लाभ प्रधान चरित्र है।
3. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में 'उमा' पहले कुछ बोलने के लिए क्यों मना करती है?
   उमा का कहना है कि जिस तरह कोई चीज़ खरीदने जाते हैं तब वह चीज कुछ नहीं कहती। यहाँ उमा की स्थिति भी निर्जीव चीज़ जैसी है। इसलिए वह नहीं बोलती।
4. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी का उद्देश्य क्या है।
   औरतों की दशा को सुधारना एवं उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करना, स्त्री शिक्षा की अनिवार्यता एवं बोलने के अधिकार पर बताना 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी का उद्देश्य है।

IV. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

1. "बस, शर्त यह है कि हर एक औरत पर यह छोड़ दिया जाय कि वह अपनी खूबसूरती के 'स्टेन्डर्ड' के माफ़िक अपने ऊपर टैक्स तय कर लें।"

यह वाक्य 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी से लिया गया है। एकांकीकार जगदीश चंद्र माथुर हैं।

संदर्भ :- जगदीश चंद्र माथुर हिंदी के प्रसिद्ध लेखक एवं नाटककार थे। उनके सारे एकांकी जीवन के यथार्थ को चित्रित करते हैं। उनके नारी पात्र स्वतंत्र व्यक्तित्व रखते हैं, उन्होंने ही एआईआर (AIR) के लिए आकाशवाणी का नामकरण किया।

उमा को देखने के लिए गोपालप्रसाद एवं शंकर आये हुए हैं। उनकी खातिरदारी की जा रही है। गोपालप्रसाद स्त्रियों के प्रति अपना विचार व्यक्त करते हुए ऐसा कहते हैं।

व्याख्या :- गोपालप्रसाद का कहना है अगर सरकार को अपना टैक्स बढ़ाना है, आमदनी बढ़ानी है तो हर एक औरत पर छोड़ देना है। हर एक औरत से कहना है कि अपनी खूबसूरती के 'स्टेण्डर्ड' के मुताबिक अपने ऊपर टैक्स तय कर लें। उनका मानना है कि स्त्रियाँ बाहरी सौंदर्य पर अधिक ध्यान देती हैं। उसको बढ़ाने में अधिक समय बिता देती हैं। उसके मुताबिक अगर सरकार ने स्त्रियों के सौन्दर्य पर टैक्स लगा ली तो सरकार को ज्यादा आमदनी मिलेगी। यह स्त्रियों के प्रति गोपालप्रसाद की भावना सूचित करता है।

2. "जनाब, मोर के पंख होते हैं, मोरनी के नहीं, शेर के बाल होते हैं, शेरनी के नहीं।"

यह वाक्य 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी से लिया गया है। एकांकीकार जगदीश चंद्र माथुर हैं।

संदर्भ :- जगदीश चंद्र माथुर हिंदी के प्रसिद्ध लेखक एवं नाटककार थे। उनके सारे एकांकी जीवन के यथार्थ को चित्रित करते हैं। इनके नारी पात्र स्वतंत्र व्यक्तित्व रखते हैं, उन्होंने ही एआईआर (AIR) के लिए आकाशवाणी का नामकरण दिया।

उमा को देखने के लिए गोपालप्रसाद एवं शंकर आये हुए हैं। उनकी खातिरदारी की जा रही है। चाय पिला रहे हैं। गोपालप्रसाद स्त्रियों के प्रति अपना विचार व्यक्त करते हुए ऐसा कहते हैं।

व्याख्या :- गोपालप्रसाद मानते हैं कि मर्दों का काम ही पढ़ना एवं काबिल होना। स्त्रियों का काम गृहस्थी संभालना है। पढ़ाई एवं पालिटिक्स से दूर रहना ही उनके लिए अच्छा है। वे कहते हैं मोर के ही सुन्दर पंख है, मोरनी के नहीं। इसी प्रकार शेर की पीठ में ही बाल है, शेरनी की पीठ में नहीं। इसलिए पुरुष स्त्री से ऊँचा है।

3. "जब कुर्सी-मेज़ बिकती है तब दूकानदार कुर्सी-मेज़ से कुछ नहीं पूछता, सिर्फ़ खरीददार को दिखला देता है।"

यह वाक्य 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी से लिया गया है। एकांकीकार जगदीश चंद्र माथुर हैं।

संदर्भ :- जगदीश चंद्र माथुर हिंदी के प्रसिद्ध लेखक एवं नाटककार थे। उनके सारे एकांकी जीवन के यथार्थ को चित्रित करते हैं। इनके नारी पात्र स्वतंत्र व्यक्तित्व रखते हैं, उन्होंने ही एआईआर (AIR) के लिए आकाशवाणी का नामकरण दिया।

उमा की शादी के पहले उनको देखने के लिए गोपालप्रसाद एवं शंकर आते हैं। गोपालप्रसाद उमा के गुणों के बारे में एवं उनकी योग्यता के बारे में तरह-ताह के प्रश्न पूछते हैं। जब वे उमा के मुँह से कुछ बातें जानना चाहते हैं तब उमा इस प्रकार कहती है।

व्याख्या :- उमा का कहना है कि लड़कियों को अपने मन की बात कहने के लिए स्वतंत्रता नहीं दी जाती। जिस प्रकार कुर्सियाँ-मेज़ें बेची जाती हैं उसी प्रकार लड़कियाँ बेची जाती हैं। उनकी इच्छा-अनिच्छा के संबंध में कोई नहीं सोचता है। विवाह के संदर्भ में लड़कियाँ निष्प्राण वस्तु मात्र हैं।

* * * * *

3. अंधेर नगरी

– भारतेन्दु हरिश्चंद्र

पात्र–परिचय

महन्त : गुरु

नारायणदास : शिष्य

गोवर्धनदास

कुँजड़िन, हलवाई, राजा, फ़रियादी, कल्लू बनिया, कारीगर,

दृश्य-1

चूनेवाला, भिश्ती, कसाई, गड़रिया, कोतवाल, सिपाही

(स्थान : शहर से बाहर सड़क)

महन्तजी और दो चेले बातें कर रहे हैं

महन्त – बच्चा नारायणदास, यह नगर तो दूर से बड़ा सुन्दर दिखाई पड़ता है। देख, कुछ भिक्षा मिले तो भगवान को भोग लगे।

नारायणदास– गुरुजी महाराज, नगर तो बहुत ही सुन्दर है, पर भिक्षा भी सुन्दर मिले तो बड़ा आनन्द हो।

महन्त – बच्चा गोवर्धनदास, तू पश्चिम की ओर जा और नारायणदास पूर्व की ओर जाएगा।

(गोवर्धनदास जाता है)

बाज़ार में गोवर्धनदास एक साग-बाजी की दूकान के सामने खड़ा है।

गोवर्धनदास– (कुंजड़िन से) क्यों, भाजी क्या भाव है?

कुँजड़िन – बाबा जी, टके सेर।

गोवर्धनदास– सब भाजी टके सेर! वाह! बड़ा आनन्द है। यहाँ सभी चीज़ें टके सेर। (हलवाई के पास जाकर) क्यों भाई हलवाई, मिठाई क्या भाव।

हलवाई – टके सेर।

गोवर्धनदास– वाह! वाह! बड़ा आनन्द है। सब टके सेर। क्यों बच्चा, इस नगरी का नाम क्या है?

हलवाई – अंधेर नगरी।

गोवर्धनदास– और राजा का नाम क्या है?

हलवाई – अनबूझ राजा।

गोवर्धनदास– वाह ! वाह !

अंधेर नगरी अनबूझ राजा,
टके सेर भाजी, टके सेर खाजा।

हलवाई – तो बाबाजी, कुछ लेना हो ले लें।

गोवर्धनदास– बच्चा, भिक्षा माँगकर सात पैसा लाया हूँ, साढ़े तीन सेर मिठाई दे दे।

(महन्त जी और नारायणदास एक ओर से आते हैं और दूसरी ओर से गोवर्धनदास आता है।)

महन्त – बच्चा गोवर्धनदास, क्या भिक्षा लाया, गठरी तो भारी मालूम पड़ती है।

गोवर्धनदास– गुरुजी महाराज, सात पैसे भीख में मिले थे, उसी से साढ़े तीन सेर मिठाई मोल ली है।

महन्त – बच्चा, नारायणदास ने मुझसे कहा था कि यहाँ सब चीज़ें टके सेर मिलती हैं, तो मैंने इसकी बात का विश्वास नहीं किया। बच्चा, यह कौन-सी नगरी है और इसका कौन-सा राजा है, जहाँ टके सेर भाजी और टके सेर खाजा मिलता है।

गोवर्धनदास– अंधेर नगरी अनबूझ राजा, टके सेर भाजी, टके सेर खाजा।

महन्त – तो बच्चा, ऐसी नगरी में रहना उचित नहीं है, जहाँ टके सेर भाजी और टके सेर खाजा बिकता है। मैं तो इस नगर में अब एक क्षण भी नहीं रहूँगा।

गोवर्धनदास– गुरुजी, मैं तो इस नगर को छोड़कर नहीं जाऊँगा। और जगह दिन भर माँगो तो भी पेट नहीं भरता। मैं तो यहीं रहूँगा।

महन्त – देख मेरी बात मान, नहीं तो पीछे पछताएगा। मैं तो जाता हूँ पर इतना कहे जाता हूँ कि कभी संकट पड़े तो याद करना (यह कहते हुए गुरु महन्त चले जाते हैं।)

दृश्य-2

राजा, मंत्री और नौकर लोग यथास्थान बैठे हैं। पर्दे के पीछे 'दुहाई है' का शब्द होता है।

राजा – कौन चिल्लाता है, उसे बुलाओ तो।

(दो नौकर एक फ़रियादी को लाते हैं)

फ़रियादी – दुहाई ! महाराज, दुहाई !

राजा – बोलो, क्या हुआ ?

फ़रियादी – महाराज, कल्लू बनिये की दीवार गिर पड़ी, सो मेरी बकरी उसके नीचे दब गयी। न्याय हो।

राजा – कल्लू बनिये को पकड़ लाओ।

(नौकर लोग दौड़कर बाहर से बनिये को पकड़ लाते हैं)

राजा – क्यों रे बनिये, इसकी बकरी क्यों दबकर मर गयी?

कल्लू – महाराज मेरा कुछ दोष नहीं। कारीगर ने ऐसी दीवार बनायी कि गिर पड़ी।

राजा – अच्छा, कल्लू को छोड़ दो, कारीगर को पकड़ लाओ।

(कल्लू जाता है। लोग कारीगर को पकड़ लाते हैं)

राजा – क्यों रे कारीगर, इसकी बकरी कैसे मर गयी?

कारीगर – महाराज, चूनेवाले ने चूना ऐसा खराब बनाया कि दीवार गिर पड़ी।

राजा – अच्छा, उस चूनेवाले को बुलाओ।

(कारीगर निकाला जाता है। चूनेवाला पकड़कर लाया जाता है)

राजा – क्यों रे चूनेवाले, इसकी बकरी कैसे मर गयी?

चूनेवाला – महाराज, भिश्ती ने चूने में पानी ज़्यादा डाल दिया, इसी से चूना कमज़ोर हो गया।

राजा – तो भिश्ती को पकड़ो।

(भिश्ती लाया जाता है)

राजा – क्यों रे भिश्ती, इतना पानी क्यों डाल दिया कि दीवार गिर पड़ी और बकरी दब गयी?

भिश्ती – महाराज, गुलाम का कोई कसूर नहीं, कसाई ने मसक इतनी बड़ी बना दी थी कि उसमें पानी ज़्यादा आ गया।

राजा – अच्छा, भिश्ती को निकालो, कसाई को लाओ।

(लोग भिश्ती को निकालते हैं। कसाई को लाते हैं)

राजा – क्यों रे कसाई, तूने ऐसी मसक क्यों बनायी?

कसाई – महाराज, गड़रिये ने टके की ऐसी बड़ी भेड मेरे हाथ बेची कि मसक बड़ी बन गयी।

राजा – अच्छा, कसाई को निकालो, गड़रिये को लाओ।

(कसाई निकाला जाता है। गड़रिया लाया जाता है)

राजा – क्यों रे गड़रिये, ऐसी बड़ी भेड़ क्यों बेची?

गड़रिया – महाराज, उधर से कोतवाल की सवारी आयी, उसकी भीड़-भाड़ के कारण मैंने छोटी-बड़ी भेड़ का ख्याल ही नहीं किया, मेरा कुछ कसूर नहीं।

राजा – इसको निकालो, कोतवाल को पकड़कर लाओ।

(कोतवाल को पकड़कर लाया जाता है)

राजा – क्यों रे कोतवाल, तूने सवारी धूम से क्यों निकाली कि गड़रिये ने घबराकर बड़ी भेड़ बेच दी?

कोतवाल – महाराज, मैंने कोई कसूर नहीं किया।

राजा – कुछ नहीं महाराज, महाराज। ले जाओ, कोतवाल को अभी फाँसी दे दो।

(सभी कोतवाल को पकड़कर ले जाते हैं)

दृश्य-3

गोवर्धनदास बैठा मिठाई खा रहा है

गोवर्धनदास– गुरुजी ने हमको नाहक यहाँ रहने को मना किया था। माना कि देश बहुत बुरा है, पर अपना क्या? खाते-पीते मस्त पड़े हैं।

(चार सिपाही चारों ओर से आकर उसको पकड़ लेते हैं)

सिपाही – चल बे चल, मिठाई खाकर खूब मोटा हो गया है। आज मज़ा मिलेगा।

गोवर्धनदास– (घबड़ाकर) हैं, यह आफत कहाँ से आयी, अरे भाई, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है, जो मुझे पकड़ते हो?

सिपाही – बात यह है कि कल कोतवाल को फाँसी का हुक्म हुआ था। जब उसे फाँसी देने को ले गये तो फाँसी का फंदा बड़ा निकला लेकिन, कोतवाल साहब दुबले हैं। हम लोगों ने महाराज से अर्ज की। इसपर हुक्म हुआ कि किसी मोटे आदमी को फाँसी दे दो, क्योंकि बकरी मरने के अपराध में किसी न किसी को सज़ा होना ज़रूरी है, नहीं तो न्याय न होगा।

गोवर्धनदास– दुहाई परमेश्वर की! अरे! मैं नाहक मारा जाता हूँ। यहाँ बड़ा ही अंधेर है। गुरु जी! तुम कहाँ हो, आओ, मेरे प्राण बचाओ।

(गोवर्धनदास चिल्लाता है, सिपाही उसे पकड़कर ले जाते हैं)

गोवर्धनदास– हाय बाप रे! मुझे बेकसूर ही फाँसी देते हैं।

सिपाही – अबे, चुप रह, राजा का हुक्म भला कहीं टल सकता है?

गोवर्धनदास– हाय, मैंने गुरुजी का कहना न माना, उसी का यह फल है। गुरुजी, कहाँ हो बचाओ, गुरुजी! गुरुजी!

(गुरु महंत आते हैं)

महन्त – अरे बच्चा गोवर्धनदास, तेरी यह क्या दशा है?

गोवर्धनदास– (हाथ जोड़कर) गुरुजी, दीवार के नीचे बकरी दब गयी, जिसके लिए मुझे फाँसी दी जा रही है। गुरुजी, बचाओ।

महन्त – कोई चिन्ता नहीं, (भौंह चढ़ाकर सिपाहियों से) सुनो, मुझे शिष्य को अन्तिम उपदेश देने दो। (सिपाही उसे थोड़ी देर के लिए छोड़ देते हैं, गुरुजी चेले को कान में समझाते हैं)

गोवर्धनदास– तब तो गुरुजी, हम अभी फाँसी चढ़ेंगे।

महन्त – नहीं बच्चा, हम बूढ़े हुए, हमको चढ़ने दे।

(इस प्रकार दोनों हुज्जत करते हैं। सिपाही लोग परस्पर चकित होते हैं। राजा, मंत्री और कोतवाल आते हैं)

राजा – यह क्या गोलमाल है?

सिपाही – महाराज, चेला कहता है, मैं फाँसी चढ़ूँगा, गुरु कहता है, मैं चढ़ूँगा। कुछ मालूम नहीं पड़ता कि क्या बात है?

राजा – (गुरु से) बाबाजी, बोलो। आप फाँसी क्यों चढ़ते हैं?

महन्त – राजा, इस समय ऐसी शुभ घड़ी में जो मरेगा, सीधा स्वर्ग जाएगा।

मंत्री – तब तो हमीं फाँसी चढ़ेंगे।

गोवर्धनदास– नहीं, हम। हमको हुक्म है।

कोतवाल – हम लटकेंगे, हमारे सबब से तो दीवार गिरी।

राजा – चुप रहो सब लोग। राजा के जीते जी और कौन स्वर्ग जा सकता है? हमको फाँसी चढ़ाओ, जल्दी-जल्दी करो। (राजा को लोग फाँसी पर लटका देते हैं। पर्दा गिरता है।)

- - - - -

अभ्यास

I. 'अंधेर नगरी' एकांकी का सारांश लिखिए।

'अंधेर नगरी' हास्यात्मक एकांकी है। इसके एकांकीकार भारतेन्दु हरिश्चंद्र है। एकांकीकार भारतेंदु हरिश्चंद्र हिंदी के बहुमुखी साहित्यकार हैं। आपने साहित्य की अनेक विधाओं पर अपनी लेखनी चलायी है।एकांकी हमें यह सबक देता है कि मूर्खों का संग कभी भला नहीं करता।

गुरु महंत एक बार अपने दो शिष्य गोवर्धनदास और नारायणदास के साथ देशाटन करते हुए किसी शहर में आते हैं। उस शहर का नाम अंधेर नगरी है और वहाँ हर चीज़ टके सेर मिलती है। तब गुरु बताते हैं कि वहाँ रहने से आफ़त होगी। लेकिन शिष्य गुरु की बात नहीं मानते। वे वहीं रहना चाहते हैं। गुरु महंत यह कहकर चले जाते हैं कि आफ़त के समय उनकी याद करना।

एक दिन किसी दीवार के टूटने से एक बकरी दबकर मर जाती है। राजा के पास इसकी शिकायत आती है, तब कल्लू बनिया बुलाया जाता है। क्योंकि वह टूटी दीवार कल्लू बनिये की थी। कल्लू बनिया कहता है कि यह कारीगर का कसूर है। कारीगर चूनेवाले को, चूनेवाला भिश्ती को, भिश्ती कसाई को, कसाई गड़रिये को और गड़रिया कोतवाल को अपराधी बताते हैं। आखिर कोतवाल को दोषी ठहराकर उसे फाँसी की सज़ा दी जाती है।

फाँसी का फंदा बड़ा निकलता है और कोतवाल दुबला है, तो राजा आदेश देता है कि कोतवाल के बदले किसी मोटे आदमी को फाँसी पर चढ़ाया जाए।

शिष्य गोवर्धनदास काफ़ी मोटा था, इसलिए सिपाही गोवर्धनदास को पकड़ लेते हैं। जब सारी बातें मालूम होती हैं तब गोवर्धनदास को बड़ा पछतावा होता है। वह गुरु की दुहाई देता है। गुरु आते हैं और कहते हैं कि इस शुभ घड़ी में मरनेवाला सीधे स्वर्ग जाएगा।

यह सुनते ही हर आदमी फाँसी पर चढ़ने तैयार होता है। लेकिन राजा के होते हुए यह भाग्य दूसरे को कहाँ मिलेगा? राजा खुद फाँसी पर चढ़ता है और मर जाता है। गुरु महंत और शिष्य उस शहर से भाग निकलते हैं।

II. निम्नलिखित पात्रों का परिचय दीजिए।

1. गुरु महंत

भारतेंदु हरिश्चन्द्र कृत 'अंधेर नगरी' एकांकी का प्रमुख पात्र है गुरु महंत। एकांकी में हम इनकी दूरदर्शिता और बुद्धिमत्ता को देख सकते हैं।

महंत को मालूम होता है कि अंधेर नगरी में सभी चीज़ें टके सेर बिकती हैं। उसी क्षण वे समझ लेते हैं कि यहाँ का राजा बड़ा बेवकूफ़ है और यहाँ रहने से बड़ी आफ़त होगी। यहाँ हम उनकी बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता को देखते हैं।

जब दोनों शिष्य अंधेर नगरी छोड़कर आने से इनकार कर देते हैं, तब गुरु महंत एक सच्चे गुरु होने के नाते कहते हैं कि कभी संकट पड़े तो मेरी याद करो।

राजा की मूर्खता से गोवर्धनदास को सिपाही लोग पकड़ते हैं और फाँसी पर चढ़ाने की तैयारी करते हैं, तब महंत आ जाते हैं। वे कहते हैं कि यह शुभ घड़ी है, इस समय मरनेवाला आदमी सीधे स्वर्ग जाएगा। यह सुनकर राजा खुद फाँसी पर चढ़ता है और शिष्य बच जाता है। यहाँ हम महंत की सूझ-बूझ देख सकते हैं।

2. अनबूझ राजा

अन्धेर नगरी भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा रचित एकांकी है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र की रचनाओं में समाज सुधार, राष्ट्र प्रेम आदि प्रमुख विषय हैं। अंग्रेज़ी शासन का विरोध, स्वतंत्रा के लिए लड़ना और राष्ट्रीय भावना को उजागर करना उनाकी रचनाओं का प्रमुख ध्येय रहा।

अंधेर नगरी का राजा, अनबूझ चंचल मनवाले, निर्णय लेने में असमर्थ और अच्छा-बुरा, सही-गलत का भेदभाव न जाननेवाले अनबूझ व्यक्ति थे। उनमें राजा के पद के लिए वांछित गुणों का अभाव था। उनके राज्य से सब्जी, हलवाई, मिठाई सबकुछ हमें टके सेर में मिलता था। इसलिए गोवर्धनदास कहता है– "अंधेर नगरी अनबूझ राजा, टके सेर भाजी, टके सेर खाजा"। सारे नगरवासी सस्ते में मिली वस्तुओं को खाकर आराम की जिन्दगी बिताते हैं। गुरु महन्त का मानना है कि ऐसे मूर्ख राजा के नगर में वास करना आफ़त है। एक दिन राजा को फरियाद का निर्णय सुनाना पड़ता है। कल्लू बनिये की दीवार के नीचे फरियादी की बकरी दबकर मर

जाती है। फरियादी न्याय माँगते हुए राजा के पास आता है। राजा ने, कल्लू बनिये, कारीगर, चूनेवाले, भिश्ती, कसाई, गड़रिये, कोतवाल आदि से सुनवाई करता है। अंत में कोतवाल पर दोष लगाया जाता है। फाँसी का फंदा बड़ा था। इसलिए वह दुबले कोतवाल के बदले गोवर्धनदास जो मिठाई खाकर खूब मोटा हो गया है, उसे पकड़कर फाँसी पर चढ़वाने की तैयारियाँ करता है। इतने पर गुरु महन्त आते हैं। योजना के अनुसार छोटा-सा-नाटक रचाया जाता है। इस जाल पर फँसकर राजा खुद मरकर स्वर्ग जाना चाहता है। अंत में राजा को फाँसी पर लटका दिया जाता है।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए।

1. महंत के कितने शिष्य थे? वे कौन-कौन थे?

   महंत के दो शिष्य थे। वे गोवर्धनदास और नारायणदास थे।

2. अंधेर नगरी में सभी चीजें किस भाव में बिकती थीं?

   अंधेर नगरी में सभी चीज़ें टके सेर बिकती थीं।

3. कोतवाल को क्यों छोड़ा गया?

   फाँसी का फंदा बड़ा निकला, लेकिन कोतवाल दुबला था। इसलिए कोतवाल छोड़ा गया।

4. अंत में राजा फाँसी पर क्यों चढ़ा?

   गुरु महंत ने गोवर्धनदास को बचाने के लिए कहा कि इस शुभ घड़ी में मरनेवाला सीधे स्वर्ग जाएगा। सीधे स्वर्ग जाने के लालच में राजा फाँसी पर चढ़ा।

IV. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

1. बच्चा, यह कौन-सी नगरी है और इसका कौन-सा राजा है?

प्रसंग:- यह वाक्य 'अंधेर नगरी' एकांकी से दिया गया है। इसके एकांकीकार भारतेंदु हरिश्चंद्र हैं। अंग्रेज़ी शासन का विरोध, स्वतंत्रता के लिए लड़ना और समाज सुधार, राष्ट्र प्रेम आदि उनके विषय थे। अंग्रेज़ी शासन का विरोध, स्वतंत्रता के लिए लड़ना और राष्ट्रीय भावना को उजागर करना आदि इनकी रचनाओं का प्रमुख रहा।

भाव:- इस नगर में सब चीज़ें टके सेर में मिलती हैं। लोग मस्त जीवन बिताते हैं। इसलिए गोवर्धनदास जानना चाहता है कि इस नगर का राजा कौन है और शहर का नाम क्या है?

2. मैं तो जाता हूँ, पर इतना कहे जाता हूँ कि कभी संकट पड़े, तो याद करना।

प्रसंग:- यह वाक्य 'अंधेर नगरी' एकांकी से दिया गया है। गुरु महंत अपने शिष्य गोवर्धनदास और नारायणदास से ऐसा कहते हैं।

भाव:- अंधेर नगरी में सभी चीज़ें टके सेर बिकती हैं। यह सुनकर गुरु कहते हैं कि यहाँ के लोग मूर्ख हैं और यहाँ रहना उचित नहीं है। इसलिए हमें यहाँ से तुरंत निकलना है। लेकिन शिष्य गुरु की यह बात नहीं मानते। तब गुरु कहते हैं कि यहाँ रहने से किसी दिन तुम लोग संकट में पड़ जाओगे, तब मेरी याद करना।

3. अरे, मैं नाहक मारा जाता हूँ। यहाँ बड़ा ही अंधेरा है, गुरुजी। तुम कहाँ हो।

प्रसंग:- यह वाक्य 'अंधेर नगरी' एकांकी से दिया गया है। अंधेर नगर के राजा 'अनबूझ राजा' है। उसे न्याय, अन्याय का कोई भेद नहीं है। शिष्य गोवर्धनदास को कोई अपराध किए बिना ही फ़ाँसी की सजा दी जाती है। तो गोवर्धनदास इस प्रकार कहता है।

भाव:- गोवर्दनदास ने चिल्लाकर कहा कि उसे बेवजह, अकारण फाँसी की सजा दी जा रही है। यह नगर अंधेर है। राजा अनबूझ है। इस अंधेर नगरी से निकलते समय गुरु ने वादा किया कि जब शिष्य उनकी याद करेगा तब तत्क्षण उपस्थित होंगे। इसलिए शिष्य ने संकट मोचन के लिए गुरु को बुलाया।

4. माना कि देश बहुत बुरा है, पर अपना क्या? खाते-पीते मस्त पड़े हैं।

प्रसंग:- ये वाक्य 'अंधेर नगरी' एकांकी से दिये गये हैं। गोवर्धनदास नारायणदास से ऐसा कहता है।

भाव:- अपने गुरु की बात न मानकर दोनों शिष्य अंधेर नगरी में ही रहते हैं। सभी चीज़ें टके सेर मिलती हैं, दोनों बड़े मज़े में रहते हैं। तब गोवर्धनदास कहता है कि गुरु ने यहाँ न रहने का उपदेश देकर गलत किया। देश बुरा है, यह तो ठीक है! लेकिन हमें सब कुछ मिल जाता है और हम सुखी हैं। गोवर्धनदास को आनेवाले आफ़त की जानकारी नहीं है। इसलिए ऐसा कहता है।

5. चुप रहो सब लोग। राजा के जीते जी और कौन स्वर्ग जा सकता है? हमको फाँसी पर चढ़ाओ, जल्दी-जल्दी।

प्रसंग:- ये वाक्य भारतेंदु हरिश्चन्द्र रचित 'अंधेर नगरी' नामक एकांकी से दिये गये हैं। अंधेर नगरी का राजा इस प्रकार कहता है।

भाव:- साधु महंत जी अपने शिष्य से कहते हैं कि आज जो मरते हैं वे सीधे स्वर्ग जाते हैं। तब मंत्री कोतवाल सब अपने को फाँसी पर चढ़ाने के लिए कहते हैं। तो राजा कहता है कि "राजा के जीते जी और कौन स्वर्ग जा सकता है? मैं राजा हूँ। अतः मुझे फाँसी पर चढ़ा दो।"

* * * * *

4. परिवर्तन

–श्री के. अय्यण्णा

नाटक के पात्र:

1.	गोविंदय्या	-	मुनिसिपल मैनेजर (उम्र 35 के लगभग)
2.	गुणवंती	-	गोविंदय्या की जवान पत्नी
3.	गुरुदत्त	-	गोविंदय्या का दोस्त (उम्र 30 के लगभग)
4.	रामू	-	गोविंदय्या का नौकर (उम्र 40 के लगभग)

पहला दृश्य

[एक छोटा-सा कमरा है, जिसमें दो कुर्सियाँऔर एक टेबल बीच में रखी गयी हैं। टेबल पर एक घड़ी और कुछ अंग्रेज़ी के समाचार-पत्र रखे हैं। दीवारों पर प्रसाद, नेहरू-आदि नेताओं की तस्वीरें हैं। गोविंदय्या हाथ में आफिस की एक फाईल (File) लिये हुए आते हैं। वे धोती कोट पहने हुए हैं और सिर पर पगड़ी भी है। हाथ में फाईल लिये परेशानी की हालत में घूमते हैं। थोड़ी देर के बाद घड़ी हाथ में लेकर देखते हैं। फिर घड़ी को मेज़ पर रखकर ज्यादा परेशानी से अपने आप कहते हैं।]

गोविंदय्या–ओह ! ओह ! दस बज गये। अभी तक खाना तैयार नहीं हुआ। न जाने आज खाना तैयार होगा या यों ही आफ़िस जाना पड़ेगा। सौ बार समझाया कि 'श्रीमतीजी यह आफ़िस का काम है, कोई सब्जी-भाजी का धंधा नहीं, जिसमें न वक्त की पाबन्दी की गुंजाइश रहती है और न अफ़सरों की झिड़कियाँ सुनने की नौबत'। पर सुनता कौन है? कहती है-'देरी हुई तो मैं क्या करूँ।' भूखा ही चला गया होता या वही सब्जी भाजी का धंधा ही किया गया होता।' जिस शास्त्री ने इस'नागिन को मेरे गले में बाँधा है-जी चाहता है उसका सिर नोच लूँ। कम्बख्त शास्त्री, शादी के पहले कहता था-'कन्या क्या है गोविंदय्या ! अप्सरा है, अप्सरा ! और पति की सेवा करने में-समझ लीजिये सावित्री। सच कहता हूँ बाबूजी ऐसी कन्या बड़े भाग्य से ही प्राप्त होती है।" यदि वह भाग्य का बच्चा आज मिलता तो मैं उसे कच्चा ही चबा डालता। उसने मेरी शादी क्यों करवाई मानों फाँसी की रस्सी गले में लटका दीं। (घड़ी की ओर देखकर) बस भगवान्, बस। अब मुझसे सहा नहीं जायेगा। (दोनों हाथ सिर पर रखकर कुर्सी पर बैठ जाते हैं। थोड़ी देर के बाद) रामू, अरे रामू। कम्बख्त यह नौकर भी क्या है? ऐन मौके पर दगा दे जाता है। (रामू हाथ में थैली लिए आता है।) बहरा है क्या? सुनता नहीं? कहाँ मर गया था?

रामू–यहीं था सरकार ! अंदर थैली ढूँढ रहा था।

गो–थैली किसलिए ? क्या किसी यात्रा में निकलना है तुझे (क्रोध से) रखो थैली वहाँ। (रामू थैली नीचे नहीं रखता) मैं कहता हूँ थैली वहाँ रख दो (रामू थैली रखता है। और मालिक की ओर देखता है।) खड़े खड़े मुँह क्या देखता है ? जा देख ? खाना तैयार हुआ या नहीं।

रामू–सरकार, अभी तैयार नहीं हुआ। मैं अभी-अभी तरकारी लाने बाज़ार जा रहा था सरकार।

गो–अबे ! क्या यह तरकारी लाने का वक्त है ?

रामू–मैं क्या जानूँ सरकार। मालकिन ने अभी-अभी हुक्म दिया है।

गो–(दाँत पीसकर) मालकिन को मारो गोली।

[यह बात सुनते हुए गुणवंती मुँह सिकोड़कर गोविंदय्या के सामने आकर कहती है।]

गुणवंती–बेचारे को क्यों जेल भिजवाना चाहते हो। गोली ही मारने का इरादा हो, तो खुद ही चलाई होता और उसका अंजाम भी देख लिया होता। इसमें इस ग़रीब का क्या दोष है ?

गो–दोष तो मेरा है गुणवंती। उसीका फ़ल आज मुझे ब्याज के साथ मिल रहा है। अन्यथा ये दिन मुझे न देखने पड़ते।

गुण–जो कुछ कहना है-साफ़ साफ़ क्यों नहीं कहते ?

गो–तो कान खोलकर सुनो ! मैंने तुझसे शादी करके बड़ी मूर्खता की है। मैंने शादी क्या की-एक ज़हरीली नागिन को अपने गले में लटका लिया (घड़ी दिखाकर) देखती हो, समय कितना हुआ है।

गुण–समय की ओर ताकते बैठने की आदत नहीं है मुझे।

गो-तो क्या करने की आदत है ?

गुण–मैं जो कुछ करूँगी अपनी मर्जी के मुताबिक़ करूँगी। मैं नौकरानी थोड़ी हूँ जो आये दिन तुम्हारी झिड़कियाँ सुन लिया करूँ।

गो–तो मेरी भी सुन लो। मैं भी किसी का नौकर नहीं हूँ। पर कहे देता हूँ। याद रखो; आइन्दा इस घर में रहना चाहती हो तो मेरे इशारों पर चलना होगा।

गुण–वर्ना.... करेंगे-वर्ना क्या ?

गो–दूध की मक्खी की तरह घर से निकाल दी जायेगी।

गुण-निकालनेवाले में ताकत भी तो होनी चाहिये।

गो-तो क्या तुमने मुझे हिजड़ा समझ रखा है ?

गुण-जो कुछ समझना है पहले ही समझ चुकी हूँ। और अब मैं भी देख लूँगी कि तुम मुझे किस तरह घर से निकालते हो।

गुरुदत्त का प्रवेश।

(वह एक बार गोविंदय्या की तरफ देखता है और एक बार गुणवंती की तरफ़/ गुणवंती मुँह सिकोड़कर नौकर के साथ अंदर चली जाती है।)

गुरु-क्यों यार ! सबेरे-सबेरे आज तुम दोनों में क्या हो रहा था।

गो-(व्यंग से) क्या हो रहा था ? तुम भी बुद्धू ठहरे ! इतना भी नहीं समझे। अरे, हम दोनों में जमकर मोहब्बत की बातें हो रही थीं। शादी के बाद हमें मौका ही कब मिला था। जो भी आज मिला, तुमने बीच में आकर मोहब्बत का सारा खेल बना-बनाया बिगाड़ दिया।

गुरु-(हँसते हुए) वाह ! वाह ! क्या निराली बात कही है तुमने। तुम निराले, तुम्हारी मोहब्बत निराली, मोहब्बत करने के तुम्हारे सारे तौर-तरीके भी निराले हैं यार। जियो यार, जियो, लाख बरस जियो।

गो-हाँ-हाँ-हाँ, बस करो अपने आशीर्वाद को कहीं ऐसा न हो कि सचमुच मेरी जिंदगी को पर लग जाय! यार यहाँ तो मौत के लिए तरसते है और उल्टा तुम लम्बी ज़िन्दगी बखाते जाते हो किसी ने सच कहा-'प्रथम बार विवाह करना एक पावन कर्तव्य है, दूसरी बार एक मूर्खता, और तीसरी बार एक पागलपन।' सचमुच मैंने दूसरी बार ब्याह करके बड़ी मूर्खता की है। इससे बढ़कर और क्या मूर्खता हो सकती है।

गुरु–छोड़ो, इन बेकार बातों को। असली बात क्या है बतलाओ तो सही।

गो–क्या खाक बतलाऊँ। दस बज गये। अभी तक खाना तैयार नहीं हुआ। पूछता हूँ तो ईंट का जवाब पत्थर से देती है। कहती है-मैं किसी की नौकरानी नहीं हूँ। अपनी मर्जी के मुताबिक़ काम करूँगी। तुम ही कहो, अब मैं क्या करूँ। कोई औरत अपने पति के ख़िलाफ़ ऐसे शब्द मुँह से निकाल सकती

गुरु–बस इतनी-सी बात के लिए मरने के ख्वाब देखने लगे ?

गो–गुरुदत्त, यह एक दिन की बात हो, तो सही, शादी के दिन से यही क्रम जारी है।

गुरु–यह कोई नयी बात नहीं है। प्रत्येक घर में ऐसे क्रम दिन-रात चलते रहते हैं।

गो–भले ही चलती होंगी। पर, अब मुझसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। आखिर मैं भी इन्सान हूँ। मेरे भी सुख-दुख हैं। मुझे भी जिंदगी में आराम की ज़रूरत है।

गुरु–अच्छा बाबा, अच्छा। मैं इसका इलाज किये देता हूँ। (घड़ी देखकर) अब ज्यादा देर हो गयी है। चलो मेरे घर, वहीं खाना खाकर अपने आफ़िस चले जाना। (गोविंदय्या हिचकिचाता है) अरे चलो न। (गुरुदत्त हाथ पकड़कर खींचता है) इसमें सोचने की क्या बात है।

[दोनों मित्र एक तरफ़ चले जाते हैं। परदा गिरता है।]

दूसरा दृश्य

[छोटा-सा कमरा है जिसमें एक टेबल और दो कुर्सियाँ हैं। एक योगी कमरे में आते हैं। उनके कान में बड़े-बड़े कुंडल लटक रहे हैं। पाँव में खड़ाऊ और हाथ में एक टेका है। बड़ी दाढ़ी और सिर पर बाल हैं। उनकी आँखें लाल हैं। कमरे में आकर चारों ओर देखते हैं। कमरे में नौकर कुर्सियाँ साफ़ कर रहा है।]

योगी–बोम ! बोम ! बोम ! जय गोरखनाथ ! जय भोलानाथ।

नौकर–ठहरो ! ठहरो ! आँखें बंद करके कहाँ जाते हो सूरदासजी।

योगी–बेटा, तू कौन है हमारा रास्ता रोकनेवाला। जय जगद्‌गुरु । जय गोरखनाथ।

नौकर–बेटा...। ज़रा मुँह सम्हालकर बोलो। वर्ना...

योगी–वर्ना.... क्या है बेटा।

नौकर–फिर वही बेटा...। (नज़दीक जाकर) हे साधु महाराज, ज़रा जीभ को लगाम दीजिये।

योगी–यह प्रश्न खुद अपने मन से पूछ लो बेटा, अब लगाम की आवश्यकता किसको है ?

नौकर–मेरे बाप को।

योगी-क्या ? तुम्हारा बाप भी है बेटा ?

नौकर–बाप भी है, माँ भी है, औरत भी है और बाल-बच्चे भी हैं। बस, और भी कुछ बतलाना है सूरदासजी ? अब तुम चुपचाप यहाँ से चलते हो या अपनी मालकिन को बुलाऊँ।

[गुणवंती कमरे में आती है]

गुण-क्या है, रामू।

नौकर-देखिये माँजी। यह अन्धा भगवानदास कब से सता रहा है।

गुण-क्या बकता है ?

योगी-बकने दो बेटी। कुत्ता है। जय भोलानाथ। पर तू क्यों नाराज़ होती है इस बेचारे पर ! हमें पाप से घृणा करनी है पापी से नहीं। जय गोरखनाथ !

गुण-रामू, उनके चरणों पर गिरकर माँफी माँगो। (नौकर चुपचाप खड़ा रहता है) मैं कहती हूँ माँफी माँगो। (विवश होकर साधु के चरणों पर गिरता है) इसे माफ़ कर दीजिये।

[हाथ जोड़ती है]

योगी-अच्छा बेटा, हमने तुझे क्षमा कर दिया, उठो।

गुण-रामू, अब तू अंदर जा। (रामू का प्रस्थान) (साधु से) आपको क्या चाहिये साधु महाराज ?

योगी-(आँखें लाल करके) साधु महाराज ! तूने साधु कहकर हमारा अपमान किया है। हम ऐसे साधु

नहीं हैं जो जहाँ तहाँ भीख माँगते फिरते हैं। हम नाथयोगी हैं। हमारा आदिगुरु गोरखनाथ हैं। जय जगद्‌गुरु। हम उन्हीं के शिष्य हैं। जय भोलानाथ।

गुण-आप कहाँ से आये हैं भोलानाथ?

योगी-फिर तूने पता पूछकर दुबारा अपमान किया। योगियों का पता नहीं पूछा जाता बेटी, ज्ञान पूछा जाता है। जय तारानाथ । बेटी अब हम तुझे क्षमा नहीं कर सकते।

गुण-योगीनाथ, क्षमा कर दीजिये। (नमस्कार करती है) गलती हो गयी।

योगी-अच्छा, जाओ बेटी। हमने तुझे भी क्षमा कर दिया है।

गुण-कुर्सी की ओर इशारा करते हुए) बैठिये, भोलानाथ।

[योगी टेबल पर आसन लगाकर बैठ जाता है।]

योगी-तुम भी बैठो बेटी (नीचे बैठती है) वहाँ नहीं, कुर्सी पर। (कुर्सी पर बैठती है) बेटी, अब हम जो प्रश्न पूछेंगे उनका सही-सही उत्तर देती जाना। यदि तूने भूलकर भी झूठ कहा.... जय गुरुनाथ; अपनी सिद्धि से तुझे भस्म कर देंगे। कहो, गोविन्दय्या घर में हैं?

गुण-वे आफ़िस गये हैं। पर योगी महाराज, उनका नाम आपको कैसे मालूम हो गया?

योगी-बेटी, हम क्या कुछ नहीं जानते! जब हम समाधि लगाकर अंतर्मुख साधना में मग्न हो जाते हैं तब दुनियाँ का कोई रहस्य हम से छिप नहीं सकता; अपने आप प्रकट हो जाता है। जय द्वारकनाथ। अच्छा बेटी, तेरा पति कब तक लौटेगा?

गुण-यह, मैं नहीं कह सकती।

योगी-अब कहने की कोई आवश्यकता नहीं। हम समझ गये। जय गोरखनाथ।

गुण-क्या समझ गये साधु महाराज-नहीं, नहीं-योगी महाराज।

योगी-आज तेरा पति तुझसे नाराज है और बिना भोजन किये चला गया है (कनखियों से देखते हुए) सच है?

गुण-हाँ, योगीनाथ, आज वे.....

योगी-बस, बस, प्रश्न का उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में देना चाहिये। अन्यथा, हम रुष्ट हो जायेंगे। रोज़ तुम दोनों में अनबन रहती है... सच है?

गुण-हाँ योगीन्द्र!

योगी-और घर नरक का नमूना बन गया है.... यह भी सत्य है?

गुण-हाँ-हाँ भोलानाथ, 'यह बिलकुल सत्य है।' पर जोगीनाथ, यह आपको कैसे मालूम हुआ?

योगी-(क्रोध से) फिर वही अपराध । जय गोरखनाथ, (दोनों हाथ ऊपर उठाकर) इस नारी को क्षमा

करने की शक्ति प्रदान करो गुरुदेव। जय भोलानाथ। (गुणवंती की ओर देखते हुए) गुरु ने आज्ञा दी है बेटी। अब सुनो-हम रहस्यवादी हैं। इस रहस्य सिद्धि का मूल कारण हमारी कठिन अंतःसाधना है। लोक कल्याण ही हमारा ध्येय है। जय गोरखनाथ! और भी कुछ सुनना चाहती हो?

गुण-नहीं, नहीं भोलानाथ। आप सचमुच अंतर्यामी हैं। अब मेरा भ्रम दूर हो गया। अब मैं आपकी क्या सेवा करूँ?

योगी-सेवा? जय देवनाथ! यह कैसा परिहास है।

(हंसते हैं)

गुण-परिहास! (दोनों कान बंद करके) राम, राम! (ऊपर की ओर देखती हुई) हे भगवान, मैं क्या सुन रही हूँ। योगीनाथ, मैं किस मुँह से आपका परिहास कर सकती हूँ। आपके प्रति मेरे मन में बड़ी श्रद्धा है गुरुदेव। उसी श्रद्धा से प्रेरित होकर मैंने सेवा की बात कही, और कुछ नहीं।

योगी-हे नारी, योगियों की सेवा के लिए पवित्र मन की आवश्यकता होती है और तेरे हृदय में उसकी कमी है, मानती हो।

गुण-(अभिमान से) सो कैसे! योगीनाथ।

योगी-तेरे मन में पति के प्रति अश्रद्धा है। सच है?

गुण-हाँ, गुरुदेव, सच है।

योगी-पति का प्रेम प्राप्त करने तक तेरा मन अपवित्र रहेगा। जय गोरखनाथ।

गुण-उनका प्रेम प्राप्त करना मेरे बस की बात नहीं है गुरुदेव।

योगी- क्यों?

गुण-मैं उनकी झिड़कियों से तंग आ चुकी हूँ।

योगी-इसका निवारण चाहती हो?

गुण-चाहती तो हूँ गुरुदेव। पर यह कैसे संभव होगा।

योगी-बेटी, तू योगियों की सिद्धि का अंदाज़ नहीं लगा सकती। हमारी सिद्धि से हर असंभव कार्य संभव हो जाएगा। जय गोरखनाथ! (आँख बंद करके कमर से कुछ गोलियाँ निकालते हुए) देखती हो बेटी, ये अंतःसाधना से तैयार की गयी गोलियाँ हैं। इनमें असीम शक्ति है! जब कभी तेरा पति क्रोध में आकर झिड़कियाँ देने लगे तो तुरन्त एक गोली मुँह में डाल लेना। पर याद रखो, उस समय तेरे मुँह से एक शब्द भी न निकलने पाय। अन्यथा इनकी शक्ति जाती रहेगी। उस वक्त तेरा कर्तव्य होगा-सिर्फ़ गोली चखना। जय गोरखनाथ। फिर देखना अपने

पतिदेव के क्रोध को। वह अपने आप शांत हो जाएगा। जय भोलानाथ।

(गोलियाँ देता है।)

गुण-योगी महाराज, आपने इस गरीबिन पर बड़ी कृपा दिखाई है। आपका एहसान मैं ज़िन्दगी भर नहीं भूल सकती।

(योगी को नमस्कार करती है।)

योगी-अच्छी बेटी, अब हम चलते हैं। गुरुदेव तुझे सदा खुश रखें। जय गोरखनाथ। जय भोलानाथ।

(योगी का प्रस्थान।)

(परदा गिरता है।)

तीसरा दृश्य

(छोटा-सा कमरा है जिसमें मेज़ और तीन कुर्सियाँ हैं। गोविन्दय्या आकर कुर्सी में बैठ जाता है। आफिस से आने के कारण बहुत परेशान दिखाई देता है। दरवाज़े की ओर देखकर कहता है)

गो-गुणवंती, ओ गुणवंती, क्या घर में हो या मर गयी हो। (बाहर आती है।) यदि मर भी जाती तो मुझे कोई दुख न होता। यही समझकर चुप हो जाता कि चलो, अच्छा हुआ, मुसीबत टल गयी। (गुणवंती गुस्से में आकर जवाब देने के लिए मुँह खोलती है, पर जोगी की बात याद आते ही चुप हो जाती है। और एक गोली पति की आँख बचाकर मुँह में डाल लेती है।) सबेरे भूखा ही चला गया था और अब भी क्या मुझे भूखा ही मार डालेगी? सुनती हो? पेट में चूहे दौड़ रहे हैं। अब तो पूजा होगी?

नौकर-(अचरज से) किसकी सरकार?

गो-(गुस्से में) पेट की।

(नौकर हँस पड़ता है और गुणवंती भी मुस्कुराती हुई अंदर चली जाती है।)

गो-(गुस्से से) यहाँ भूख के मारे दम घुट रहा है और तू ठठाकर हँस रहा है? गधा कहीं का।

(गुणवंती एक थाली में नाश्ता, कुछ फल और एक गिलास में दूध लिए आती है और पति के टेबुल पर रखती है। गोविन्दय्या अचरज से पत्नी की ओर देखता है और खुशी खुशी नाश्ता करके दूध पी लेता है। गोविन्दय्या मुग्ध होकर पत्नी की ओर देखता रहता है। इतने में गुणवंती पान लाकर पति को देती है।)

गुण-रामू, अंदर सिगार की डिबिया है, लेते आ।

(रामू सिगार की डिबिया लाकर टेबुल पर रखता है।)

गुण-रामू इधर आ। (नौकर नज़दीक जाता है) अब तू क्या लाया?

रामू-सिगार की डिबिया माँजी!

गुण-बस, माचिस की ज़रूरत नहीं?

रामू-गलती हो गयी माताजी। अभी लाया। अन्दर से माचिस लाकर टेबुल पर रखता है।

गो-रामू, अब मैं कहाँ हूँ? क्या मैं सचमुच अपने घर में हूँ?

रामू-आप भी क्या मज़ाक करते हैं बाबूजी, अपने घर में ही तो हैं आप।

(गुरुदत्त का प्रवेश)

गुरु-क्यों दोस्त, आज अपना घर भी याद नहीं रहा। बहुत खूब, बहुत खूब। रहे ज़मीन पर और कहे आसमान की। क्यों बहुत खुश नज़र आ रहे हो?

गो-हाँ दोस्त, आज मैं इतना खुश हूँ, इतना खुश हूँ कि बस बयान नहीं कर सकता।

गुरु-बात क्या है?

गो-मुझसे क्या पूछते हो, सामने तो खड़ी है, पूछकर देखो क्या कारण है।

(गुणवंती सिर झुका लेती है।)

गुरु-हाँ बहन, तुम्हीं बतलाओ, इस खुशी का कारण क्या है?

नौकर-सरकार, मैं बतलाऊँ।

गो-तू क्या खाक बतलायेगा।

गुण-हाँ हाँ रामू, तू ही बतला दे।

नौकर-(गुरुदत्त से) बतलाऊँ सरकार।

गुरु-हाँ-हाँ बतलाओ, क्या बात है?

नौकर-सरकार, यह सब एक साधु महाराज की करामत है।

गो-छोड़ो यार, वह बेवकूफ़ है। वह हज़ामत को करामत और करामत को हज़ामत कहता है।

(सब हँसते हैं।)

गुरु-क्या करामत बहन?

गुण-हाँ भैया, रामू का कहना बिलकुल सच है। आज एक साधु महाराज-नहीं, नहीं योगी महाराज आये थे। उन्हीं के प्रसाद से यह सब कुछ हुआ है।

गुरु-योगीनाथ का प्रसाद क्या है बहन।

गुण-गोलियाँ।

गुरु-क्या? बंदूक की।

(सब हँसते हैं)

गुण-जाओ भैया, मैं नहीं बोलती।

गुरु-नहीं-नहीं बहन, बोलो-बोलो न। मैं भी कैसा बुद्धू निकला। बीच में कुछ बक गया। अच्छा बहन, मत बतलाना। पर इतना तो बतलाओ कि क्या वह दवा की गोलियाँ थीं?

गुण-थीं तो वैसी ही, पर बिलकुल मीठी, जैसे पेपरमेंट की गोलियाँ होती हैं।

गुरु-तो, अब समझा, पेपरमेंट की गोलियों में इतनी शक्ति। सचमुच करामत की गोलियाँ हैं। वाह वाह, बहुत खूब, बहुत खूब, जियो जोगीनाथ लाख बरस जियो।

गुण-तारीफ़ रहने दो भैया। कुछ नाश्ता करोगे?

गुरु-यदि बहन की कृपा....

गुण-अच्छा भैया, अच्छा। अभी लाती हूँ। रामू चलो मेरे साथ।

(नौकर के साथ गुणवंती अंदर जाती है।)

गो-मित्र सच कहता हूँ जिस योगी ने मेरी औरत की आत्मा को बदल दिया है उसका एहसान मैं ज़िन्दगी भर नहीं भूल सकता। उसने सचमुच मेरे घर को स्वर्ग बना दिया है। अब जी चाहता है, उनके चरणों में लिपट जाऊँ। पर दोस्त, यह योगी है, कौन? मैंने तो आज तक नहीं सुना। क्या तुम जानते हो उस योगी को?

गुरु-जानता तो नहीं, लेकिन बता सकता हूँ।

गो-बताओ फिर।

गुरु-वादा करो पहले।

(हाथ बढ़ाता है)

गो-क्या वादा करूँ।

गुरु-यही कि "मैं उस योगी के प्रति बुरा बर्ताव नहीं करूँगा। मारूँगा नहीं, पीटूँगा नहीं।"

गो-क्या बकते हो यार, तुम्हीं कहो, कोई भलाई करनेवाले के प्रति बुराई कर सकता है?

गुरु-क्यों नहीं। मियाँ, यह बीसवीं सदी है। इसमें कुछ उल्टा ही चलता है। जो उपकार करता है उसी के प्रति अपकार की बात सोची जाती है।

गो-अच्छा दोस्त, वादा करता हूँ (हाथ में हाथ डालता है) कहो न फिर ?

गुरु-कहो न फिर। तुझ जैसे बुद्धू को मैंने आज तक कहीं नहीं देखा। अरे, आज दुपहर को मैंने तेरे सामने ही ये सारी चीजें-दाढ़ी, मूँछ-खड़ाऊ और चवन्नी की पेपरमेंट की गोलियाँ एक दूकान से खरीदी थीं। अब तो याद आया ?

गो-(चकित होकर) अब समझा। तो आप ही साधु महाराज हैं। (दोस्त के चरणों में गिरकर) महात्मा, अब मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ?

गुरु-बोम ! बोम ! बोम ! जय गोरखनाथ। बेटा, सेवा के लिए पवित्र मन की आवश्यकता होती है। तू अपनी पत्नी पर अश्रद्धा रखता है। अतः तेरा मन अपवित्र है।

(हिचककर चारों ओर देखता है।)

गो-तो, पवित्र कर दीजिये पिताजी।

गुरु-अच्छा बेटा, अभी...

गो-बेटे के बच्चे।

(हँसते हुए मारने के लिए हाथ उठाता है।)

गुरु-हाँ, हाँ, हाँ। तुमने अभी अभी वादा किया था कि मारूँगा नहीं, पीटूँगा नहीं। बस वादा भूल गये।

गो-अच्छा, अच्छा, अब मेरी पत्नी को बाहर आने दो। वही मुझे पवित्र कर देगी।

गुरु-यार, हाथ जोड़ता हूँ। कहीं ऐसी गलती न कर बैठना। नहीं तो मेरी कमर सीधी हो जाएगी। और साथ-साथ हमारी सारी मेहनत पर पानी फिर जाएगा। (दोनों ठठाकर हँसते हुए गले मिलते हैं। गुणवंती नाश्ता लेकर टेबुल पर रखती है। गुरुदत्त नाश्ता करता है।) बहन, एक बात पूछूँ ?

गुण-क्या है ? पूछो भैया ?

गुरु-फिर वह जोगी कब आनेवाला है ?

गुण-क्यों ?

गुरु-(सिर खुजलाते हुए) मेरे घर में भी कुछ.... समझ लो...... ऐसी ही गड़बड़ी है।

गुण-जाओ भैया, तुम भी मजाक करते हो।

गुरु-सच कहता हूँ बहन। घर क्या है मेरा, मानों एक पागलखाना है।

गुण-पहले क्यों नहीं बतलाया भैया ?

गुरु-मुझे क्या मालूम था कि आजकल ऐसे जोगी भी निकले हैं। अच्छा, यह भोलानाथ कब आनेवाला है बहन ?

गुण-दुबारा आयेंगे या नहीं, मैं नहीं कह सकती।

गुरु-पर, मेरे लिए एक काम तो कर सकती है।

गुण-कौन-सा काम भैया?

गुरु-वह गोरखनाथ फिर जब कभी तुम्हारे घर आ जाय तो मुझे खबर कर देना।

गुण-खबर क्यों? मैं खुद उन्हें आपके घर ले आऊँगी।

गुरु-अच्छा, भूलना नहीं बहन। नमस्ते। (नमस्ते कहकर गुणवंती चली जाती है) हाँ दोस्त, अब मैं चलता हूँ। (घड़ी देखकर) काफ़ी देर हो चुकी है। नमस्ते। (थोड़ी दूर जाकर फिर वापस आता है) मैं भी कैसा बुद्धू हूँ। असली बात भूलकर जा रहा था। सुनो यार, मेरे पागलखाने के उद्धार के लिए तुझे भी एक दिन मेरी तरह गोरखनाथ बनके मेरा घर आना पड़ेगा। मंजूर है?

गो-सौ बार मंजूर है।

(दोनों हँसकर दो तरफ़ चले जाते हैं। परदा गिरता है।)

अभ्यास

I. 'परिवर्तन' एकांकी का सारांश लिखिए।

परिवर्तन एकांकी एक हास्य प्रधान एकांकी है। इस एकांकी में कहानीकार यह संदेश देते हैं कि अगर पति-पत्नी के बीच में एक दूसरे के प्रति आदर की भावना रहती है तो उनका जीवन आनंदमय रहेगा। गाड़ी के दोनों बैलों की चाल के समान उनका जीवन रहना है। नहीं तो, परिवार की गाड़ी आगे नहीं बढ़ती।

गोविंदय्या एवं गुणवंती पति और पत्नी हैं। दोनों के बीच में हमेशा, हर बात पर झगड़ा होता रहता है। गुणवंती बड़बोल नारी है। छोटी-छोटी बातों पर चिढ़ती बिगड़ती है। पति की सेवा करना बेइज़्ज़ती मानती है। गोविंदय्या मुनिसिपल मैनेजर है। वह समय पर कार्यालय जाना चाहता है। लेकिन गुणवंती समय पर खाना नहीं पकाती है। पूछे जाने पर बोलती है "क्या मैं घर की नौकरानी हूँ।" गोविंदय्या ऐसी आलसी नारी के साथ जीवन बिताने में कठिनाई महसूस करता है। उनका हाल बेहाल हो जाता है। गोविन्दय्या अपनी व्यथा अपना मित्र गुरुदत्त से कहता है।

गुरुदत्त दोस्त के दुख को सुख में परिवर्तित करना चाहता है। एक दिन गुरुदत्त अपना वेष बदलकर योगी का रूप धारण कर गुणवंती के घर आता है। गुणवंती योगी का आदर-सत्कार करती है। गुरुदत्त अपने को आदिगुरु गोरखनाथ का शिष्य कहता है और पति-पत्नी के बीच के अनबन के बारे में पूछता है। गुणवंती गोविन्दय्या की झिड़कियों से तंग आ चुकी है और उसका निवारण चाहती है। गुरुदत्त अपनी कमर से कुछ गोलियाँ निकालकर देता है और कहता है कि जब गोविन्दय्या झिड़कियाँ देने लगता है तब तुरंत एक गोली मुँह में डाल लेना और उस दौरान एक भी शब्द मुँह से निकालना नहीं, सिर्फ़ गोली चबाते रहना।

उस दिन शाम को गोविन्दय्या घर आकर हमेशा की तरह झिड़कियाँ देता है। लेकिन गुणवंती गोली को मुँह में डालकर, मौन रहती है और पति का आदर-सत्कार करती है। गोविंदय्या सारा माहौल बदला हुआ महसूस करता है। पत्नी के स्वभाव में परिवर्तन देखकर गोविन्दय्या खुश हो जाता है।

इस बीच में गुरुदत्त आता है और अपने मित्र के घर में आनंदमय वातावरण देखता है। गोविंदय्या की पत्नी कहती है कि यह एक साधु महाराज की करामत है। अंत में गोविन्दय्या को मालूम हो जाता है कि वह साधू और कोई नहीं, अपितु स्वयं गुरुदत्त है। दोस्त के नरकतुल्य जीवन को स्वर्ग बनाने के लिए गुरुदत्त ने ऐसा नाटक और किया जिससे पत्नी और पति एक हो गये। अंत में गुरुदत्त गोविन्दय्या से विनती करता है कि एक दिन साधु बनकर गोविंदय्या भी आएँ और अपने घर को ठीक करें।

II. निम्नलिखित पात्रों का परिचय दीजिए।

1. गुणवंती

गुणवंती गोविन्दय्या की जवान पत्नी है। वह गोविन्दय्या की दूसरी पत्नी है। जब से शादी हुई तब से घर में अशांति है। गोविन्दय्या बात-बात पर झिड़कियाँ देनेवाला पुरुष है। उनके इस स्वभाव से तंग आयी गुणवंती घर में कुछ काम नहीं करती। हमेशा पति के प्रति अश्रद्धा प्रदर्शित करती है। कभी खाना ठीक समय पर नहीं बनाती। इसलिए गोविन्दय्या उसे जहरीली नागिन समझता है। वह उस स्त्री के गले को तोड़ना चाहता है। गुणवंती मामूली तौर पर अच्छी है लेकिन पति के फटकारों से ऊब गई है। उसके मन में भी बदलाव की चाहत है। इसलिए जब योगी उनके दोषों के प्रति संकेत करता है तो अपने आपको सुधारने की इच्छा प्रकट करती है। साधु महाराज के द्वारा दी गयी गोलियों के सहारे अपने जीवन को परिवर्तित करने लगती है। नतीज़ा अच्छा निकलता है। उस दिन शाम को गोविन्दय्या कार्यालय से घर वापस आकर हमेशा की तरह चिढ़चिढ़ाने लगता है तो गुणवंती गोली मुँह में डालकर उसकी सेवा में लग जाती है और उसका हृदय जीत लेती है। परिवर्तित माहौल दोनों के जीवन को सुखमय बना देता है।

2. गुरुदत्त

गुरुदत्त इस एकांकी का प्रमुख पात्र है। गोविन्दय्या का सच्चा दोस्त है गुरुदत्त। गुरुदत्त "सच्चा मित्र वही जो समय पर काम आए" का ज्वलंत उदाहरण है। गोविन्दय्या के मुँह से पति-पत्नी के बीच का अनबन मालूम हो जाने पर उसका समाधान करना चाहता है। अपने मित्र के जीवन को शांत बनाने के लिए अपनी तरफ़ से कुछ करना चाहता है। गुणवंती को सही रास्ते पर लाना चाहता है। पति के प्रति उयकी अश्रद्धा को दूर करना अपना परम कर्तव्य मानता है। इस तरह का मित्र मिलना सौभाग्य की बात है। एक दिन गुरुदत्त साधु-वेश धारण कर गोविन्दय्या के घर आता है। गुणवंती की सेवा-सुश्रुषा से संतुष्ट गुरुदत्त, पति और पत्नी के बीच के अनबन को दूर करने के लिए गोलियाँ देता है और सलाह देता है कि जब झगड़ा शुरु हो जाता है अपने मुँह पर गोली डाले और चबाते रहें। यह उपाय अंत में फल देता है। पति-पत्नी के बीच सच्चा प्रेम उत्पन्न होता है।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए।

1. गुणवंती कैसी औरत है ?

   गुणवंती-आलसी, पति के प्रति अश्रद्धा रखनेवाली, घरेलु काम के प्रति अरुचि दिखानेवाली, औरत है।

2. गोविन्दय्या को गुस्सा क्यों आता है ?

   गुणवंती समय पर कोई काम नहीं करती है। सोचती है कि, गृहस्थी संभालना नौकरानी का काम है। समय पर कार्यालय जाने में सहायता नहीं करती और समय पर खाना नहीं बनाती। इसलिए गोविन्दय्या को गुस्सा आता है।

3. गोविन्दय्या किसको जहरीली नागिनें कहता है ? क्यों ?

   गोविन्दय्या अपनी पत्नी गुणवंती को जहरीली नागिन कहता है। गुणवंती पति के प्रति अपना कर्तव्य नहीं निभाती है। इसलिए वह ऐसा कहता है।

4. योगी कौन है ? वह क्या इलाज़ करता है ?

   गुरुदत्त योगी का वेश धारण करके आता है। वह गुणवंती को गोलियाँ देकर झगड़े के दौरान चबाने को कहता है।

IV. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

1. **बेचारे को क्यों जेल भिजवाना चाहते हो। गोली ही मारने का इरादा हो, तो खुद ही चलाई होता और उसका अंजाम भी देख लिया होता।**

   प्रसंगः ये वाक्य 'परिवर्तन' नामक एकांकी से दिये गये हैं। इसके एकांकीकार श्री के. अय्यण्णा है। यह वाक्य गुणवंती कहती है। गोविन्दय्या कार्यालय जाने की तैयारी में था। नाश्ता तैयार नहीं थी। दस बजे ही तरकारी खरीदने के लिए नौकर बाज़ार जा रहा था। ये सब देखकर गोविंदय्या गुणवंती को गोली से मारने की बात कहता है।

   व्याख्या : गुणवंती ने गोविन्दय्या की बात को सुनकर कहा कि अगर गोली से मारने की इच्छा है तो खुद यह काम कर उसका नतीजा भी खुद भुगत लें।

2. **तुम निराले, तुम्हारी मोहब्बत निराली, मोहब्बत करने के तुम्हारे सारे तौर-तरीके निराले हैं यार!**

   प्रसंगः यह वाक्य 'परिवर्तन' नामक एकांकी से दिया गया है। इसका एकांकीकार श्री के. अय्यण्णा है। यह वाक्य गुरूदत्त गोविन्दय्या से कहता है। गोविन्दय्या से मिलने आये गुरूदत्त उनके दांपत्य जीवन का परिहास करते हुए व्यंग्यात्मक ढंग से यह वाक्य कहता है।

   व्याख्याः गोविन्दय्या एवं गुणवंती के बीच अनबन है, दोनों हमेशा झगड़ा करते रहते हैं। उस दिन भी नाश्ता तैयार न होने की बात पर दोनों के बीच झगड़ा हो रहा था। उस समय वहाँ पधारे गुरूदत्त गोविन्दय्या की बात का परिहास करता है।

3. **प्रथम बार विवाह करना एक पावन कर्तव्य है, दूसरी बार एक मूर्खता, और तीसरी बार एक पागलपन।"**

   प्रसंगः यह वाक्य 'परिवर्तन' नामक एकांकी से दिया गया है। इसके एकांकीकार श्री के. अय्यण्णा है।

यह वाक्य गोविन्दय्या ने कहा। गुणवंती गोविन्दय्या की दूसरी पत्नी है। पति और पत्नी के बीच में हमेशा झगड़ा है। गुणवंती अपना पत्नी-धर्म नहीं निभाती है। समय पर खाना नहीं बनाती। गोविन्दय्या की झिड़कियों से तंग आकर गुणवंती ईंट का जवाब पत्थर से देती है। इनसे तंग आकर गोविन्दय्या ने यह वाक्य कहा।

व्याख्याः गोविन्दय्या अपनी तकदीर को कोसते हुए गुरूदत्त से कहता है कि दूसरी बार विवाह करना मूर्खता है। मानव के लिए पहली बार विवाह करना पावन कर्तव्य है। दूसरी बार करना मूर्खता का लक्षण है।

4. हमें पाप से घृणा करनी है पापी से नहीं। जय गोरखनाथ।

प्रसंगः यह वाक्य 'परिवर्तन' नामक एकांकी से दिया गया है। इसके एकांकीकार श्री के. अय्यण्णा हैं। यह वाक्य योगी वेश धारणकर आये गुरूदत्त कहता है। जब गुरूदत्त योगी के वेश में प्रवेश करता है तो नौकर उसको घर के अंदर आने नहीं देता और उसके बारे में गुणवंती से शिकायत भी करता है। नाराज़ गुणवंती नौकर से कहते हैं कि वह योगी से माफ़ी माँगें तो गुरूदत्त ने यह वाक्य कहा।

व्याख्याः इसका तात्पर्य है जो बुरा काम करते है उनके प्रति नहीं बल्कि उनकी 'करनी' के प्रति हमें घृणा करनी है। हमें काम से मतलब है काम करनेवालों से नहीं।

5. कोई भलाई करनेवाले के प्रति बुराई कर सकता है ?

प्रसंगः यह वाक्य 'परिवर्तन' नामक एकांकी से दिया गया है। इसके एकांकीकार श्री के. अय्यण्णा हैं। यह वाक्य गुरुदत्त गोविन्दय्या से कहता है। गुणवंती के बदले हुए बर्ताव पर संतुष्ट गोविन्दय्या योगी के बारे में जानना चाहता है। उस योगी के कारण ही गोविन्दय्या का नरक तुल्य जीवन-स्वर्ग जैसा बदल गया। गुरुदत्त उस योगी के बारे में कहने से पहले गोविंदय्या से वचन प्राप्त करता है कि वह बाद में उस योगी को कुछ न करे। इसके उत्तर में गोविंदय्या यह वाक्य कहता है।

व्याख्याः वह योगी स्वयं गुरुदत्त है। अपने मित्र के जीवन को सुखी बनाने के लिए योगी का वेश धारण कर गुणवंती के स्वभाव में बदलाव लाता है। इसलिए राज़ खोलने के पहले यह वादा ले लेता है।

6. सुनो यार, मेरे पागलखाने के उद्धार के लिए तुझे भी एक दिन, मेरी तरह गोरखनाथ बनके मेरे घर आना पड़ेगा। मंजूर है ?

प्रसंगः यह वाक्य 'परिवर्तन' नामक एकांकी से दिया गया है। इसके एकांकीकार श्री के. अय्यण्णा हैं। यह वाक्य गुरुदत्त ने गोविन्दय्या से कहा। घर-घर में पति-पत्नी के बीच यही कहानी है। गुरुदत्त के घर में भी यही दशा है। दोनों के बीच अनबन है।इसलिए गुरुदत्त, गोविंदय्या से इस प्रकार विनती करता है।

व्याख्याः- जिस प्रकार योगी के वेश में गुरुदत्त ने गुणवंती का इलाज किया, उसी प्रकार गोविंदय्या एक दिन योगी के रूप में गुरुदत्त का घर आकर वहाँ का माहौल ठीक करने के लिए गुरुदत्त गोविंदय्या से विनती करता है।

* * * * *

5. शहीद झलकारीबाई

(सन् 1857 ई.। झाँसी रानी लक्ष्मीबाई अपने महल में चिंतित अवस्था में बैठी है। रानी युद्ध-वेश में है। रानी के सामने नाना साहब और कुछ विश्वासपात्र सामंत बैठे हैं। पास ही एक पलंग पर रानी का दत्तकपुत्र दामोदर राव बैठा है।)

लक्ष्मीबाई – झाँसी के वीरो! अंग्रेज़ों की विशाल सेना ने झाँसी को चारों ओर से घेर लिया है। हमारी सेना के अनेक योद्धा वीरगति प्राप्त कर चुके हैं। कुछ सरदार अँग्रेज़ों से जा मिले हैं। अब हमारे सामने सिर्फ़ एक ही रास्ता बचा है कि हम किले का फाटक खोल दें और अंग्रेज़ी सेना को युद्ध के लिए ललकारें। झाँसी की रक्षा के लिए अपने प्राणों के बलिदान का अवसर आ गया है।

सामंत – रानी माँ! झाँसी पर अपने प्राण न्योछावर करने के लिए हम हमेशा तैयार हैं। दामोदर राव की सुरक्षा का प्रबंध भी हम कर लेंगे। लेकिन जान-बूझकर अंग्रेज़ों की सेना के सामने जाकर प्राण देने में कोई समझदारी नहीं है। उचित तो यह होगा कि किसी तरह किले से सुरक्षित निकलकर हम फिर से सेना को संगठित करें।

लक्ष्मीबाई – मैं आपकी योजना से सहमत हूँ। लेकिन अब इस अंग्रेज़ी सेना का घेरा तोड़कर किले से बाहर निकल जाना आसान नहीं है। आप तो जानते ही हैं कि अंग्रेज़ों के भेदिये महल के भीतर भी हैं। गद्दार हमारी छोटी-छोटी बातें अंग्रेज़ों तक पहुँचा रहे हैं। ऐसी स्थिति में चूहे की तरह बिल में घुसे रहने से तो अच्छा है, हम शेर की तरह शत्रु पर टूट पड़ें।

नाना साहब – महारानी! आप जैसी वीरांगना को हम मरने के लिए अंग्रेज़ों की सेना के सामने नहीं धकेल सकते। मैं सामंत की बात से सहमत हूँ। आपका यह निर्णय वीरोचित तो है, पर रणनीति की दृष्टि से उचित नहीं है। हमें कोई दूसरा रास्ता निकालना होगा। आपकी पराजय केवल रानी लक्ष्मीबाई की पराजय नहीं होगी। वह झाँसी की पराजय होगी। यदि झाँसी इतनी आसानी से पराजित हो गयी तो पूरे भारत में चल रहा स्वाधीनता-संग्राम ही खतरे में पड़ जाएगा। सबकी निगाहें आप पर टिकी हैं।

(एक दूत का प्रवेश)

दूत – महारानी की जय!

लक्ष्मीबाई – कहो दूत, क्या समाचार लाये हो?

दूत – रानी माँ। समाचार शुभ नहीं है। अंग्रेज़ों की सेना का घेरा झाँसी के चारों ओर बहुत कड़ा हो गया है। उन्होंने आपको ज़िंदा ही पकड़ने की ठान रखी है।

लक्ष्मीबाई – दूत तुम जाओ ! घटनाओं पर कड़ी निगाह रखो !

(दूत तेज़ कदमों से चला जाता है।)

लक्ष्मीबाई – नाना साहब ! मैं किसी भी हालत में अंग्रेज़ों की बंदी होना नहीं चाहती। मैं झाँसी की रक्षा करते-करते शहीद हो जाना पसंद करूँगी। आप आदेश दें ! हम अंग्रेज़ों पर टूट पड़ना चाहते हैं।

(तभी नारी सेना की सेनापति झलकारीबाई का प्रवेश होता है। लक्ष्मीबाई की हमशक्ल)

झलकारीबाई – महारानी की जय !

लक्ष्मीबाई – आओ-आओ झलकारीबाई। तुम ठीक समय पर आयी हो। कहो, तुम्हारी सेना की क्या तैयारी है ?

झलकारीबाई – रानी माँ ! नारी सेना, अगली पंक्तियों में लड़ने के लिए तैयार खड़ी है। बस ... आपके आदेश की प्रतीक्षा है ! किंतु ......

लक्ष्मीबाई – किंतु क्या ? निस्संकोच होकर कहो।

झलकारीबाई – गुस्ताखी माफ़ हो रानी माँ ! मुझे इस निर्णायक युद्ध के लिए आपके वस्त्र, पगड़ी और कलगी चाहिए।

लक्ष्मीबाई – (मुस्कुराकर) ठीक है झलकारी ! तुम्हारी यह इच्छा अवश्य पूरी होगी।

(लक्ष्मीबाई कक्ष में जाती है और एक थाल लाकर झलकारी को देती है। झलकारी उन्हें झुककर प्रणाम करती है। झलकारी का प्रस्थान।)

लक्ष्मीबाई – देखा आपने ! अब अधिक सोचने का समय नहीं है। मैदान में उतरने का समय है।

(नाना साहब कुछ कहना ही चाहते हैं, तभी झलकारीबाई, रानी की वेशभूषा में सजकर प्रवेश करती है। सब लोग उसे देखकर आश्चर्य चकित हो जाते हैं।)

नाना साहब – अरे झलकारीबाई, तुम ! तुम तो हू-ब-हू लक्ष्मीबाई लग रही हो।

झलकारीबाई – आप ठीक कह रहे हैं। मेरा रानी माँ का हमशक्ल होना शायद आज ही सार्थक हो सकता है।

नाना साहब – झलकारीबाई, तुम्हारी योजना क्या है ? यह तो बताओ।

झलकारीबाई – मेरी योजना यह है कि मैं अपनी सेना लेकर किले के मुख्य द्वार पर अंग्रेज़ों को उलझाकर रखूँगी। इससे उनका पूरा ध्यान मुझपर बना रहेगा। वे रानी समझकर मुझे घेरने का प्रयत्न करते रहेंगे. इतने में रानी माँ दामोदर सहित अपने वीर सैनिकों को लेकर महल से दूर निकल जाएँगी।

लक्ष्मीबाई – लेकिन झलकारीबाई ! मैं तुम्हें जान-बूझकर मौत के मुँह में कैसे जाने दूँ ?

झलकारीबाई – रानी माँ ! आप ही ने हमें सिखाया है कि वीरांगनाएँ मौत से नहीं डरतीं। हम प्राणों की बाज़ी लगाकर भी झाँसी की रक्षा करेंगे।

नाना साहब – झलकारीबाई ठीक कहती है महारानी। अब आप देर मत कीजिए। झलकारीबाई जैसा कहती है वैसा ही कीजिए।

(महारानी की जय ! 'झाँसी अमर रहे' का जयघोष करते हुए झलकारीबाई का प्रस्थान।)

लक्ष्मीबाई के वेश में झलकारीबाई अंग्रेज़ी सेना पर टूट पड़ती है। अंग्रेज़ी सेना को काटती हुई झलकारीबाई आगे बढ़ती है। नारी सेना भी शत्रुओं को काटती हुई युद्ध कर रही है। झलकारीबाई के शरीर पर अनेक घाव पड़ते हैं। वह निढाल है। यह देखकर जनरल अपने सैनिकों को हुक्म देता है।

जनरल रोज़ – सैनिको ! झाँसी की रानी को ज़िंदा पकड़ना है। चारों ओर से घेर लो इसे।

(अंग्रेज़ी सेना आगे बढ़ती है और निढाल झलकारीबाई को बंदी बना लेती है।)

जनरल रोज़ – झाँसी की रानी ! तुम बहुत बहादुर हो। हम तुम्हारी बहादुरी को सलाम करते हैं। लेकिन अब तुम हमारी बंदी हो।

झलकारीबाई – जनरल ! झाँसी की रानी को ज़िंदा पकड़ना तुम्हारे बूते की बात नहीं है। वह जीवित रहने तक स्वतंत्र ही रहेगी। झाँसी रानी की जय !

(इतना कहकर झलकारीबाई बेहोश हो जाती है।)

जनरल रोज़ – क्या यहाँ कोई है जो इसे पहचानता हो ?

(एक सैनिक वहाँ आता है और झलकारी को पहचान लेता है।)

सैनिक – जनरल, आपका शक ठीक है। यह लक्ष्मीबाई नहीं, उनकी हमशक्ल झलकारीबाई है।

जनरल रोज़ – झलकारीबाई ! इस औरत ने तो कमाल कर दिया।

(झलकारीबाई का मृत शरीर धरती पर पड़ा है। जनरल रोज़ अवाक् खड़ा है। पर्दा धीरे-धीरे गिरता है।)

अभ्यास

I. 'शहीद झलकारीबाई' एकांकी का सारांश लिखिए।

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई वीरांगना थी। अंग्रेज़ जब पूरे भारत को गुलाम बनाने की कोशिश कर रहे थे, तब रानी लक्ष्मीबाई ने उनका अधिकार नहीं माना। अपने देश की आज़ादी के लिए रानी ने अंग्रेज़ी सेना से युद्ध किया। उस समय की एक घटना इस एकांकी में वर्णित है। यह एकांकी देश-भक्ति की प्रेरणा देता है।

अंग्रेज़ों की बड़ी सेना झाँसी को घेर लेती है। राजमहल में रानी, सामंत और नाना साहब मंत्रणा कर रहे हैं। तब खबर मिलती है कि अंग्रेज़ रानी को ज़िंदा पकड़ने की बात सोच रहे हैं। यह सुनकर रानी आवेश में आती है और युद्ध में वीर-गति के लिए तैयार होती है।

तब उधर झलकारीबाई आती है। वह नारी सेना की सेनापति है। वह कहती है कि नारी सेना युद्ध में आगे की पंक्तियों में रहकर लड़ने को तैयार है। वह अपनी एक योजना सबके सामने रखती है। झलकारी बाई और रानी लक्ष्मीबाई दोनों देखने में एक जैसे थे। झलकारीबाई इस समानता का फ़ायदा उठाने की योजना बताती है। कहती है कि झलकारीबाई रानी की वेश-भूषा में लड़ेगी-तब अंग्रेज़ी सेना उसे रानी समझकर धोखा खाएगी। इस बीच रानी अंग्रेज़ों की आँखों में धूल झोंककर किले से निकल जाएगी।

झलकारीबाई की योजना के अनुसार लड़ाई होती है। अंग्रेज़ झलकारीबाई को रानी समझकर धोखा खाते हैं। लड़ाई में झलकारीबाई वीर-गति प्राप्त करती है।

इस तरह वीरांगना झलकारीबाई अपनी जान देकर रानी को बचाती है।

II. निम्नलिखित पात्रों का परिचय दीजिए।

1. झलकारीबाई

भारत के इतिहास में हम नारी के सौम्य रूप के साथ-साथ, देश-भक्ति, वीरता आदि भी देख सकते हैं। झलकारीबाई भी ऐसी ही एक देवी थी, जिसने मातृभूमि के लिए प्राण त्याग किया और वीर-गति प्राप्त की।

झलकारीबाई झाँसी की नारी सेना की सेनापति है। अंग्रेज़ी सेना झाँसी को घेर लेती है। युद्ध में कई वीरों की मृत्यु हो जाती है। कुछ सरदार मृत्यु से डरकर अंग्रेज़ों से जा मिलते हैं। लेकिन नारी होकर भी झलकारीवाई भयभीत नहीं होती। वह आगे की पंक्ति में खड़ी होकर लड़ने के लिए तैयार होती है।

झलकारीबाई में स्वामी-भक्ति और देश भक्ति कूट-कूटकर भरी है। वह युद्ध-क्षेत्र में रानी का वेश धारण कर लड़ती है। उसे अच्छी तरह मालूम है कि अंग्रेज़ उसे रानी समझकर लड़ेंगे और उसे मार डालेंगे। झलकारीबाई निडर होकर लड़ती है और अंत में अंग्रेज़ों से गिरफ़्तार होने से पहले 'झाँसी की जय' कहते हुए बेहोश होती है। आख़िर वह वीर-गति प्राप्त करती है।

2. लक्ष्मी बाई

रानी लक्ष्मीबाई झाँसी की रानी थी। अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए जान देने के लिए तैयार थी। अंग्रेज़ों के विरुद्ध खूब लड़ीं। साहसी, निर्भीक रानी लक्ष्मीबाई संकट के समय में भी निर्णय लेने का सामर्थ्य रखती थी। एक दिन उनके महल में भरी सभा में सूचना मिलती है कि अंग्रेज़ों की सेना झाँसी के चारों ओर घेर लिया है। अंग्रेज़ों ने रानी लक्ष्मी बाई को जिंदा पकड़ने की ठान रखी थी। लक्ष्मी बाई किसी भी हालत में अंग्रेज़ों की बंदी बनना नहीं चाहती थी। किले का फाटक खोलकर युद्ध करना चाहती थी। वे झाँसी की रक्षा करते करते शहीद होना चाहती थी। वे अंग्रेज़ों से वार करना ही चाहती थी। शेर की तरह शत्रु पर टूट पड़ना चाहती थी। नाना साहब लक्ष्मीबाई को समझा देता है कि रानी लक्ष्मीबाई की पराजय झाँसी की पराजय है। लक्ष्मीबाई की पराजय से स्वाधीनता-संग्राम खतरे में पड़ जाएगा। लेकिन रानी इन बातों से सहमत नहीं हुई। वे अंग्रेज़ों पर टूट पड़ना ही चाहती थी। नारी सेना की सेनापति और लक्ष्मीबाई की हमशक्ल झलकारी बाई रानी का वेश धारण कर, अंग्रेज़ों की आँखों में धूल फेंकने की योजना प्रस्तुत करती है। लेकिन इस योजना से रानी संतुष्ट नही हुई। अपनी जान बचाने दूसरों को बलिदान देना नहीं चाहती थी। लेकिन झलकारीबाई अपनी योजना के अनुसार अंग्रेज़ी सेना पर टूट पड़ती है और अंग्रेज सेना को मारकर आगे बढ़ती है आख़िर अपने प्राण दे देती है। इससे लक्ष्मीबाई अत्यंत दुखित होती है।।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए।

1. मंत्रणा के समय सामंत ने क्या कहा?

   मंत्रणा के समय सामंत ने कहा कि लड़ाई में प्राण अर्पित करने के लिए हम तैयार हैं। लेकिन अब किले से सुरक्षित निकलेंगे और सेना इकट्ठा करके फिर लड़ेंगे।

2. दूत क्या समाचार लाया?

   दूत यह समाचार लाया था कि अब की बार अंग्रेज़ों ने रानी को ज़िंदा पकड़ने की ठान रखी है।

3. झलकारबाई क्या चाहती थी?

   झलकारीबाई चाहती थी कि उसे युद्ध के लिए रानी के वस्त्र, पगड़ी और कलगी चाहिए।

4. झलकारीबाई को वीर-गति कैसे प्राप्त हुई?

   झलकारीबाई ने रानी की वेश-भूषा में युद्ध किया। अंग्रेज़ों ने उसे रानी समझकर उससे कठोर युद्ध किया। कैदी होने के पहले वह बेहोश होती है और बेहोशी में ही उसे वीर-गति प्राप्त होती है।

IV. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

1. ऐसी स्थिति में चूहे की तरह बिल में घुसे रहने से तो अच्छा है, हम शेर की तरह शत्रु पर टूट पड़ें।

प्रसंग: यह वाक्य 'शहीद झलकारीबाई' एकांकी से दिया गया है। रानी लक्ष्मीबाई राजमहल में मंत्रणा के दौरान ऐसा कहती है।

व्याख्या: अंग्रेज़ी सेना ने झाँसी को घेर लिया है। सामंत कहता है कि किसी तरह किले से बाहर निकलना ही समझदारी है। लेकिन रानी यह बात नहीं मानती है। वह कायर बनना नहीं चाहती है। वह शेर बनकर शत्रुओं से लड़ना चाहती है।

2. आपकी पराजय केवल रानी लक्ष्मीबाई की पराजय नहीं होगी। वह झाँसी की पराजय होगी।

प्रसंग: ये वाक्य 'शहीद झलकारीबाई' एकांकी से दिये गये हैं। अंग्रेज़ों की सेना ने झाँसी को चारों ओर से घेर लिया है। वे रानी को जिंदा पकड़ना चाहते हैं। लक्ष्मीबाई वीरांगना है। किले का फाटक खोलकर युद्ध करना चाहती है। शेर की तरह शत्रु पर टूट पड़ना चाहती है। लेकिन उनकी इस योजना से असहमत नानासाहब कहते हैं "आपकी पराजय केवल रानी लक्ष्मीबाई की पराजय नहीं होगी। वह झाँसी की पराजय होगी!

व्याख्या: अगर रानी पराजित हो जाती है तो यह रानी लक्ष्मीबाई की पराजय नहीं होगी। यह झाँसी की पराजय होगी। झाँसी और लक्ष्मीबाई दोनों एक दूसरे के पर्याय हैं। दोनों को अलग करके देखा नहीं जा सकता। इसलिए रानी की रक्षा करनी है। रानी की रक्षा झाँसी की रक्षा है।

3. तुम बहुत बहादुर हो। हम तुम्हारी बहादुरी को सलाम करते हैं। लेकिन अब तुम हमारी बंदी हो।

प्रसंग: ये वाक्य 'शहीद झलकारीबाई' एकांकी से दिये गये हैं। लड़ते-लड़ते जब झलकारीबाई बहुत घायल हो जाती है और थक जाती है, तब अंग्रेज़ जनरल रोज़ इस तरह कहता है।

व्याख्या: झलकारीबाई रानी के वेश में लड़ रही है। अंग्रेज़ उसे रानी लक्ष्मीबाई समझते हैं। शत्रु होने पर भी जनरल रोज़ से उसकी वीरता की तारीफ़ किये बिना रहा नहीं जाता। वह झलकारीबाई की वीरता को सलाम करता है।

4. देखा आपने! अब अधिक सोचने का समय नहीं है। मैदान में उतरने का समय है।

प्रसंग: ये वाक्य 'शहीद झलकारीबाई' एकांकी से दिये गये हैं। झलकारीबाई जब युद्ध के लिए तैयार होकर चली जाती है, तब रानी, सामंत और नाना साहब से इस तरह कहती हैं।

व्याख्या: मंत्रणा के समय सामंत और नाना साहब कहते हैं कि अब इस हालत में अंग्रेज़ी सेना से लड़ने से किला छोड़कर निकलना ही समझदारी है। लेकिन रानी लड़ना चाहती है। रानी का कहना है कि जब झलकारीबाई जैसी औरत भी लड़ने तैयार हो जाती है, तब सोचना छोड़कर रण-मैदान में उतरना ही उचित है।

* * * * *